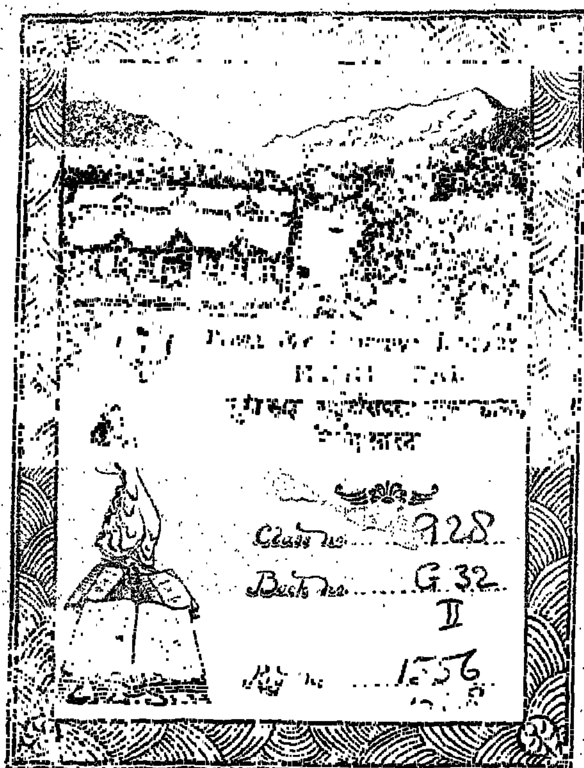
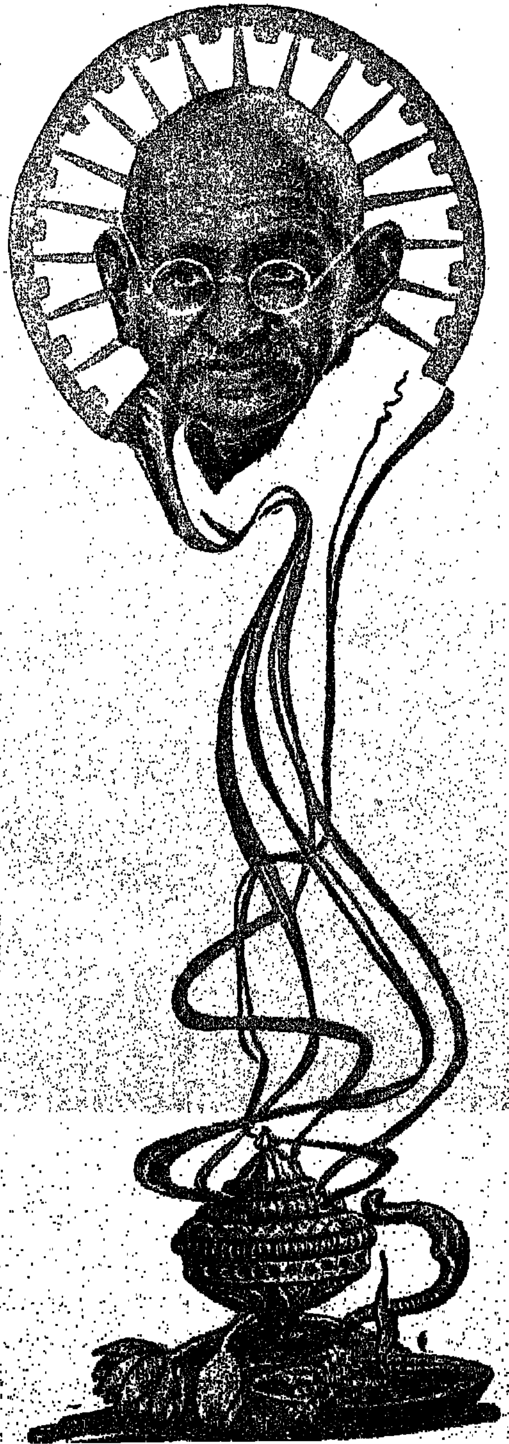

Class no 928
Book no G 32
II
1556



गां
धी
जी

खण्ड चार



कवियोंकी
श्रद्धांजलियाँ

मूल्य डेढ़ रुपया

(प्रथम संस्करण : दिसम्बर, १९४८)

प्रकाशक

जयनाथ शर्मा

व्यवस्थापक

काशी विद्यापीठ प्रकाशन विभाग

बनारस छावनी

मुद्रक

पं० पृथ्वीनाथ भार्गव

अध्यक्ष

भार्गव भूषण प्रेस, गायघाट

काशी

सूची

प्रकाशकका वक्तव्य

मेरठमें हिन्दी साहित्य सम्मेलनके अवसरपर 'गांधीजी' ग्रंथमालाका यह पांचवाँ प्रकाशन 'कवियोंकी श्रद्धांजलियाँ' प्रकाशित हो रहा है। ग्रंथमालाका यह चौथा खंड है।

इस खंडके संकलनमें हमें आजकल, जनवाणी, नया हिन्द, विश्ववाणी, विशाल भारत, समाचार, संसार, समाज, आज, नया हिन्दुस्तान, कर्मवीर, लोकवाणी आदि मासिक, साप्ताहिक तथा दैनिक समाचार पत्रोंसे काफी सहायता मिली है। हम इनके आभारी हैं।

साथ ही हम उन मान्य कवियोंके भी आभारी हैं जिन्होंने हमारे आग्रह पर अपनी नयी रचनाओंको तत्काल भेज दिया तथा कुछ सज्जनोंने अपनी प्रकाशित रचनाओंको भेजनेका कष्ट किया। इन सज्जनोंकी सहायताके मिले बिना हमें कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता।

हमें यह सूचित करते हर्ष होता है कि युक्तप्रान्तीय सरकारके शिक्षा विभागकी ओरसे ग्रंथमालाकी लगभग १२५० प्रतियाँ, प्रत्येक खंडकी, खरीदनेकी आज्ञा मिली है। इससे हमको काफी बल मिला है। हम शिक्षा सचिव माननीय श्री सम्पूर्णानन्द जीके विशेष आभारी हैं।

अब तक ग्रंथमालाके प्रथम खण्डके दो भाग, चौथा खण्ड तथा दसवें खण्डके दो भाग निकल चुके हैं। शेष खण्ड अभी प्रकाशित नहीं हुए हैं। ज्यों ही खण्ड प्रकाशित होंगे, पाठकोंकी सेवामें प्रेषित किये जायेंगे। पाठक शेष खण्डोंकी प्रतीक्षा करनेकी कृपा करें।

आमुख

जिस महामानवके जीवनकालमें ही उसके चरित्र तथा पावन कार्योंने सहस्रों लेखकों तथा कवियोंकी प्रतिभा प्रस्फुटित कर दी उसके निर्वाणने यदि सरस्वतीकी वीणा व्यापक रूपसे झंकृत कर दी तो आश्चर्य नहीं। गांधीजीके निधनसे जो पीड़ा लोगोंको हुई वह लेखनीसे वाणी बनकर निकली। और ऐसा कौन साहित्यकार होगा जिसे छंद जोड़ना भी आता होगा और उसने कुछ पंक्तियाँ इस अवसरपर लिपी-बद्ध नहीं कीं। हां, ऐसे भी लोग थे, जिन्हें इतना मार्मिक आघात पहुंचा कि कुछ भी न कह सके। यह महाशोक श्लोकबद्ध न हो सका। केवल मूक वेदना उनके अन्तरसे निकली। महात्माजी ऐसा चरित जिस नायकका हो उसके सम्बन्धमें कविकी लेखनी कितनी मार्मिकतासे, कितनी शक्तिसे, कितनी उंचाईसे भावोंको व्यक्त करेगी, सरलतासे समझा सकता है। फिर जिस महान व्यक्तित्वके द्वारा हमारी दासताकी बेड़ियाँ कटी हों, जिसने आत्मबलका पाठ पढ़ाकर हमारी आत्माको पावन तथा प्रचण्ड किया, जिसने राजनीतिको कीचड़से निकालकर शुद्ध किया और जिसने सांप्रदायिकताके राक्षसको नष्ट करनेमें अपने जीवनकी आहुति दी, उसके महाप्रयाणके अवसरपर देशमें करुणाका सागर उमड़ आवे तो आश्चर्य क्या ?

'गांधीजी' ग्रंथमालामें इन कविताके पुष्पोंको गूंथना हमारा आवश्यक कर्तव्य था। यद्यपि इन थोड़ेसे पृष्ठोंमें उन सारी रचनाओंका समावेश करना भौतिक सीमाके परे था, फिर भी हमने चेष्टा की है कि कोई प्रतिनिधि कवि, जिसने कुछ भी इस अवसरपर लिखा हो छूट न जाय। इसमें वही रचनायें संगृहीत हैं जो गांधीजीके निधनके अवसरपर लिखी गयीं हैं। हमें इस संग्रहका प्रतिनिधि रूप देना था इसलिये रचनाएँ सब एक श्रेणीकी हों, यह संभव नहीं था। ऐसी रचनाएँ भी इसमें मिलेंगी जिसमें कविकी श्रद्धाकी तो वास्तविक अभिव्यक्ति हुई पर भाषा कहीं कहीं आलोचनाका विषय हो सकती है। रोनेवालेको कुछ स्वतन्त्रता अपेक्षित है। पीड़ाके प्रवाहमें छंदोंके नियमको कभी-कभी लाँघ जाता है। यद्यपि चेष्टा ऐसी ही रही है कि ऐसा न होने पाये फिर भी ऐसे स्थल मिलेंगे।

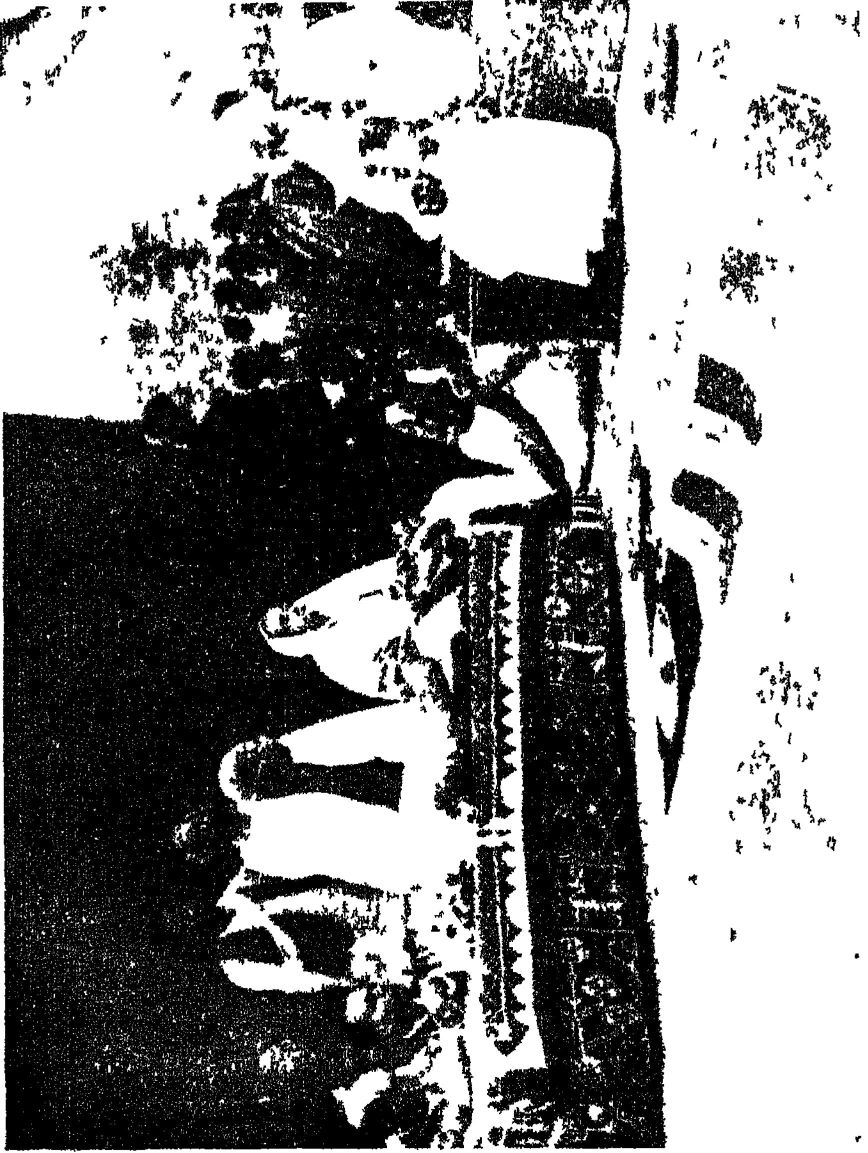
कविता गद्यसे अधिक मनमें घर करने वाली होती है, इसलिये इस अंकका महत्व भी अधिक है। इसमें लोगोंने अपने मनकी पीड़ा व्यक्तकी है. भावनाओंके मोती पिरोये हैं, तथा प्रेमकी श्रद्धांजलि समर्पित की है। हमने भाषा भेद नहीं किया है। उर्दूकी अच्छी रचनाएँ तथा संस्कृतकी भी कुछ रचनाएँ समाविष्ट हैं।

सभी कवियोंसे इसमें रचनाएँ भेजनेकी प्रार्थना की गयी। बहुतसे लोगोंने नहीं भेजी. इसका हमें दुख है। हमें पूर्ण आशा है कि गांधीजी की यह श्रद्धांजलि पाठकोंको संतोषप्रद होगी।



राष्ट्रपिता

राष्ट्रपिता तुमने भारत का, जगका किया सहस उपकार ।
क्यों न तुम्हें हम पहिनावें यह, हृदय सुमन का सुरभित हार ॥



शान्ति दूत, तुम शान्ति निकेतनमें जब आये ले नवजीवन।
अतिथि रूपमें महामहिम गुरुदेव ने किया था अभिनन्दन॥

श्रद्धांजलि

हाय राम ! कैसे झेलेंगे अपनी लज्जा, उसका शोक
गया हमारे ही पापोसे अपना राष्ट्रपिता परलोक

—मैथिलीशरण गुप्त

देवमृत्यु

अंतर्धान हुआ फिर देव विचर धरतीपर
स्वर्ग रुधिरसे मर्त्य-लोककी रजको रँगकर
टूट गया तारा अंतिम आभाका दे वर
जीर्ण जाति-मनके खँडहरका अंधकार हर
अंतर्मुख लय हुई चेतना दिव्य अमामय
मानस लहरींपर शतदल-सी हँस ज्योतिर्मय
मनुजोंमें मिल गया आज मनुजोंका मानव
चिर पुराणको बना आत्मबलसे चिर अभिनव
आओ, हम उसको श्रद्धांजलि दें देवोचित
जीवन सुंदरताका घट मृतको कर अर्पित
मंगलप्रद हो देव मृत्यु, यह हृदय-विदारक
नव भारत हो बापूका चिर जीवित स्मारक
बापूकी चेतना बने नव पिकका कूजन
बापूकी चेतना वसंत बखेरे नूतन

—सुमित्रानन्दन पंत

सत्यमें समा गये

सत्य अवतारी सत्य सत्ययुग लाये यहाँ,
प्रेम-मंत्र देके वर देकर क्षमा गये
शोक ! ऐसा शोक जैसा लोकने कभी न हुआ
बिंध गये हृदय कलेजे बरमा गये
घोर अपघात देखकर पातकीके हाथ
अधिकसे अधिक बधिक शरमा गये
सत्य और ईश्वरमें अंतर न माना कभी
सत्य-रूप-धारी सत्य रूपमें समा गये

—सनेही

प्रार्थना

बापू, तुम करो स्वीकार
आज शत शत मस्तकोंका नमन बारंबार
जा रहे हो तुम, हमारा जा रहा है ध्रुव सहारा
नेत्रसे अब बह रही है सिंधु-जल-सी अश्रुधारा
कंटकोंसे हम रहे, तुम फूलके शृंगार
तर्जनी तुमने उठायी उठ गया यह विश्व सारा
जब कि मानवता भ्रमित थी रोककर तुमने पुकारा
की घृणा जिसने उसीको दे गये तुम प्यार
आज हम किस भाँति तुमको चिर विदा दें देश-त्राता
तिमिरमय आकाश होता जब कि रवि है डूब जाता
दे सको नव प्रात तुम फिर, लो पुनः अवतार
बापू, तुम करो स्वीकार
आज शत शत मस्तकोंका नमन बारंबार

—रामकुमार वर्मा

श्रद्धांजलि

हो गयी है विश्वकी पर विमल ज्योति विलीन
प्रेमके पावन पुजारी शांतिके दिव-दूत
थी तुम्हारी दिव्यतासे यह धरा परिपूत
प्राण-सम प्रिय थे तुम्हें लघु दीन-हीन अछूत
थे तुम्हें अमरत्वके सुख-दुःख सभी अनुभूत
तुम महात्मन्! हो गये पंचत्व-सरके मीन
कर अहिंसा-शस्त्रका तुमने विचित्र प्रयोग
दी हमें स्वाधीनता लाकर अपूर्व सुयोग
किंतु दुःखमय हो गया उसका हमें उपभोग
है असह्य हमें तुम्हारा यह विषाक्त वियोग
आज भारत हो गया स्वाधीन भी गति-हीन
थे मनुजताके अलौकिक तुम महत्तम वित्त
अतुल ज्ञानी कर्मयोगी धर्म-केतु सुचित्त
था तुम्हारे निधनका खल भारतीय निमित्त
विपुल लज्जा-शोकसे धिक्षिप्त है उर-चित्त
हो गये हम आज बापू, दीनसे भी दीन
तुम रहे स्वर्गीय जितने साधु उच्च उदार
सिद्ध उतने ही हुए हम क्षुद्रतम अनुदार
देशको हमने बनाया रक्त-सिंधु अपार
मिल गयी उसमें तुम्हारे भी रुधिरकी धार
धुल सकेगा क्या कभी यह घोर पाप मलीन
चाहते थे देखना तुम राम-राज्य पवित्र
चाहते थे राष्ट्र सारे हों परस्पर मित्र
और जितने थे तुम्हारे प्रिय मनोरम चित्र
रह नहीं सकते सदा वे स्वप्न-मात्र विचित्र
दे गये हो विश्वको तुम प्रबल शक्ति नवीन

थे हिमालयके सदृश तुम सुदृढ उच्च महान
थे महा विस्तीर्ण तुम गंभीर सिंधु-समान
पुण्य-जीवन जाह्नवीसे थे शुचित्व-निधान
स्वच्छ निर्मल थे गगनसे दिव्य ज्योतिर्वान
तुम रहे स्वाधीनचेता किंतु सत्याधीन
छोड़कर इस मर्त्य जगको तुम गये सुर-धाम
पर तुम्हारी दिव्य आत्मा है अमर अभिराम
वह हमें करती रहेगी बल-प्रदान प्रकाम
हम करेंगे भक्तिसे उसको सदैव प्रणाम
स्तुति करेगी सभ्यता प्राचीन अर्वाचीन
रह गये हैं जो तुम्हारे शेष विमलादर्श
हैं मिटा सकते नहीं उनको हजारों वर्ष
दूर होगा बस उन्हींसे सृष्टिका संघर्ष
और होगा शुचि परस्पर प्रेमका उत्कर्ष
कर गये हो तुम अमर निज सभ्यता प्राचीन
धीरताके, वीरताके तुम रहे अवतार
सह्य था तुमको कहीं कोई न अत्याचार
बंधु सब मानव तुम्हें थे, विश्व था परिवार
शत्रुको भी प्राप्त था अनुपम तुम्हारा प्यार
हृदय-मंदिरमें रहोगे तुम सदा आसीन
है समाप्त हुआ तुम्हारा सफल विश्व-प्रवास
किंतु उर-उरमें तुम्हारा है निरंतर वास
लोकमें छाया तुम्हारा है अनंत प्रकाश
सिद्ध करनेको तुम्हारे सब असिद्ध प्रयास
काल भी हमसे तुम्हारी स्मृति न सकता छीन
हो गयी है विश्वकी वर विमल ज्योति विलीन

—गोपालशरण सिंह

वज्रपात

टूटी पहाड़-सी अशनि घोर, सब तरह हमारा ह्रास हुआ
रोने दो, हम मर-मिटे हाय, रोने दो सत्यानाश हुआ
है तरी भँवरके बीच और पतवार हाथसे छूट गयी
रोने दो हाय अनाथ हुए, रोने दो किस्मत फूट गयी
कैसा अभाग्य ! अपने हाथों ही हाय ! स्वयं हम छले गये
यह भी न पूछ सकते बापू, क्यों हमें छोड़ तुम चले गये
पापी, तूने क्या किया हाय, किसपर यह दारुण वार किया
यह वज्र गिराया कहाँ हाय, किसका अकरुण संहार किया
यह देख फटी किसकी छाती, पहचान, कौन निश्चेत गिरा
किसकी किस्मतमें आग लगी, किसका उगता सौभाग्य फिरा
यह लाश मनुजकी नहीं, मनुजताके सौभाग्य-विधाताकी
बापूकी अरथी नहीं, चली अरथी यह भारत माताकी
तपसे पवित्र वह देह और वह हँसी अमृत देनेवाली
चालीस कोटिकी नौकाको वह एक मूर्त्ति खेनेवाली
अब नहीं मिलेगी कहीं नयन, दर्शनकी व्यर्थ न आस करो
बापू सचमुच ही चले गये, भोली श्रुतियो, विश्वास करो
बापू सचमुच ही गये, निखिल भूमण्डलका शृंगार गया
बापू सचमुच ही गये, विकल मानवताका आधार गया
बापू सचमुच ही गये, जगतसे अदभुत एक प्रकाश गया
बापू सचमुच ही गये, भूतिपरसे हरिका आभास गया
किरणें समेट फिर नबी एक भूतलको कर श्री-हीन चला
फिर एक बार मोहन यदुवाको सभी भाँति कर दीन चला
यह अवधपुरीके राम चले, वृन्दावनके घनश्याम चले
शूलीपर चढ़कर चले ख्रीष्ट, गौतम प्रबुद्ध निष्काम चले
प्यासेको शोणित पिला, तोड़ कोई अपनी जंजीर चला
दानवके दंशोंपर हँसता यह स्वर्ग देशका वीर चला

धरतीको आकुल छोड़, मनुजताको करके म्रियमाण चले
बापू दे अंतिम वार जगतको हृदय-विदारक दान चले

आकाश विभासित हुआ, भूमिसे हरिका लो, अवतार चला
पृथ्वीको प्यासी छोड़ हाय, करुणाका पारावार चला

चालीस कोटिके पिता चले, चालीस कोटिके प्राण चले
चालीस कोटि हतभागोंकी आशा, भुजबल, अभिमान चले

यह रूह देशकी चली अरे, माँकी आँखोंका नूर चला
दौड़ो, दौड़ो, तज हमें हमारा बापू हमसे दूर चला

रोको, रोको, नगराज पंथ, भारत माता चिल्लाती है
हैं जुल्म ! देशको छोड़ देशकी किस्मत भागी जाती है

अम्बरकी रोको राह, बढ़ो नगराज, शून्यमें जा ठहरो
बापू यह भागे जाते हैं, चरणोंको बढ़ पकड़ो-पकड़ो

पकड़ो वे दोनों चरण, पकड़ कर जिन्हें हमें सौभाग्य मिला
पकड़ो वे दोनों चरण, जिन्हें छूकर जीवनका कुसुम खिला

पकड़ो वे दोनों चरण, दासता जिनके सेवनसे छूटी
पकड़ो वे दोनों पद, जिनसे आजादीकी गंगा फूटी

जल रहा देशका अंग-अंग, शीतल घनको पकड़ो पकड़ो
भारत माता कंगाल हुई, जीवन-धनको पकड़ो पकड़ो

है खड़ा चतुर्दिक काल, दासता-मोचनको पकड़ो पकड़ो
माता खा गिरी पछाड़, भागते मोहनको पकड़ो पकड़ो

है बीच धारमें नाव, खबर है प्रलय वायुके आनेकी
थी यही घड़ी क्या हाय ! हमारे कर्णधारके जानेकी

दौड़ो, कोई जा कहो नाव किस्मतकी डूबी जाती है
बापू ! लौटो, अंचल पसार भारतमाता गुहराती है

किस्मतका पट है तार-तार हा, इसे कौन सी पायेगा
बापू ! लौटो, यह देश तुम्हारे बिना नहीं जी पायेगा

अपनी विपन्नताकी गाथा यह रो-रो किसे सुनायेगी
बापू ! लौटो, भारतमाता रो बिलख-बिलख मर जायेगी

दुनिया पूछेगी कुशल हाय, किससे क्या बात कहेंगे हम
बापू ! लौटो, सिर झुका, ग्लानिका कैसे दाह सहेंगे हम

लौटो, अनाथके नाथ, देशकी ईति-भीति हरनेवाले
लौटो, हे दया-निकेत देव, शत पाप क्षमा करनेवाले

लौटो, दुखियोंके प्राण, निःस्वके धन, लौटो निर्बलके बल
लौटो, वसुधाके अमृतकोष ! लौटो, भारतके गंगाजल

लौटो बापू, हम तुम्हें मृत्युका वरण नहीं करने देंगे
जीवन-मणिका इस तरह कालको हरण नहीं करने देंगे

लौटो, छूने दो एक बार फिर अपना चरण अभयकारी
रोने दो पकड़ वही छाती जिसमें हमने गोली मारी

करुणाकी सुनो पुकार फिरो, या अपनी बाह दिये जाओ
संतप्त देशको राम-सदृश हे बापू ! साथ लिये जाओ

—दिनकर

बापूके प्रति

गुण तो निःसंशय देश तुम्हारे गायेगा
तुम-सा सदियोंके बाद कहीं फिर पायेगा

पर जिन आदर्शोंको लेकर तुम जिये-मरे
कितना उनको कलका भारत अपनायेगा

बायें था सागर औ' दायें था दावानल
तुम चले बीच दोनोंके साधक सँभल सँभल

तुम खड्ग-धार-सा पंथ प्रेमका छोड़ गये
लेकिन इसपर पाँवोंको कौन बढ़ायेगा

जो पहन चुनौती पशुताको दी थी तुमने
जो पहन दनुजतासे कुश्ती ली थी तुमने

तुम मानवताका महाकवच तो छोड़ गये
लेकिन उसके बोझेको कौन उठायेगा

शासन सम्राट डरे जिसकी टंकारोंसे
घबरायी फिरकेधारी जिसके वारोंसे

तुम सत्य-अहिंसाका अजगव तो छोड़ गये
लेकिन इसपर प्रत्यंचा कौन चढ़ायेगा

—बच्चन

युग-पुरुष

अपनी कुर्बानी की, दुश्मनका किया सर नीचा
कौमका ध्यान गोया सत्यकी जानिब खींचा
युग-पुरुष, ऐक्यका पौधा जो लगाया तूने
मरते दमतक भी उसे खूने-जिगरसे सींचा

—अख्तर

एक क्षण

मृत्युके क्षणका यह विस्फोट, ढह गये क्षितिज तीरके पाश
तमसके बिखरे शत शत् खंड, उफनता आता क्षुब्ध प्रकाश
वहाँ मरघटके घायल तीर, बुझ गयी होगी चिता अधीर
यहाँ जग गयी नयी ही ज्वाल घोर कुंठाका अम्बर चीर
नयी मानवताका अभियान, रक्तका पावन कर अभिषेक
पराजित दानवके शत जन्म, मृत्युका विजयी यह क्षण एक
युग-युगोंतक जीनेकी साध, अमरताकी सूनी अभिलाष
मृत्युके अमृतकी यह घूंट मिट गयी जलती युगकी प्यास
उठी तमकी घन छाती फाड़ वेदनाके प्रकाशकी ज्वाल
कभीकी धुंधुंआती जल उठी चेतनाकी बुझ चुकी मशाल

—अग्रदूत



मानव ही दानव बनता है

शांति जगतमें जिसने भर दी, अरुणाभाकी किरण अमर दी
उसी देवताकी दनुजोंने लोमहर्षिणी हत्या कर दी
फूट फूट रो रही आग अब उसी जनार्दनकी जनता है
काल व्याघ्रने हाथ पसारा, किंतु न कुछ कम दोष हमारा
'नर ही नारकीय कार्योंको करता है', हमने न विचारा
तभी हृदय-छलनीसे छनकर रक्त हमारा यों छनता है
बीज पिशाचोंका बो डाला, कोहनूर अपना खो डाला
विधिने पटपर युग-युगसे जो चित्र बनाया था, धो डाला
आज इसी 'सोनेके पंछी' से बढ़ किसकी निर्धनता है
देखा जब बापूको सोये, चीन - अरब - अमरीका रोये
एक पुरुषमें वर्द्धमान - जरथुस्थ - बुद्ध - ईसा सब खोये
परम पुरुषको कापुरुषोंका पौरुष भी कैसे हनता है
हे बापू भारतके दर्पण, स्मृतिमें कौन करे क्या अर्पण
देश देशके कोटि-कोटि दृग करते आज तुम्हारा तर्पण
तुम नभमें उठ चुके, हमारा पतन यहाँ खाई खनता है

—अनिरुद्ध

वेद ऋचाएँ थीं साँसोंमें

वेद ऋचाएँ थीं साँसोंमें गुम्फित बसी थी तनमें
दृष्टि भरी थी वरदानोंसे मूर्त क्रिया थी मनमें
स्वर्ग बिकल होता था बापूकी आत्माके सुखसे
'रामनाम' उज्ज्वल होता था कढ़ उस करुणा-मुखसे
जीवित था विश्वास और संकल्प हृदय-कंपनमें
बिम्बित होती थी शिवता मुस्कानोंके दर्पणमें
देह जली पर प्राणोंका अह्लाद नहीं जल पाया
कौन जला पाया हिमगिरिको, कौन बुझा शशि पाया

चुका वक्षका रक्त अपरिमित प्रेम-सिंधु जीवनका
देता रहा मोल जो युग-युगके अभिशप्त मरणका
अधिदेवत्व क्षमाका, मानव ममताकी ईश्वरता
मूर्त हुई थी तापस तनमे पर-सेवा-वत्सलता

कौन सुनेगा अब पुकार पीड़ित जगके जन - जनकी
कौन हरेगा दाह-तृषा चेतनताके कण-कणकी
हाड़-चामकी पुतलीमे बलिकी बिजलीका चालक
त्यागाहुतिके भोलोंका अरुणाभ-पुण्यका पालक

ऐसा था देवर्षि हमारा बापू राष्ट्र-विधाता
ऐसा था वह अमर ज्योतिका अबुझ दीप्तिका दाता
निर्वापित हो गयी आरती 'राम-नाम'के जपकी
कॉप रही है नीचे फिर श्रद्धा निष्ठाकी, तपकी

वेद ऋचाएँ थीं सॉसोंमें सत्य-शिखा अतरमें
पद-रजमें संतत्व बसा था, देवसृष्टि थी स्वरमें
रोम रोमसे चैत चॉदनीका चन्दन झरता था
रोता था प्रभु स्वयं कि जब बापूका मन भरता था

वह सहिष्णुताका देवल वह शांति-स्नेहका संबल
वह तन्मयताका स्वामी उज्ज्वलतासे अति उज्ज्वल
थी सदेह अवदात विमलता उस निष्कामी तनमे
वेद ऋचाएँ थीं साँसोंमें राम मूर्त था मनमें

—अंचल



गांधीजी अमर हैं

बहरे बने हैं कान, चारो ओर शोर मचा
उरमें उठी क्यों शोक-सिंधुकी लहर है
निर्दय विधाता, इतना तो तू भी जानता है
अहसान उनके अखिल विश्वपर है
सत्यके स्वरूप, अवतार वे अहिंसाके हैं
शांतिका संदेशा पहुँचाते घर--घर हैं
कालकी मजाल क्या, जो फूटी आँखसे भी देखे
अम्बके विचारमें तो गांधीजी अमर हैं

—अम्बादत्त शर्मा 'अम्ब'

शमए-महफिल बुझ गयी

पैकरे इंसानियत आईन--ए--अमनोअमाँ
देवता अखलाकका तहजीबका शाहेजहाँ
ऐ कि जिसके दमसे था हिंदोस्ता रश्के जनाँ
ऐ कि जिसके हर कदमपर पाये--रफअतका निशाँ
जिसने हमको राहे आजादी दिखाकर दम लिया
जिसने हमको ख्वाबे गफलतसे जगाकर दम लिया
जिसने एक झटकेसे जंजीरे गुलामी तोड़ दी
हिंदकी फूटी हुई देरीना किस्मत जोड़ दी
उफ् कि एक ना-अक्लके हाथों ये हस्ती मिट गयी
याने महफिलको जगाकर शमए-महफिल बुझ गयी

——अमीर जाफरी

गोली तेरी चली कहाँ

छिदा कलेजा सपूतका ममताकी छाती गयी दहल
आज आँसुओंसे तर है दुखिया भारत माँका आँचल,
खुले बाल खा-खाके पछाड़ें आज दुहाई देती है
भारतमाताकी आह कानमें साफ सुनाई देती है
अरे निर्दयी नर-पिशाच क्यों गोद मेरी सूनी कर दी
क्यों मेरी ममताकी क्यारी निर्मम तिरशूलोंसे भर दी
आह, मेरा लाड़ला मेरी आँखोंका तारा किधर गया
हाय-हाय वह वीर सपूत, वह गांधी प्यारा किधर गया
कौन अहिंसाकी मीठी-मीठी अब तान सुनायेगा
कौन वह संझा समय प्रेमकी मधुर रागिनी गायेगा
कौन बहायेगा आँसू अब अत्याचारके मारोंपर
सच्ची बात कहेगा कौन अब तलवारोंकी धारोंपर
हाय-हाय डूबी नैया वह वीर खेवैया नहीं रहा
दुखियारों और असहायोंका बाँह गहैया नहीं रहा
देख निर्दयी, गोली तेरी चली कहाँ और लगी कहाँ
देख मेरा रक्तिम आंचल और छातीपर यह लाल निशाँ

—'आसी' रामनगरी



हे ज्योति-पुंज

हे वरद देव, हे ज्योतिपुंज, हे कम्पित-भू-सौरभ निकुंज
हे सत्यमूर्ति, हे दया-धाम, हे हिमकिरीटिनी-सुत ललाम
जो सार्ध सहस्त्रावधि आकुल, पीड़ित विजड़ित परतंत्र देश
उसको तुमने कर दिया मुक्त, उसको तुमने कर दिया शक्त
अपने प्राणोंका रस देकर जो किया अंकुरित वट महान
स्वातंत्र्य - शक्ति बलका प्रतीक पल्लव-पुष्पोंसे प्राणवान
तुम महायुद्धके सेनानी, जाग्रत जीवनके नव-वसन्त
ऊर्जस्व दूत, चिर शाश्वत-गति, भारतके महिमावान संत
तुमको पाकर युग धन्य हुआ, तुमको पा देश अजेय हुआ
पुस्वर्गिक वृहदारण्य-देश विज्ञेय हुआ, अध्येय हुआ
तुमने संस्कृतिके क्षीण गगनपर एक अमिट आभा भर दी
तुमने पापोंके पुंजोंपर विस्फोटमयी लावा धर दी
हम आदिकालके मानवके द्वेषोंसे अभी न मुक्त हुए
हम निज पापोंकी तिमिरावृत छायासे ताड़ित सक्त हुए
यह पंचभूतमय नश्वर तन, नश्वर भूतोंमें लीन हुआ
पर क्या प्राणोंको झंकृत कर देनेवाला स्वर दीन हुआ
तुम मानवताके देव, तुम्हारी वाणी जन-जन-ज्ञान बनी
तुम मानवताके प्रकट रूप, आदेश हमारा मान बनी
तुमने आजीवन जीवनमें पापोंसे छलसे युद्ध किया
तुमने आजीवन जीवनमें अभिशापोंको अवरुद्ध किया
था युद्ध तुम्हारा सेनानी ! भयसे, स्वार्थोंसे आजीवन
तुम प्रेम-मूर्ति, तुम दया-मूर्ति, तुम विश्व-मूर्ति मानव-स्पंदन
हे वरद देव, हे ज्योतिपुंज
हे कम्पित-भू सुरभित निकुंज

—उदयशंकर भट्ट

आह महात्मा गांधी

आकाशसे अनमोल सितारा टूटा
मन जिससे बहलता था नजारा टूटा
अब कौन लगायेगा किनारे इसको
भारत तेरी कश्तीका सहारा टूटा

तुम्हारे गमका आलम क्या कहूँ मैं
कि साँसोंसे निकलते हैं शरारे
जमींपर जर्रा-जर्रा रो रहा है
फलकपर रो रहे हैं चाँद-तारे

सबक अमनो-अमाँका देनेवाले
उनासी सालमें जगसे सिधारे
भँवरसे कश्तिए – हिंदोस्ताँ
लगायी थी अभी तुमने किनारे

जो हरदम थे अहिंसाके पुजारी
गये अफसोस वह हिंसासे मारे
डुबो दी 'ऐश' खुद जीवनकी नैया
लगा कर हिंदकी नैया किनारे

—'ऐश' माहेरी

महामानवकी स्मृतिमें

वज्र-सी बेड़ियोंमें जकड़ी विवशा वन व्याकुल थी जब भारती
वेगसे बन्धन तोड़, किसी सुतने उसकी थी उतार ली आरती
ऊँचा ललाट झुका क्षणमें अब रोकर हो असहाय निहारती
हाय ! उबारनेवाला चला गया 'मोहन मोहन' माता पुकारती

तम-तोमको भेदता ज्योति-सखा, जग-व्योममें आकर छा गया कोई
दिग-भ्रान्त विपन्नसे मानवोंको महामानव मार्ग दिखा गया कोई
छल-छद्म-प्रपीड़ित खिन्न धरापर शान्ति-सुधा बरसा गया कोई
अपना न सके थे प्रकाश अभी युग-दीप ही हाय ! बुझा गया कोई

कोटिक प्राणियोंके प्रिय प्राणको घातमें लाकर पापिन सन्ध्या
ऊपरसे अनुराग दिखा, तम अन्तर गोप, पिशाचिन सन्ध्या
दाँत विषैले चुभा कर मोहनको भी विमोहित, नागिन सन्ध्या
लूट गयी हा ! सुहाग-स्वतन्त्रताका कहो कौन-सी डाकिन सन्ध्या

—कमलाप्रसाद अवस्थी 'अशोक'

जन-जनके बापू कहाँ गये

संस्कृतिका उच्चादर्श, महातपका आदर्श परम उज्ज्वल
सहसा किस ओर विलीन हुआ हा ! छोड़ विश्वको निःसंबल
बापू हा ! चले गये, लेकिन किस ओर गये, किस ओर गये
हम दीन अभागोंके 'बापू' हा, हमको यों क्यों छोड़ गये
जीवन-धन बापू कहाँ गये
जन-जनके बापू कहाँ गये

वे चले गये अथसे ऊपर, इतिके चिर ऊर्जस्वल पथपर
वे चले गये हा, तोड़ तुच्छ पार्थिव जीवनके बन्धन-स्तर
उस पापीको क्या कहें कि जिसने उनके ऊपर वार किया
हा, बापूका ही नहीं मनुजताका उसने संहार किया
बापूके ऊपर वार ! आह, यह कितना निर्घृण कर्म हुआ
सब लोग कहेंगे युग-युगतक वस्तुतः कलंकित धर्म हुआ
मानवताके रक्षकके शोणितसे मानवने खेल किया
ओ दुर्विनीत, तूने वसुन्धराको श्री-हीना बना दिया

था अभी शेष वह कर्म कि जो बापूको था जीसे प्यारा
फैले इस रूक्ष धरित्रीपर चिर शुचिता-समताकी धारा
फैले फिर पारस्परिक स्नेह, बिछुड़े भाई फिर गले मिलें
जुट जायें टूटा सूत्र प्रेमका, फिर स्वर्गीय प्रसून खिलें
पर सर्वनाश हो गया, रूठ कर बापू हमसे चले गये
दुर्दैव ! संकटोंमें ही हम हा ! आज बेतरह छले गये
पर क्रोध करो मत ओ जन-गण, बापूको अब भी पहचानो
आत्माहुति देनेपर भी तो तुम बापूकी बातें मानो

मत क्रोध करो, यह कठिन परीक्षाका अवसर है याद करो
मत क्रोध करो, यह वज्रपात ! लेकिन मनमें तुम धैर्य धरो
यह विष पी लो तुम वैसे ही, जैसे बापू पीते आये
हाँ, विष पीकर तुम जियो कि ज्यों बापू पीकर जीते आये

बापू सच्चे 'वैष्णव-जन' थे पर-पीर उन्होंने जानी थी
आत्मिक जीवनका प्रकटि-करण उनकी लोकोत्तर वाणी थी
वे चले गये, पर एक बात उनकी स्थिर होकर स्मरण करो
आत्मा अछेद्य, आत्मा अभेद्य, आत्मिक जीवनको नमन करो
उनकी आत्माकी किरणें जन-गणके मनको उद्योतित कर दें
उनकी आत्माकी किरणें, भूतलको प्रकाशसे फिर भर दें
है अनुपमेय वस्तुतः विश्वमें बापूका बलिदान
वे मरे कहाँ, वे गये मृत्युको शाश्वत जीवन-दान

—कन्हैया

महादान

उस मोहक सन्ध्याके पीछे कुछ दुष्कृत्योंके छिपे हाथ
उजले प्रकाशके अन्तरमें काली छाया थी साथ-साथ
दितिकी सेना आसुरी शक्ति, थी अदिति अकेली थकी हार
माँगने चली थी महा अस्त्र, असफल करने भीषण प्रहार
दिति–अदिति साथ ही पहुँची थीं लेने मोहनसे महादान—
'दिति यहाँ तुम्हारा जिस शरीर, प्रिय अदिति तुम्हारे अजित प्रान'
क्षण एक प्रतीचीका अंचल हो गया रक्तसे काल लाल
नभने सस्मित आँखें खोलीं उठ गया अवनिका उच्च भाल

—कन्हैयासिंह 'तरुण'

बापूके निधनपर

घुमड़ पड़े हैं घन विषम विपत्तियोंके, उमड़ पड़ा है हाहाकार चारों कोदसे
ऐसे टेकवालेपर टूटा किस भाँति हाय, छोड़के दिवंक एक उन्नत प्रतोदसे
देशको उजाड़ जड़तासे दिया, चूर किया, प्रबल प्रमोद-हीन विरत विनोदसे
हाय! आज गोडसेने छीन लिया गान्धी-रत्न, मातृभूमि खंडिता प्रपीड़िताकी गोदसे

—कान्तानाथ पाण्डेय 'राजहंस'

आज विश्वमें हाहाकार

हा, बुझ गया दीप ज्योतिर्मय
था शिवरूप दिव्य जो निर्भय
अन्धकार उरमें करता है आज पुनः भयका संचार
दृगसे झर-झर झरते मोती
मानवता सिर धुनकर रोती
और पूछती आज विश्वसे—'हाय कहाँ मेरा शृंगार'
रवि-शशि रोते, वसुधा रोती
गंगा-यमुना रोकर कहती—
आज विश्वमें मानवतापर किया कालने कठिन प्रहार

—कालूराम अखिलेश

इस चिताकी राखमें

इस चिताकी राखमें कोई नया युग खोलता है
यह चिताकी राख है—बापू इसीमें छिप गये हैं
भावना ऐसी कि इसमें देवता-से दिख गये हैं
राख है—यह देशका अरमान है—ईमान भी है
राख है—यह देशका आँसू-भरा वरदान भी है
राख है—इसमें हमारे देशका इतिहास भी है
राख है—इसमें हमारी प्रगति और विकास भी है
यह चिताकी राख है— इसमें स्वदेश समा गया है
यह चिताकी राख है—इसमें नया युग आ गया है
अश्रु-गीली राख यह, इस देशको अवदात कर दे
युग-पुरुषकी राख यह फिरसे नवीन प्रभात कर दे
इस चिताकी राखमें मेरा मसीहा बोलता है
इस चिताकी राखमें कोई नया युग खोलता है

—'कुमारहृदय'

गांधी दीप जलाने आया

गांधी दीप जलाने आया

आभा-पुञ्ज, प्रकाश-स्रोत-निःसृत अम्बरमें छाने आया
पराधीनता अमा-निशामें मधु राका फैलाने आया
कोटि-कोटि हिय-दीप जले, चिर-मुक्ति-प्राप्ति-हित सब अकुलाये
सेनानी बढ़ चला समर-पथमें स्वतंत्रता-ध्वज फहराये
हिन्दू-धर्म-कलंक दलित-व्यवहार-भेदको धोनेवाला
जागरित आत्मा, तपःपूत, नव सृष्टि-बीजको बोनेवाला

मानवीय इतिहास-पृष्ठमें नयी दिशा दिखलाने आया
काल अनन्त, अनन्त भीम रव, किसने किसकी सुनी यहाँपर
यह वसुन्धरा किन्तु मौन नित नमन करेगी उसे कहाँपर
पिता, तुम्हारा दीपक स्मृतिका सदा-सर्वदा जलता जाये
आत्म-स्नेह उसमें उँडेल कवि चरणोंमें तेरे झुक जाये
भावपूर्ण, निश्छल शब्दोंकी जो निज भेंट चढ़ाने आया

गांधी दीप जलाने आया

—कुँवर कृष्णकुमार सिंह

हाय बापू

विश्व-वन्द्य बापूका प्रयाण सुनते ही हाय, वज्रका भी कठिन कलेजा चूर हो गया
काटो तो शरीरमें न रक्तका कहीं था लेश, धसक धरा भी गयी आसमान रो गया
मूर्तिवत होके अवसन्न सोचते थे खड़े, ऐसे दुष्कालमें हमारा भाग्य खो गया
पागल अधीर हो समीर पूछता है यही—विश्ववाटिकामें कौन पापबीज बो गया

—कुसुमाकर

देवता-सा सच्चे मानीमें वही इंसान था

हिंदके सरपर एकाएक क्या मुसीबत आ गयी
साथ लेकर यह मुसीबत, ताजा आफत आ गयी
रंजका वक्त आ गया, सदमेंकी सायत आ गयी
इस सिरेसे उस सिरेतक एक कयामत आ गयी

धर्मका अवतार था सतका पुजारी जो रहा
आज वह गांधी अजलकी गोदमें है सो रहा

जो अहिंसाका था हामिद, है जहांको इसका गम
गोलियां खाकर हुआ वह राहीये मुल्के अदम
दफ़अतन मजमामें आयी मौत लेनेको कदम
मौत उसको ले उड़ी, अब हो गये बर्बाद हम

हर कोई बेचैन है, इस सदमये जाँकाहसे
है जमीं हिलती गरज जाता है गरदूँ आहसे

हाय नत्थूराम कैसा काम यह तूने किया
फ़ेले-बदसे तेरे एक शोरे कयामत है बपा
जाहिले कमबख्त तुझको ये नहीं मालूम था
रूह गांधीकी नहीं यह मुल्ककी थी आतमा

जान लेनेके लिए बेवक्त आयीं गोलियां
हर किसीके कल्बे मुजतरपर लगायीं गोलियां

गांधीपर गोली नहीं, गोली चलाकर कौमपर
टुकड़े-टुकड़े कर दिया हर शख्सका कल्बो-जिगर
कत्ल करता क्या कोई, गांधीकी हस्ती थी अमर
कौम लेकिन मर गयी गोलीसे तेरी चीखकर

मंजरे आतिश था गांधी जाके जमुना तीरपर
हिंदकी थी लाश जलती जाके जमुना तीरपर

कौन-सा वो दिल है, जिस दिलमें रहे बापू नहीं
गमजदा मग़्मूम क्या हर कोई है हरसू नहीं

कौन-सी है आँख कि जिस आँखमें आँसू नहीं
कशमकशमें जान है दिलपर जरा काबू नहीं

देवता-सा सच्ची मानीमें वही इन्सान था
उसका कातिल भेषमें इन्सानके शैतान था

हर घड़ी उसने अजीयतपर अजीयत थी सही
फिर भी था सौ जानसे करता वो खिदमत कौमकी
है हकीकत जिंदगी उसकी जो कैफे कौम थी
कौम ही पर आखिरश कुर्बान कर दी जिंदगी

कौम थी उसपर फिदा वो भी फिदाये-कौम था
कौममें बेताजके फरमा रवाये-कौम था

वे लड़े स्वराज लें ले ऐसा लीडर था वही
कौम क्या इंसानियतका सच्चा रहबर था वही
जिसके आगे सर हो एक आलमका खम सर था वही
दर हकीकत वक्तका अपने पयम्बर था वही

अमनकी खातिर की उसने कौन कुर्बानी नहीं
उसका ढूंढ़े से भी मिलनेका कहीं सानी नहीं

ले के वो स्वराज्य, कायम कर रहा था राम-राज
कि यकायक गिर पड़ा हिंदोस्तांके सरका ताज
मौत क्या आ पहुँची उससे लेने हस्तीको खिराज
किस्मते हिंदोस्तां ही हो गयी ताराज आज

हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई पारसी रोते हैं सब
जान अपनी-अपनी उसकी यादमें खोते हैं सब

रख सकेंगे किस तरह कायम जहाँमें आनको
उसको क्या रोते हैं, रोते हैं सब अपनी जानको
क्या बढ़ायेगा कोई अब कांग्रेसकी शानको
रामराज अब कौन देगा लाके हिंदोस्तानको

गोलियाँ खाकर वो गहरी नींदमें है सो रहा
उसकी खातिर जान है हर शख्स अपनी खो रहा

नेहरू वो सरदारको हर राज समझायेगा कौन
हिंदू वो मुस्लिममें मिल्लतका सनद पायेगा कौन
सब्र दिलकी गमजदोंके आगे दे जायेगा कौन
हरिजनोंके गम मिटानेके लिए आयेगा कौन

हिंदमें फैली जो थी वो रोशनी जाती रही
रौनकी सूरत यह गोया कौमकी जाती रही

कुछ कहा जाता नहीं, अब क्या कहें कुछ और हम
रो रही है चश्मे दरियाबार दिल है महवे गम
रोशनाई यह नहीं गिरियाँ हुई चश्मे क़लम
क्या लिखें आसार जब असबारे गम यह है बहम

"कुश्ता"वो कुश्ता नहीं, कुश्ता हुई है कौम आज
गांधी तो मुर्दा नहीं मुर्दा हुई है कौम आज

—'कुश्ता' गयावी

नील गगनमें काले बादलने रो-रो कर गाया रे !

प्राण-पखेरू छोड़ चला बापूकी निर्मल काया रे
खोकर निविड़ तिमिरमें जगको दीपक-राग सुनाया रे

नया रूप धर जन-जनके मनमें फिर बसने आया रे
सत्य, अहिंसाका अमृत-घट हमें पिलाने लाया रे

पाप और अन्याय घृणाका काला मुख कुम्हलाया रे
विश्व एक घर है, धरतीपर एक रामकी माया रे

वही सबल है गांधीजीका जो पर-दुख हर पाया रे
नील गगनमें काले बादलने रो-रो कर गाया रे

—कृपाशंकर शर्मा

धरती का सायंकाल हुआ

सूरज डूब गया धरतीका सायंकाल हुआ
काल-पुरुष मिट गया, धराका सूना भाल हुआ

आदि ज्योति उठ गयी आज मिट्टीके घेरे पार
युगकी अक्षय आत्मा सिमटी बनी एक चीत्कार
आज समयके चरण रुक गये, हुई प्रलयकी हार
महापूर्णता मानवताकी छोड़ गयी संसार
मरकर मानव अमर बना, लघु रूप विशाल हुआ,
सूरज डूब गया धरतीका सायंकाल हुआ

रुग्ण धरापर जमी हुई थीं, सदियाँ बन प्राचीर
मानवतापर कसी युगोंसे पापोंकी जंजीर
ईसा-बुद्ध खड़े नतशिर, थीं खिंची शक्ति-शमशीर
तुमने धरतीके माथेसे पोंछी रक्त - लकीर
मृत प्रतिमा जागीं जीवित जगका कंकाल हुआ
सूरज डूब गया धरतीका सायंकाल हुआ

एक अशेष दुखद सपने - सा उलझा था संसार
दिनमें जले दीप-सा जीवन हतचेतन निस्सार
मिट्टीको चिर सृजन शक्तिका ले विराट आधार
तुम हर कनसे उठा सके मानवताके अवतार
पथकी हर पद-चाप क्रांति, हर चिन्ह मशाल हुआ
सूरज डूब गया धरतीका सायंकाल हुआ

थकी ज्योतिका तिमिर-ग्रस्त संघर्ष हुआ गतिमान
इतिहासोंके अंधकारसे ऊब गया इंसान
हार गयी आत्मापर आकर पशुताकी चट्टान
कष्टोंसे पंकिल मानवता उठी बनी हिमवान
जनता हुई अजेय, नया जीवन जयमाल हुआ
सूरज डूब गया धरतीका सायंकाल हुआ

किंतु तिमिर फिर उभड़ा करने अन्तिम अस्त्र प्रहार
धर्म, जाति हिंसाकी लेकर तक्षक-सी तलवार
मनुज जला, शैतान उठा देवत्व हो गया क्षार
साम्राजी बीजोंसे ऊगे शस्त्र-समान विचार
सहसा विषके दीप बुझ गये, बुझे गरल—तुफान
भस्म हुआ तम, कर प्रकाशकी रक्त-अग्निका पान
तपमें रची अस्थियोंसे जन-बज्र हुआ निर्माण
मिट्टी नवयुग, तनका हरकन रविकी नयी उठान
तुमने मरकर मृत्यु मिटा दी, विश्व निहाल हुआ
सूरज डूब गया धरतीका सायंकाल हुआ

—गिरजाकुमार माथुर

कैसे तुमपर अश्रु बहायें

हे विश्वशांतिके स्वप्न-दूत, शापित धरतीके कुल-नन्दन

फूलोंके फूल ! कुचल तुमको तुमपर क्या फूल चढ़ायें हम
दीपोंके दीप ! बुझा तुमको क्या लघु-स्मृति-दीप जलायें हम
पापीके आंसूसे छाले पाषाणोंपर भी पड़ जाते
जलदान तुम्हें कैसे दें, कैसे तुमपर अश्रु बहायें हम
यह होगा तुमपर व्यंग ऋषे, अपमान तुम्हारे शवका यह
हम रक्त—रँगे हाथोंसे कैसे करें तुम्हारा अभिनन्दन

हमको न क्षमा कर पायेंगी बंदी-घरकी काली रातें
शत-शत बलिदानोंसे रंजित फाँसीकी कुहरमयी प्रातें
खेतोंकी भरी-भरी आँखें, चौपालोंकी उखड़ी साँसें
निर्वासित जीवनपर छायी भारतकी भटकी बरसातें
अब तब प्रायश्चित होगा जब आदर्श तुम्हारे सम्मुख रख
हर नारी-नर विचरें हे देव, तुम्हारे जीवित स्मारक बन

कितने निर्जन गिरि, मरु, काननमें फूंक दिया तुमने जीवन
युग–चेतनताकी अलकोंमें सिन्दूर तुम्हारे पद-रज-कण
तुम थे हारे चरणोंके बल, दुखियारे नयनोंके सम्बल
बरसाया तिमिरावर्त डगरपर तुमने किरणोंका सावन
शतयुग कल्पोंके नभ-चुम्बी पथदाता दीपाधारोंमें
अविराम जले निष्काम तुम्हारे चिन्तन क्षण, ज्योतित स्पंदन

बह चले विश्व बंधुत्व विमल, मन्दाकिनि-सा मंथर-मंथर
ममता, समता, एकता स्वर्ण कुमुदों-सी जिसकी लहरोंपर
हो आँखों-आँखोंमें विहान, माथे-माथेपर स्वाभिमान
साँसों-साँसोंमें प्रीति–ज्वार, प्राणों-प्राणोंमें मरु–उर्वर
वर दो ! श्रमजीवी, कृषक, ग्वालबालोंका मानव हो ईश्वर
काले अतीतके मस्तकपर मंगल किरणोंका हो चंदन

—गिरधर गोपाल

सत्य-सेवकोंकी है परीक्षा मौत

सत्य-प्रतिपादनमें कभी नहीं पाया भय, माना सुकरातने स्व-मान विष पीनेमें
देते सत्य उपदेश शूलीपर चढ़े ईसा, राग नहीं देखा मिथ्या जीवनके जीनेमें
'नवरत्न' सत्य-सेवकोंकी है परीक्षा मौत, उसे पार करना है उनके करीनेमें
कृष्णके चरण बीच प्राणघाती लगा बाण प्राणहारी गोली लगी गांधीजीके सीनेमें

—गिरधर शर्मा 'नवरत्न'

मृत्युञ्जय गान्धी

हे कर्मवीर, हे मृत्युञ्जय, तुम सारे जगके मंत्र बने
कन-कन, मन-मनमें व्याप्त रहे, तुम बंधन तोड़ स्वतंत्र बने
जल रही आग थी हिंसाकी, जीवन दे उसको बुझा दिया
उस अमर ज्योतिने अंधकार हर, मार्ग सत्यका सुझा दिया
तप कर जीवनकी आहुति दे, मुर्देमें जिसने प्राण दिया
बन गया विश्व सारा पतंग, जब दीपकने निर्वाण लिया
बन गये फूल भारत माँके वे जलते शवके अंगारे
वह तो सुगंध बन फैला है, क्या मार सके हैं हत्यारे
जो सत्य, अहिंसा, विश्व-प्रेमकी नयी त्रिवेणी लाया है
उसने माताको मुक्त बना जीवनका फूल चढ़ाया है
यह फूल कुंभमें आया है, इसका भी कुंभ मनायेंगे
अब सत्य-प्रेमके संगममें मानवको देव बनायेंगे
यह रोनेका है समय नहीं, उसके पथके अनुरक्त बनो
बन पंथ-प्रदर्शक सब जगके गांधीके सच्चे भक्त बनो

—गुरुभक्त सिंह 'भक्त'

वह कौन

महाशून्यमें कौन बढ़ा जा रहा लकुटिया अपनी टेक
अंबर-चुम्बी हिमश्रृंगोंपर जिसके प्रतिपदपर सुकुमार
विकस रहे नक्षत्र-कमल पद-चिह्न, स्वर्ग करता अभिषेक
मंदाकिनि-पय-धारासे, पाटल-पुष्पोंका पहने हार
शची अप्सरापरा कर रहीं सुमन-वृष्टि, उनचास पवन
सप्त-सिंधु, दश दिशा, अष्ट-वसु, रुद्र ग्यारहों, वरुण, कुबेर

लुटा रहे, मणिकोष विनत पलकोंसे करते मधुर स्तवन
छाया करता शेष स्वयं आ, निज अशेष फणमंडल घेर
वह लघु सुमन-देह कृश, कंपित मानव भाग्य-सूत्र-सी-क्षीण
डग-मग पगके, अगमग वसुधा, जिनकी पद-नख-द्युतिको चूम
देख रहा मैं हाय, देखते अभी हो गयी किधर विलीन
तड़ित-ज्योति-सी, विकल चेतना चक्राकार रही है घूम
अंधकार घन, सृष्टि अतलमें चली, प्रकंपित तारा-लोक
मानवताके महानाशको आज कौन पायेगा रोक

—गुलाब

सर्वस्व हमारा भस्म हुआ

होली हो ली, रह गयी राख
सदियोंसे हम रंगकी होली ले चंग खेलते आये थे
प्रियपर अनुराग भरे कुमकुम रस-रंग रेलते आये थे
प्रति वर्ष फागकी मस्तीमें हम बसुध-से हो जाते थे
हर्षोन्मद नवयौवन-मदमें तिरते थे, गोते खाते थे
पर अपने इस अक्षय सुखपर हा! असमय वज्र-निपात हुआ
भारत-माताके शतदलपर हा हंत! तुषाराघात हुआ
अपने ही हाथोंसे अपने कुल, राष्ट्र, धर्मपर गिरी गाज
'हे राम-राम' कहते-कहते बापूका तन प्रणिपात हुआ
छिप गया चाँद, घिर गयी अमा, दिग्दिगमें फैला कृष्ण-पाख
होली हो ली, रह गयी राख
हर बार कहा करते थे वे, "हो सावधान दुनियावालो
उठती होलीकी लपटोंमें कल्मषको अरे, जला डालो

अब तोड़ रूढ़ि-भ्रमके बंधन, भाई-भाई मिल जाओ रे
मानवता तुम्हें पुकार रही भूतलको स्वर्ग बनाओ रे!"
पर कहते-कहते भी उनके हम खूनी होली खेल उठे
अपनी तीखी तलवारोंपर अपने ही सिरको झेल उठे
हम चले वीर बननेपर लज्जाको भी लज्जित कर डाला
बापूके संचित अरमानोंको उन्मत्त पगोंसे ठेल उठे
हमने न एक मानी उनकी, वे समझाते ही रहे लाख
होली हो ली, रह गयी राख

अब क्या होली, किससे होली, अब कुशल खिलाड़ी चला गया
जिसको तूफान हिला न सके, वह अपनों ही से छला गया
अब क्या गुलाल, कैसा चंदन, कालिखसे काला भाल हुआ
जिसका कोई प्रतिकार नहीं, ऐसा दुष्कर्म कराल हुआ
अमृतके झरने झरते थे जिस महापुरुषकी बोलीमें
सद्भाव समुन्नत होते थे जिस महामनाकी झोलीमें
गोलीसे प्राण गये उसके धिक्कार राष्ट्रके पौरुषको
सर्वस्व हमारा भस्म हुआ सन् अड़तालिसकी होलीमें
संततियाँ युग-युग कोसेंगी मानवताकी मिट गयी साख
होली हो ली, रह गयी राख

—गोपालप्रसाद व्यास

तुम आज बने मृत्युंजय

सिसक रहा है सिंधु, हिमालय चुपके-से रोता है
यहाँ मसीहा मानवका चिर निद्रामें सोता है
तुम अलक्ष्यके पथिक बन गये, दीप बुझ गये सारे
विश्व खोजता है पथमें खोये पग-चिह्न तुम्हारे
इस संकटकी विषम घड़ीमें कैसे पाप जगे हैं
अरे, कौन-से युगके सोये ये अभिशाप जगे हैं

मिटे तुम्हारा रक्त-पान कर अब तो यह दानवता
युग-युग तक भारत रोयेगा, रोयेगी मानवता
ज्वालाओंके पथिक, ज्योतिकी किरणें देते जाओ
कोटि-कोटि-जनकी आँखोंके आँसू लेते जाओ
राम, बुद्ध, ईसा, अशोकके तुम हो महासमन्वय
बापू, हालाहल पीकर तुम आज बने मृत्युञ्जय
बापू, रोक नहीं पायेगी आज पुकार हमारी
किंतु तुम्हारे साथ चलेगी जय-जयकार हमारी
सत्य-अहिंसाके प्रतीक हे, तुम हो सदा अनश्वर
बापू, तुम इतिहास बन गये, युग-युगके परमेश्वर
आज तुम्हारी पुण्य-चितासे निकली जो चिनगारी
राख बनाकर ही छोड़ेगी बर्बरता हत्यारी
है स्वीकार चुनौती मानवको बर्बर कातिलकी
जनता आज मिटा देगी जुर्रत कायर बुजदिलकी
लहू तुम्हारा नये जागरणका दिनमान बनेगा
बापू, तव बलिदान नये युगका अभिमान बनेगा
तुम आधार-शिला हो, इसपर दुर्ग महान बनेगा
बापू, यह विषपान भविष्यत्‌का कल्याण बनेगा
मुक्त हो गये, अहे महामानव, मानवके तनसे
मुक्त हो गये ओ विद्रोही, जीवनके बंधनसे
विश्व-शांतिके दूत, शांतिकी वेदीके बलिदानी
बापू, तुम बस शेष रह गये बनकर एक कहानी
बापू, मार्ग-दीप बन जलना घोर ध्वांतमय मगमें
तुम सुकरात बनोगे नव पीढ़ीके भावी-युगमें
तुम युगका विश्वास बन गये बलि-वेदीपर चढ़कर
बापू, तुम इतिहास बन गये युग-युगके परमेश्वर

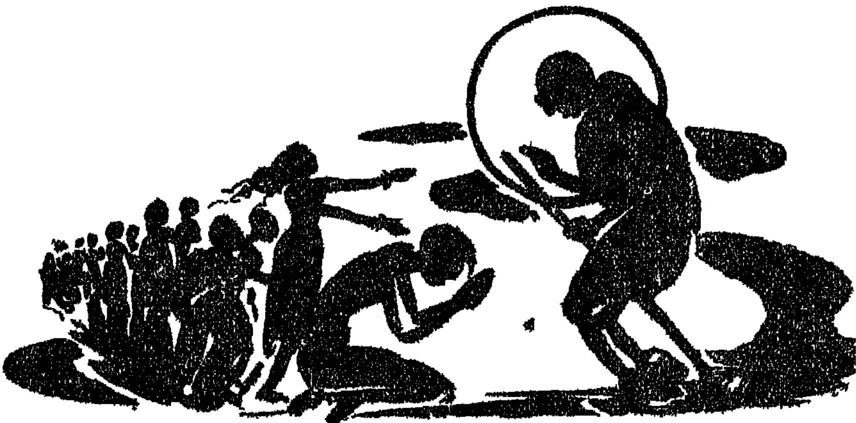
—घनश्याम अस्थाना

युग-निर्माता

बापू !
तुम मानवकी संचित विभूतियोंकी
करुणा और शांति
स्नेह-ममताकी प्रतिमा थे
प्रतिमा वह कैसी,
पाषाणकी ?
पाषाणकी क्या तुलना
उन अस्थियोंसे
जिनमें वह शक्ति थी
कि हिल उठी सुदृढ़
चट्टानके धरातलपर
वैभवसे विजड़ित
साम्राज्यकी काली शिला

आज उन अस्थियोंका
शेष भी रहा है नहीं
उनका विसर्जन ही
देशकी धमनियोंमें
गंगा और यमुनाके प्रवाहमें
करेगा निर्माण युग-चेतनाका
अल्लाह और ईश्वरका
भेद ही मिटानेमें
खोये जो प्राण
वह सत्यकी लकीर
बन अमिट रहेगा
चिर-कालतक हमारे बीच
भावनाके देश में

—चन्द्रचूड़



अवतार कौन

वे क्षण जिनमें निश्चेष्ट हुआ था वह शरीर
कोदंड-कालके थे वे सबसे तीक्ष्ण तीर
वे तीर छोड़ वह काल हुआ होगा अचेत
विधि कांप उठा होगा थर-थर देवों समेत

विधिकी रचना विधिका कर बैठी आज नाश
यह सर्वनाश ! यह सर्वनाश ! यह सर्वनाश
रो पड़ी मृत्यु—कितना अपयश, कितना कलंक
वह उज्ज्वल कितना, कितना मेरा श्याम अंक

कह उठा शेष—अब धर दूँ भूमंडल उतार
लाखों पहाड़ पापोंके मेरे फण हजार
वह ऊपरको खींचे था ठहरी रही सृष्टि
अब कैसे झेलूँ एकाकी यह भार-वृष्टि

प्रलयंकर बोला—पटक चरण, जय महाकाल
परिवर्तनको उत्सुक तांडवकी ताल-ताल
दिशि-दिशिमें छाया प्रश्न मौन, यह प्रश्न मौन
अब होगा फिर अवतार कौन ? अवतार कौन

—चन्द्रप्रकाश सिंह



आज स्वर्ग भी रोया

इस धरतीका रोना सुनकर आज स्वर्ग भी रोया

कोटि-कोटि कण्ठोंकी वाणी लौटी शून्य गगनसे
सब कुछ तो तुम बता गये हो अंतिम मौन नमनसे

माना वह अनबोली छवि, पर तुम तो बोल रहे हो
भावीका इतिहास-पृष्ठ चुपके से खोल रहे हो

गये माँग चिर-विदा, जानकर कौन नींद भर सोया
इस धरतीका रोना सुनकर आज स्वर्ग भी रोया

इस धरतीका राष्ट्र-देवता क्या मरकर मर सकता
पूछ रही है माँ इस युगसे कौन घाव भर सकता

अपने घरमें आग लगा बैठे अपने घरवाले
गर्वित होकर पूछ रहे भारतसे बाहरवाले

ब्रह्माने भी शशि-कलंकको नहीं आजतक धोया
इस धरतीका रोना सुनकर आज स्वर्ग भी रोया

भाव सभीके पास भरे हैं किंतु नहीं है भाषा
रुक-रुक जाती है यह तूली लिखनेसे परिभाषा

जो अविदित था विदित किया तुमने अपनेको खोकर
तुम स्वीकार करो श्रद्धांजलि हम सब देते रोकर

बिखर गयी वह राशि राष्ट्रकी तुमने जिसे सँजोया
इस धरतीका रोना सुनकर आज स्वर्ग भी रोया

—चन्द्रमुखी ओझा 'सुधा'

वह विश्वबंद्य

शत-शत कोटि हृदयका वासी, जो जगतीका जीवन-प्राण
युगका ले सन्देश उसीने किया स्वर्गको महा पयाण
स्वतन्त्रताका अनुपम स्नेही एक पुजारी हुआ विदा
जिसका था विश्वास अहिंसापर जीवनमें अटल सदा

हिंसाके बल छला गया वह अकस्मात दुःख-घटा घिरी
भूमंडलपर करुणा जल बन पाषाणों-सी घनी झरी
प्रकृति स्तब्ध, कंपित वसुधा, अंबरके तारे हुए विकल
उष्ण सिसकियाँ ले समीर श्वासोंमें जिसके रहा न बल

सुप्त उरोंमें गति भरनेवाला वह अब हो स्वयं मौन—
क्या सोच रहा अति ध्यान मग्न, बतला सकता है कहो कौन
क्या मृत्यु कभी उनकी होती 'महात्मा' तो रहते अजर अमर
'सत्यं शिवं सुन्दरम्' पोषक संसृतिमें विचरित उनके स्वर

साधक अब मुक्त हुआ कर्त्तव्योंसे मिल ज्योति-पुंजमें लय
पर भ्रममें भूला दीवाना दे आज मृत्युको निज परिचय
धर्मोंका एक समन्वय हो उन सिद्धान्तोंका कर निर्माण
विश्व-बन्धुत्व भावसे जनका करना चाहा जीवन त्राण

शोषित पीड़ितका साथी बन जागृतिका दे मोहक मन्त्र
नव चैतन्य शक्ति साहससे किये स्फुरित मानव-मन्त्र
उस विश्वबंद्य गांधीके गुणको कह न सके कविकी वाणी
जिसके दिव्यादर्शोंकी महिमा गाती हो कल्याणी

फूटा भाग्य राष्ट्र-निर्माता हुआ विलग निष्ठुर जगसे
कर न सका कातिल भी वैसे ही विचलित उसको मगसे

उसे स्वर्गमें सुर-बालाएँ पहिनातीं जयकी माला
यहाँ शोक, संताप, निराशाने अपना डेरा डाला

जगत्पिता, दे शांति उसीको जो कि शांतिका रहा उपासक
जगके जड़ मानव ये अपना झुका रहे श्रद्धासे मस्तक
अंतिम क्षण भी जिसके मुखसे थे ध्वनित हुए स्वर—'राम राम'
वह रमा हुआ जगके कण-कणमें ध्रुव-सा चमके अमर नाम

—चन्द्रसिंह झाला 'मयंक'

कैसी बिजली गिरी

कैसी बिजली गिरी कि सहसा खिला चमन वीरान हो गया
हाय ! एक पलमें ही निर्धन निखिल विश्वका प्राण हो गया

धरती डोल उठी अंबरमें दारुण हाहाकार छा गया
काँप उठा हिम-गिरि भयसे सागरमें सहसा ज्वार आ गया

आसमान रो पड़ा विश्वमें उमड़ा शोक—तिमिरका बादल
प्राण-प्राणके उर-प्रदेशमें दुखका पारावार छा गया

देव अहिंसाका हिंसाकी वेदीपर बलिदान हो गया
कैसी बिजली गिरी कि सहसा खिला चमन वीरान हो गया

हाय एक आँधी आयी जिसमें वह जलता दीप खो गया
पुष्प कि जिससे सुरभित जग था आज सदाके लिए सो गया

बंद हो गयी अमृतमय वाणीकी प्रिय सुखप्रद निर्झरिणी
राग किंतु जन-जनके उरमें दिव्य प्रेमका बीज बो गया

झंकृत जग जिससे था वह निस्पंद वीणका प्राण हो गया
कैसी बिजली गिरी कि सहसा खिला चमन वीरान हो गया

जिसने द्वेष-घृणाके विषसे मृतवत् जगको अमिय पिलाया
जिसने जन्म जन्मसे ऊसर बनमें नूतन कमल खिलाया
पशुताके चिर अंधकारमें मानवताकी ज्योति जगायी
युग-युगका भय-तिमिर दूर कर स्वतंत्रताका दीप जलाया

हाय ! वही रे अस्त सदाके लिए आज दिनमान हो गया
कैसी बिजली गिरी कि सहसा खिला चमन वीरान हो गया

जो जगमें रहकर भी जगसे रहा सदा निर्लिप्त कमल-सा
दुःख विपत्तियोंकी झंझाओंमें भी हँसता रहा अनल-सा
था जिसका विश्वास सत्यमें अचल हिमाचलसे भी अविचल
जिसकी दया-क्षमाका सागर फैला महासिंधुके जल-सा

रूप समन्वित बुद्ध और ईसाका अन्तर्धान हो गया
कैसी बिजली गिरी कि सहसा खिला चमन वीरान हो गया

आलोकित पथ किया सदा जिसने प्राणोंके दीप जलाकर
चलता रहा आगपर जो दृढ़ सत्य-अहिंसाका व्रत लेकर
उसकी ऐसी निर्मम हत्या, आह ! कल्पना भी थर्राती
मनुज मात्रकी सेवा की जिसने जीवन भर देह गलाकर

उसी अमरकी मृत्यु ? अरे, वह तो नरसे भगवान हो गया
कैसी बिजली गिरी कि सहसा खिला चमन वीरान हो गया

—जगदीशचन्द्र गुप्त "विह्वल"



आज संध्या रो रही है

यह विषम संवाद कैसा
आज संध्या रो रही है व्योमतलमें तम समाया
नील तारा-जटित नभकी हो गयी श्री-हीन काया
शिशिरके शीतल अनिलमें एक अनल-प्रवाह आया
आज भारत-चंद्रपर सहसा दुराशय राहु छाया
नियति, तेरी नीतिमें यह प्रकट प्रलयोन्माद कैसा

भारतीने विरस होकर क्यों चढ़ी वीणा उतारी
मूच्छित सहसा हुई क्यों मूर्च्छना गायक तुम्हारी
लीन विस्मृतिमें हुई क्यों भावनाएँ आज सारी
रागने वैराग्य साधा, कल्पना कुंठित विचारी
कवि, तुम्हारे गानमें यह आज करुणा-नाद कैसा

'पूज्य बापूका निधन' आश्चर्य रे, यह हो गया क्या
कृष्ण-लीला-संवरणका संस्करण फिर हो गया क्या
पुनर्वार अरण्यमें गौतम तथागत सो गया क्या
विश्व-पूजित देश-जननीका मुकुट-मणि खो गया क्या
देव-नरके कार्यक्रमका यह दनुज-प्रतिवाद कैसा

तुम अमर हो देव, तुमने मृत्युसे चिर-मुक्ति पायी
अमित करुणाकी तुम्हारी ज्योति कण-कणमें समायी
ओ सुदर्शन, विश्वमैत्री विश्वमें तुमने जगायी
लोक-मंगलकी अहिंसा-जन्य नव पद्धति दिखायी
सत्यके बल-दानका बलिदानमें अनुवाद कैसा

मूर्त-तनसे आज यद्यपि प्रकट अंतर्धान तुम हो
किंतु जन-जनके हृदयकी भक्तिके उत्थान तुम हो
तुम अलौकिक प्रेरणा हो, शुद्ध-बुद्धि-विधान तुम हो
देश-उन्नतिके शिखर-आरोहमें पथगान तुम हो
यह तुम्हारी चेतनाका लोक अंतर्नाद कैसा

—जगदीश शरण

महाप्रयाण

रो रहा त्रिलोक शोक छा गया महान
देवता बना मनुष्य है यही प्रमाण
त्यागमूर्ति दिव्य कीर्तिवान उठ गया
देशका महान स्वाभिमान लुट गया

रो रहा झुका असीम आसमान है
देशके सपूतका महाप्रयाण है

सत्यका, सनेहका प्रतीक खो गया
शांति - मूर्ति साहसी विलीन हो गया
शक्ति और भक्तिका विधान हो गया
स्वतंत्रताकी माँगका सिंदूर धो गया

भावसे निहारती तुम्हें कुरान है
देशके सपूतका महाप्रयाण है

डूब गया सत्य - सूर्य है अकालमें
हा, कलंक लग गया स्वदेश भालमें
मानवी अहिंसाका स्वरूप खो गया
भाग्यवान भूमिका सुरेश सो, गया

विश्वके दधीचिका अनंत दान है
देशके सपूतका महाप्रयाण है

घोर महाकालका निवास आज है
मंद भाग्य - सूर्यका प्रकाश आज है
डूब रही राष्ट्र - नाव बीच धारमें
शक्ति क्या न शेष देशकी पुकारमें

जन्म मृत्यु तो उसे सदा समान है
देशके सपूतका महाप्रयाण है

वर्तमान युद्ध छोड़के चला गया
विश्व बन्धनोंको तोड़के चला गया
देवने सदैव दिव्य काम कर दिये
पुत्रने पिताके हाय ! प्राण हर लिये

देवदूतका पवित्र प्राण - दान है
देशके सपूतका महाप्रयाण है

—जगमोहननाथ अवस्थी

गांधीजी

हा गुलाम-आबाद कहलाता था यह हिंदोस्ताँ
पाँवमें इसके गुलामीकी पड़ी थीं बेड़ियाँ

चैनसे सोया न आजादीकी खातिर उम्र भर
देशवालोंको मिले सुख, था यही पेशे नजर

बे-इजाजत साँस लेना भी हमें यों बार था
चैनसे रहना हमें इस दौरमें दुश्वार था

आये गांधीजी हमारी रहनुमाईके लिए
रास्ते सब हमको दिखलाये भलाईके लिए

बस यही धुन थी उन्हें हिंदोस्ताँ आजाद हो
सबको अपना हक मिले हर आदमी दिलशाद हो

रफ्ता रफ्ता कामयाबी उनको हासिल हो गयी
सहते सहते मुश्किलें आसान मुश्किल हो गयी

यानी ये पंद्रह अगस्त था सबकी आजादीका दिन
हिंदू औ मुस्लिम, गरज हर कौमकी शादीका दिन
हो गया था यह यकीं आरामसे गुजरेंगे दिन
ये खबर किसको थी यूँ आलामसे गुजरेंगे दिन
कैसी आजादी मिली होने लगा बस कुश्तो-खूँ
कत्लोगारतका हुआ हर एक इन्साँको जुनूँ
गांधीजी जिस दम हुए मशगूल याद - अल्लाहमें
गोलियाँ कातिलने बरसायीं इबादतगाहमें
खात्मा होने लगा गांधीकी जिस दम जानका
मरते-मरते भी लबोंपर नाम था भगवानका

—जफर साहब

सिर झुकाते थे जिसे

मर्द-कामिल या फरिश्ता या कि पैगम्बर कहें
गमगुसारे-मुल्को-मिल्लत या उसे रहबर कहें
मुख्तसर-पैकर, गदा सूरत, मुजस्सम इन्किसार
दहरकी सबसे बुलंद हस्तीमें था जिसका शुमार
ऐशको ठोकर लगाकर की गरीबी अख्तियार
सर झुकाते थे जिसे दुनियाके सारे ताजदार
जिसकी दुनिया है सनाख्वाँ वह बुलंद इकबाल था
ठीक उस मौके पै आया हिंद जब पामाल था
मरते हैं हर एक अपने जिस्मो-तनके वास्ते
उसने हस्ती वक्फ कर दी थी वतनके वास्ते
घूमती थी खल्क जिस सू घूमती उसकी नजर
हुक्म पानेके लिए रहती थी हरदम मुन्तजर

कोई दुनियामें न उसका दुश्मनो-बेगाना था
सबसे ही बरताव यक-साँ और हमदर्दाना था
वसअते दिल उसकी वह जिसमें जहाँका दर्द था
कूवतें देता था कमजोरोंको ऐसा मर्द था
देता था पस्तोंको इज्जत वह बुलंद-इखलाक था
पर गुलामीमें किसीके रहना उसको शाक था
दर्स था उसका हकीकतका हमें इरफान हो
अपना पसमांदा वतन खुशहाल हो, जीशान हो
जंगकी बेअस्लहा बरतानियाके बरखिलाफ
जिसको करना ही पड़ा उसकी फतहका एतराफ

—जमुनादास सच्चान

वह शांतिका देवता

रो रही है फर्ते गमसे मादरे हिंदोस्ताँ
जिसपै इसको नाज था नूरे-नजर वह चल बसा
फ़स्ले गुलमें भी खिजाँका हो रहा है दौर दौर
आज भारतके चमनका सर्वे खूबी उठ गया
थम न जाये खूँ फिशानी चश्मे गिरयाँ देखना
ताजे जरींसे वतनका लाले यकता छिन गया
जिससे बज्मे हिंद थी रोशन वह शम्आ बुझ गयी
हाय जालिम सिफला कातिल क्या गजब तूने किया
रातके अँधेरका दिनमें भी होता है गुमा
आज हिंदुस्तानका महरे दरख्शाँ छिप गया
सदहा बरसोंमें कोई होती है ऐसी हस्तियाँ
ऐ खुदा वह मुल्क जिनका ऐसा हो बख्ते रसा

मुद्दतोंसे हिंद था गैरोंके कब्जेमें गुलाम
किस कदर इसने सहे दौरे गुलामीके जफा
जब खुदाने चाहा जागें इस जमींके भी नसीब
अपने लुत्फे ऐजद्दीसे गांधी पैदा कर दिया
तू है मोहनदास अम्नो-आश्तीका था सरौश
तू अहिंसाका था दायी शांतीका था देवता
बेजहालो, बेकतालो, बेमिसालो बेनबर्द
हिंदको तूने लिया बंदे गुलामीसे छुड़ा
आज परदेमें जहाँके तुझ-सा कोई भी नहीं
किससे दें तमसील तेरी कौन है हमता तेरा
चर्चिल व एटली व स्टलिन बड़े सय्यास हैं
पर नहीं तेरे मुकाबिल तिफले-मकतबसे सिवा
कत्ल तेरा हमवतनके हाथसे उफ ! हाय हाय
क्यों न समझें पेश खेमा नूहके तूफानका
तेरी हस्तीके सबब हम जिस कदर थे सर-बुलंद
उतना ही बज्हे निदामत है यह कत्ले नारवा
एककी नालायकीने कर दिया सबको जलील
एककी बदनीयतीसे मुल्क रुसवा हो गया
सख्त मुश्किल है अभी नेमुल बदल होना तेरा
हो नहीं सकती हैं पुर इस वक्त यह खाली जगह
कौन अब शामो सहर अमृत पिलायेगा हमें
कौन शीरीं गुफ्तगूसे अब जिगर गरमायेगा
किससे सीखें अब सियासत पैरवी किसकी करें—
कौन सुलझायेगा झगड़े कौन होगा रहनुमा
कौन देगा मुश्तइल लोगोंको पैगामे-सकून
कौन अब लड़ते हुओंको गले से लगवायेगा
आलमे अरवाहमें तुझको अता हो शांती
है जहूरे गमजदाकी हकल-आलासे दुआ

—जहूर अहमद "जहूर"

नतमस्तक हैं देश

गांधी, तू था विश्वका शांति - रूप अवतार
तेरी वाणीने किया मानव-प्रेम-प्रसार
सरल हृदयसे बोलता तू जन-हितकी बात
कुटिल जनोंकी चाल थी, तेरे आगे मात

साधक चरखा - शक्तिका, तू गांधी वरवीर
शांति सैन्य संग्रामका, नेता निपुण सुधीर
तेरे सफल प्रयाससे हुआ देश आजाद
भारतकी स्वाधीनता तेरा कृपा-प्रसाद

सोऽहंका यह तत्व है जीव स्वयं शिव-रूप
सगुण ब्रह्म होकर खिला तेरा रूप अनूप
जब होता कर्त्तव्य-पथ पूरा तमसाच्छन्न
मौनी बन आसन जमा रहता सदा प्रसन्न

तेरी ही थी मंत्रणा तेरा ही था जोर
भारतवर्ष निहारता बस, तेरी ही ओर
कोटि-कोटि कल कंठसे निकला यही निनाद
घातकको धिक्कार है गांधी जिंदाबाद

राम-नामकी धुन लगा राम भजन लवलीन
प्रवचन करता प्रेमसे हो आसन आसीन
तेरी आज समाधिपर नत मस्तक सब देश
भू-मंडलमें रह सदा, कीर्ति-कथा अवशेष

—झाबरमल्ल शर्मा

तुम चले गये

तुम चले गये, जग कुछ भी बोल न पाया

तुम आये बनकर प्रथम प्रातकी लाली
तुमसे फूली जग-जीवन-तरुकी डाली
जन-गण-मन-मरुमें नूतनता भर आयी
भावोंके कण जागे, जागी हरियाली

इस अंधकारमें तुमने दीप जलाया।
तुम चले गये, जग कुछ भी बोल न पाया।

तुम एक अनूपम देवदूत बन आये
मानस-वीणाके टूटे तार मिलाये
अपनी विभूतिका अमर दान दे-देकर
युगसे मानवके सोये प्राण जगाये

तुमने दलितोंको सादर गले लगाया।
तुम चले गये, जग कुछ भी बोल न पाया।

तुम गये छोड़कर अपनी अमर कहानी
है अंतरिक्षमें गूँज रही तव वाणी
आजीवन तुमने जन-हितका तप साधा
उसकी वेदीपर ही कर दी कुर्बानी।

संदेश तुम्हारा कण-कणमें है छाया
तुम चले गये, जग कुछ भी बोल न पाया

—त्रिवेदी तपेशचंद्र

अस्त जगका सूर्य

आजका दिन अस्त हो जाता उदयसे पूर्व
तो न सुनते कर्ण–होता अस्त जगका सूर्य
हम न समझे, आँधियाँ चलने लगीं सहसा
हम न समझे, बदलियाँ घिरने लगीं सहसा

हम न समझे, मेघ-गर्जन हो रहा है क्यों
हम न समझे, तम उदासी ढो रहा है क्यों
मेघ रोया, किंतु हमको था न तब भी भान
आज युगकी वेदनाको चूम लेंगे प्राण

शोकका सागर उमड़कर छा गया जगपर
छू गयी बिजली हृदय, तन हो गया पत्थर
आजका दिन अस्त हो जाता उदयसे पूर्व
तो न सुनते कान, होता अस्त जगका सूर्य

—'भृंग' तुपकरी

बापू तुम्हें प्रणाम है

अमृत–पुत्र, इस देशके गौरव, पुण्य–श्लोक
आज अश्रु–तर्पण करुण करता है भूलोक
ज्योतिमय, तुमने दिया वह प्रकाशका दान
जिससे हममें जागरित अपनेपनका ज्ञान
हे विराट, हे युग–पुरुष, हे देवता उदार
श्रद्धांजलि है दे रहा तुमको यह संसार

—"भुवन"

नभने भर लिया आलोक

लप[illegible]ंसे च[illegible]णकी ज्योतिसे छूकर धराका प्रात
ले लो हे गगनके देव, मेरी वेदनाके फल
मेरी अर्चनाके फूल

गाथा [illegible]ने क्या राग, उस दिन मृत्यु-घनके द्वार
जीवनके रुके दो पाँव, धरतीकी डगरपर हार
उस क्षण सांझके तट मौन किरणोंकी मची जब लूट
नभने भर लिया आलोक, धरतीने तिमिरकी धूल
मेरी धूलमें ही देव, देकर सृष्टिका वरदान
उगता ही गया आलोक, लेकर धूमका अभियान

—द्विजेंद्र

दिवंगत बापू

टूट गया वह स्वप्न कि जो चालीस कोटि जनका जीवन-धन
लुटा दीन-सर्वस्व, निराश्रितका आश्रय, अंधोंका लोचन
खोयी थाती भूखे भिखमंगोंकी, दलितोंकी, पतितोंकी
हुआ अस्त रवि, विश्व-व्योमपर घोर भयंकर अंधकार घन

सिहरी दया, प्रकंपित करुणा, मानवता आक्रोश उठी कर
आँखें स्तब्ध, कण्ठ श्लथ, आनन वचन-हीन, कंपित अस्फुट स्वर
उर अवसन्न, अधीर खिन्न मन, आकुल संसृति, व्याकुल कण-कण
हैं विकल प्राण, अरमान विफल, चेतना-हीन जगके नारी-नर

छातीपर धर पत्थर, यह विश्वास किया—'बापू न रहे अब'
आह भरे उरने कराह कर श्वास लिया—'बापू न रहे अब'
जीवनसे, जड़-जंगमसे, जगतीसे तृण-तृणसे, कण-कणसे
आज विरक्त हृदयने उफ ! संन्यास लिया—'बापू न रहे अब'

'बापूका खून !' विश्व-विश्रुत भारतके नरकी पाप-कहानी
'बापूका खून !' घोर लज्जा उत्कट कलंककी अमिट निशानी
'बापूका खून !' हृदय यह आत्म-ग्लानि, घृणासे दबा जा रहा
'बापूका खून ! देख खौल है उठा असीम सिंधुका पानी
सत्य, अहिंसा, प्रेम पंथपर चलनेवाला संत, भिखारी
विश्व-विभूति त्याग, तप-सेवा-रत, उदार ज्ञानी आचारी
दुनियावालो, बोलो ऐसा देखा है इतिहास कहींका
रहे देखते लुटा हाय, मानवताका आदर्श पुजारी
आज अलभ्य, अलक्षित चरणोंमें अर्पित आँसूके दो कण
व्यथा-भारसे दबे हृदयकी यह सादर श्रद्धांजलि पावन
लो, स्वीकार करो नवीन युग-स्रष्टा, विश्व दिवंगत बापू
भारतके चालीस कोटि व्याकुल प्राणोंका यह नीराजन

—दिवाकर

हे युगाधार

प्रलय, विश्व-रवि अस्त, ध्वस्त जग, अंधकार
अम्बर, सागर, भू-कक्ष-कक्ष कटु दुर्निवार
तम-ग्रस्त व्यथित संसृति समस्त, पथ-भ्रष्ट नष्ट जग मोह त्रस्त
आलोक-पुंज शुचि प्रखर अस्त, नभ-धरा-धूलि-कण रुदन-व्यस्त
वज्राघाती मांकी छातीपर यह प्रहार
कल्पनातीत ब्रह्माण्ड-दुःख, दुस्सह अपार
राक्षसी काण्डपर इस निकृष्ट, रह गयी मूक यह निखिल सृष्टि
रवि रुका, हुई निस्तेज दृष्टि, सागर गरजा—धिक् अरे धृष्ट
निष्प्राण हुआ क्यों नहीं पतित पापावतार
जब महाप्रयाणपर पड़े हिंस्र दृग प्रथम बार
वह क्षण, वह पल कितना कराल, जागी जब दानव-दुष्ट ज्वाल
विकराल, विकट, उफ, महाकाल भी काँपा होगा उसी काल

जिसने प्रकाशके दिव्य पिंडका कर शिकार
भर दिया चतुर्दिशि निखिल विश्वमें तम अपार

हा बापू तेरा ज्योतिर्मुख, वह मुख जिसने हर दारुण दुःख
फैलाया जगमें करुणा-सुख लख हुआ नराधम क्यों न विमुख

क्यों द्रवित नहीं करुणावतार तुमको निहार
गोली-प्रहार करता मानव पशु बार-बार

जब बही रक्तकी शुद्ध धार, बापू तुमने निज कर सँभार
हत्यारेको कर नमस्कार, दी सीख विश्वको करो प्यार

वह राम-नाम तेरे पवित्र उरकी पुकार
क्या विश्व सुनेगा कभी हृदयके खोल द्वार

बीते हजार दो वर्ष बाद गूँजा भारतसे फिर निनाद
क्यों यह हिंसा ? क्यों यह विषाद, मानव-मानवका क्यों विवाद

भगवान बुद्ध, ईसा मसीह करुणावतार
साकार हुए तुझमें बापू पा दृढ़ अधार

गूँजा अम्बर-सागर-खगोल, गूँजा करुणाका मधुर बोल
दानवी-तुलापर दिया तोल मुट्ठी भरका निज तन अमोल

तन-मनसे सत्य-अहिंसाका कर शुचि प्रसार
तुमने लहरायी विश्व-तिमिरमें ज्योति-धार

अंतिम क्षणका जो हास भरा वह तव मुख था उल्लास भरा
क्या भूल सकेगी कभी धरा, वह प्रलय-घड़ीतक सदा हरा

'पापी न बुरा है हेय पाप' तेरी पुकार
दानवको मानव बना जीत लो दिखा प्यार

हे तपो मूर्त्ति, हे कर्मवीर, हे मानवताके धर्मवीर
मुट्ठी भरका तेरा शरीर, मनसा-वाचा था पूर्ण धीर

आपत्ति कालके हे माँझी, हे युगाधार
हे सत्य-अहिंसाकी पुकार, करुणा-गुहार

साक्षात शांतिकी मूर्ति दिव्य हे विश्व-प्यार
कर रहा तुम्हें मैं नमस्कार, जग नमस्कार

—देवनाथ पाण्डेय 'रसाल'

गांधी-निर्वाण

फटी न भू क्या, कँपा न अम्बर, गिरा न कोई नखत टूटकर
तपःपूत तनमें गांधीके जब कि गोलियां लगी छूटकर
झँपीं न क्या दिनकरकी आँखें हुईं न क्या तम-मग्न दिशाएँ
चूर-चूर क्या हुआ न हिमगिरि दग्ध-शुष्क जगकी सरिताएँ

खण्ड-खण्ड क्या हुआ न फटकर मानवताका वज्र-हृदय तब
किया गोलियोंने गांधीका तपःपूत तन छिन्न-नष्ट जब
जल न गयी दिल्लीकी धरती, जल न उठे सारे गृह-उपवन
वृद्ध तपस्वीके शरीरसे जब कि गिरे थे लाल रुधिर-कण

काँप उठा सुर-लोक नहीं क्या, त्रस्त हुआ नर-लोक नहीं क्या
डूब गया घन अंधकारमें त्रिभुवनका आलोक नहीं क्या
हिंसा-पिशाचिनी वह देखो, दबा रही दाढ़ोंमें निर्मम
विश्व-प्रेमकी पावन प्रतिमा जग-मैत्रीकी मूर्ति मनोरम

सत्य-अहिंसाकी किरणोंका अमृत-पुंज वह अस्त हो रहा
धर्म-नीतिका ज्योति-स्तंभ वह आज यकायक ध्वस्त हो रहा
लीन हुआ रे अमर लोकमें धर्म-युद्धका वह सेनानी
शत अन्यायोंका विरोधिनी मूक हुई वह निर्भय वाणी

राजनीतिमें अब न सुनायी देगा कभी सत्यका गर्जन
मिथ्याचार, दम्भ औ वंचन अब निर्लज्ज करेंगे नर्तन
मानव-पशु अब लोभ-घृणाको निर्भय न्याय-नीति घोषितकर
हृष्ट करेगा नग्नित तांडव विश्व-भुवनमें सभ्य कहाकर

डूब गया रे भारत-नभका प्रभा-पुञ्ज वह ज्ञात-सितारा
गौतमका अमिताभ, वंशधर ईसाका अनुजोपम प्यारा
दुखियोंका बापू करुणामय हरिजनका परिजन परित्राता
गत रे भारत-मुक्ति प्रदाता, नये राष्ट्रका पिता, विधाता

मांके काले कारागृहमें आजादीका दीप जलाकर
गत रे वीरव्रती वह सैनिक अक्षय प्राण-तैल निज भरकर
युग-युग गूँजेगा जगतीमें गांधीका पावन संदेश यह
युग-युग गूँजेगी भारतके कण-कणमें गांधीकी जय-जय

—देवराज

श्रद्धांजलि

उन्नति-गिरिका मार्ग दिखाकर स्वतंत्रताका देकर दान
गये स्वर्गको 'राम-राज्य'का लिये अधूरा ही अरमान
आज तुम्हारी सुधिमें तड़प उठी मानवता कर यश-गान
दानवताके हाथ तुम्हारा हाय हुआ दुःखमय अवसान
सत्य-अहिंसाके हित बापू, निज शोणितसे सींच स्वदेश
अमरपुरीमें गये कहो क्या देने निज अमृत संदेश
अमर पुरुष, ओ शांति दूत, अब करो शांतिसे तुम विश्राम
अपना रक्त बहाकर भी हम पूर्ण करेंगे तेरा काम

—देव शर्मा

बापूके प्रति

तेरे मातममें शामिल हैं जमीनो-आसमाँ वाले
अहिंसाके पुजारी शोगमें हैं दो जहाँ वाले
तेरा अरमान पूरा होगा, ऐ अमनो-अमाँ वाले
तेरे झंडेके नीचे आयेंगे सारे जहाँ वाले
मेरे बूढ़े बहादुर, इस बुढ़ापेमें जवाँमर्दी
निशाँ गोलीके सीनेपर हैं गोलीके निशाँ वाले
निशाँ हैं गोलियोंके या खिले हैं फूल सीनेपर
गुलिस्ताँ साथ लेकर जा रहे हैं गुलसिताँ वाले
जबाँ आँखोंने ले ली, आँसुओंने ताबे गोयाई
तुम्हारे शोगमें चुपचाप बैठे हैं जुबाँ वाले
मेरे गांधी, जमींवालोंने तेरी कद्र जब कम की
उठाकर ले गये तुझको जमींसे आसमाँ वाले
उसीको मार डाला जिसने सर ऊँचे किये सबके
न क्यों गैरतसे सर नीचा करें हिन्दोस्ताँ वाले

पहुँचता धूमसे मंजिल पै अपना कारवाँ अबतक
अगर दुश्मन न होते कारवाँके कारवाँ वाले

सुनेगा ऐ 'नजीर' अब कौन मजलूमोंकी फरियादें
फुगाँ लेकर कहाँ जायेंगे अब आहो फुगाँ वाले

—'नजीर' बनारसी

श्रद्धांजलि

फिर न लौटनेवाले राही, तुम्हें हमारा राम-राम है

तुम चल दिये छोड़कर अपने पीछे गोधूलीकी वेला
तुम चल दिये छोड़कर अपने पीछे अभिशापोंका मेला
बापू, आज तुम्हारी सुधिमें रोती भारत मा अभागिनी
तुम चल दिये छोड़कर सूने घरमें जलता दीप अकेला
अँधकारसे जूझ प्रकाशित होना कितना कठिन काम है
दिन व्याकुल हो डूब गया है, रात मौतसे भी काली है
प्रतिहिंसाकी खूनी लपटों-सी वह फूट रही लाली है
आज लाजसे झुका सदाके लिए हिमालयका सिर नीचे
सिसक रहा सेगाँव कि उसके बापूकी कुटिया खाली है
कोटि कोटि कंठोंमें प्रतिक्षण गूँज रहा चिर-अमृत नाम है
नभने उन चरणोंकी पूजामें तारोंके दीप जलाये
धरती माताने उन चरणोंमें आँसूके फूल चढ़ाये
राम, तुम्हारा नाम सत्य हो गया कि सत्यानाश हो गया
लहर-लहरने हर-हर स्वरमें महामरणके गीत सुनाये
कोटि-कोटि प्राणोंका बापू, ग्रहण करो अंतिम प्रणाम है
फिर न लौटनेवाले राही, तुम्हें हमारा राम-राम है

—नर्मदेश्वर उपाध्याय

गये महात्मन

गये महात्मन् अल्पबुद्धिके आघातोंको सहकर
हतचेतन हम समझ न पाये परमात्मन्‌की माया
हेतु और कारण क्या थे उस आस्तिककी हत्याके
परम भागवत्‌ने यों तुच्छ करोंसे शिवपद पाया

क्षमा करो प्रभु, नव भारतको, भारत है हत्यारा
खलस्नात हो जली यहाँ उस महापुरुषकी काया
वेद-शास्त्र-उपनिषद-पुराणोंकी भू ग्लानिमग्न है
कृपाप्रवण हो भारतपर द्यौ-अंतरिक्षकी छाया

हमने कभी न पहचाना बापूकी गुरु गरिमाको
केवल यह जाना है कैसा था बापूका जाना
रहना अब न यहाँ भारतमें वरदहस्त नेताका
हवा और पानी, सूरज औ धरतीका छिन जाना

अग्नि-हंस उड़ गया, चिता बुझ गयी अगरु चंदनकी
भस्म हो चुकी भस्मकाम काया भी राष्ट्रपिताकी
अब न देहगत आत्मा उनकी, अब न कंठगत वाणी
रही न सीमित ज्योतिपिण्डमें द्युति भारत-सविताकी

—नरेन्द्र शर्मा

बन्दना

बंदनाके गीत गीले
ध्रोणियाँ हिचकी भरीं औ सरितके स्वर भी लचीले

ध्वंसका उतरा प्रथम रथ साँझ यमुनाके किनारे
तीन, यम हुंकार सुन मुरझे अमृतके सिंधु सारे
नील पड़ते जा रहे थे धूप लीपे खेत आँगन
नाश आया आँधियाँ बन, बंदनाके गीत गीले

शून्य वृन्दावन हुआ, ओ गगनके अक्रूर जा रे
सृष्टि संवत सूर्य डूबा, साँझ नीली, प्रात पीले
वह तुम्हारी अहिंसा औ' ऋत-भराकी आर्ष वाणी
मंत्र-सी हर देशको जन-कंठकी अपनी कहानी
थे भरे वे नयन दो उस लोककी परछाइयोंसे
गगनकी अमराइयोंसे, वेदनाके गीत गीले
सत्यके वे यक्ष, जलती भूमिको हे सोम पानी
साथ युग-शिशु चल न पाता समय-पर्वतपर अकेले
दिवस-निशिकी जाह्नवी-जमुना तुम्हारे दो चरण बन
हो गया वह तीर्थराज सदेह इस युग लोक-कारन
यज्ञ जीवन, साँस समिधा, यज्ञ-यूपों-सी भुजाएँ
दिग्विजयकी कामनाएँ, वेदनाके गीत गीले
चरण रंग बिखेरते औ अधर रचते सूक्ति अनगिन
अमर हे आकाशसे सुन, अश्रु लतिकाके छबीले
इस विराट कुटुम्बकी छविमय नवल कर रूप-रचना
समय राक्षसकी पलकमें रच दिया युग स्वर्ग सपना
जाग जन-धृतराष्ट्र, पूरी हो चुकी भारत-कथा रे
युद्ध-तक्षक भी थका रे, वेदनाके गीत गीले
युग सुदामा अब नहीं कंचन बना उपवास तपना
स्वर्ग गलियाँ घेरते लो, चरण अमृत मेघ नीले

—नरेशकुमार मेहता

बापू

बापू,
जिस बर्बरने
कल किया तुम्हारा खून पिता
वह नहीं मराठा हिन्दू है
वह नहीं मूर्ख या पागल है
वह प्रहरी स्थिर-स्वार्थोंका है
वह जागरूक वह सावधान
वह मानवताका महाशत्रु
वह हिरणकशिपु
वह अहिरावण
वह दशकन्धर
वह सहस्रबाहु
वह मनुष्यताके पूर्णचन्द्रका सर्वग्रासी
महाराहु
हम समझ गये
चटसे निकाल पिस्तौल
तुम्हारे ऊपर कल
वह दाग गया गोलियाँ कौन
हे परमपिता, हे महामौन
हे महाप्राण, किसने तेरी अन्तिम साँसें
बरबस छीनीं भारत मासे
हम समझ गये
जो कहते हैं उसको पागल
वह झोंक रहे हैं धूल हमारी आंखोंमें
वह नहीं चाहते परम क्षुब्ध जनता
घरसे बाहर निकले
हो जाय ध्वस्त
इन सम्प्रदायवादी दैत्योंके विकट खोह
वह नहीं चाहते, पिता तुम्हारा श्राद्ध
ओह
भूखे रहकर
गंगामें घुटने भर धँसकर
हे वृद्ध पितामह
तिल-जलसे
तर्पण करके
हम तुम्हें नहीं ठग सकते हैं
यह अपनेको ठगना होगा
शैतान आ गया रह-रह हमको भरमाने
अब खाल ओढ़कर तेरी सत्य-अहिंसाकी
एकता और मानवताके
इन महाशत्रुओंकी न दाल गलने देंगे
हम नहीं एक चलने देंगे
यह शक्ति और समताकी तेरी दीपशिखा
बुझने न पायेगी क्षणभर भी
परिणत होगी आलोकस्तम्भमें कल-परसों
मैदानोंके काँटे चुन-चुन
पथके रोड़ोंको हटा-हटा
तेरे उन अगणित स्वप्नोंको
हम
रूप और आकृति देंगे
हम कोटि-कोटि
तेरी औरस संतान, पिता

—नागार्जुन

देवता खोकर

आज खड़ा जग देवालयके पास देवता अपना खोकर

जिन चरणोंकी आहट पाकर युग-युगसे सोया युग जागा
पा आलोक, दासताका धरतीपर फैला जड़ तम भागा
तीनों लोक और सातों सागरको जिन हाथोंने बाँधा
कात-कातकर अपने हाथों उज्ज्वल सत्य-प्रेमका धागा

जिसकी जय सुन महा नींदसे उठा जागरण सदियों सोकर

लोलुपताके महा घिनौने कीड़े जब थे लगे देशमें
भाव, भावनामें, गौरवमें, भाषा, भूषा और वेशमें
अमृत और हलाहल लेकर बढ़ा तिमिरमें एकाकी जो
जब कराहती रही मूक मानवता जगकी, घोर क्लेशमें

तब उस तपी महा मानवने ज्योति जगा दी दीपक होकर

जीवनके सौ-सौ प्रश्नोंका सुखमय उत्तर बना एक ही
झोपड़ियों, महलोंके पथपर गति धुल मंथर बना एक ही
मंत्र 'विश्व बंधुत्व' और 'वसुधैव कुटुंबकं' पावन जिसका
त्रस्त करोड़ों मानवके सत्यं, शिवं, सुंदर बना एक ही

इस दुनिया-सी कभी न लायी दुनियाने दुनियामें ढोकर

नवयुगकी वह नाव कि जिसके लिए आज मँझधार विकल है
जनताका वह बाँध कि जिसके लिए आज आधार विकल है
वह तेजोमय रूप अहिंसाका जादूगर विश्व शांतिका
जनगणका वह भाव कि जिसके लिए आज संसार विकल है

हँसते आया घर स्वराज्य, आयेगा 'रामराज्य' रो-रोकर

—नारायणलाल कटेरियार

बापू मर कर अमर हो गये

भेद–भावका भूत भगाकर
सबको अपने गले लगाकर
मानवताके अन्तरकी तुम सारी कालिख, मैल धो गये
हिन्दू मुसलमान ईसाई
सब आपसमें भाई भाई
जन-जनके हृदयांगनमें यह, विमल प्रेमका बीज बो गये
प्रेम–मूर्ति तुम चिर अविनाशी
भाग्यहीन हम भारतवासी
सदियोंमे बंधन टूटे जब, हम जागे तो तुम्हीं सो गये
बापू मरकर अमर हो गये

——निरंकारदेव 'सेवक'

कैसे श्रद्धांजलि दूँ तुमको

भरा हुआ है हृदय और असमंजसमय है वाणी
कैसे श्रद्धांजलि दूँ तुमको ओ निस्पृह बलिदानी
तुमको श्रद्धांजलि देनेका अधिकारी जग सारा
किंतु नहीं हूँ मैं ही केवल, मैं हिंदू हत्यारा
वह हिंदू जो राष्ट्रपिताके उरमें मारे गोली
वह हिंदू जो हिंसासे कलुषित कर ले निज बोली
वह हिंदू जो मानवताका मान-महत्त्व घटा दे
वह हिंदू जो हरे-भरे उपवनमें आग लगा दे
वह हिंदू जो अपने हाथों अपना दीप बुझा दे
वह हिंदू जो अपनी गरिमा अपने आप मिटा दे
कैसे श्रद्धांजलि दे तुमको कैसे वह जय बोले
ग्लानि-गलित उसका अंतरतम कैसे वह मुख खोले

उसकी आँखोंके आगे तो अंधकार है छाया
हत्यारा बन स्वयं सोचता यह क्या प्रभुकी माया
बापू, तुम तो चले गये कर गोद धराकी सूनी
किंतु व्यथा हो गयी अभागिन भारत माकी दूनी

हम सब तो कपूत हैं केवल तुम सपूत थे बापू
हम सब तो अपवित्र अकेले तुम्हीं पूत थे बापू
यही सोचकर भारत माता बिलख-बिलख कर रोती
अपना गौरवसे उज्ज्वल मुख अश्रु-धारसे धोती

उसकी व्यथा देखकर लगता अब न जियेगी, बापू
बहुत पी चुकी अब वियोगका विष न पियेगी, बापू
एक तुम्हारे ही आश्रयसे सब अभाव थी भूली
सब कुछ खोकर भी तुमको पा वह रंकिनि थी फूली

किंतु आज वह असहाया, निरुपाया बन बैठी है
चेतनकी जननी जड़ताकी जाया बन बैठी है
हत्या नहीं तुम्हारी बापू, मरण हमारा है यह
असमयमें ही पड़ा कुपथपर चरण हमारा है यह

उदय हुआ है यह अपने गत जन्मोंके पापोंका
स्वयं भोगते हैं हम फल यह युग-युगके शापोंका
मृत्यु तुम्हारी प्रश्न-चिह्न बनकर आयी है सम्मुख
जिससे हास अश्रुमें बदला परिवर्तित दुःखमें सुख

और नाशकी काली बदली विश्व-गगनपर छायी
निकट भविष्यतमें ही देती होती प्रलय दिखायी
तुम हो दूर, विनय है इतनी ओ सुरपुरके वासी
कभी न आना इधर पुकारें यदि ये भारतवासी

तुम न तनिक भी चिंता करना इन कृतघ्न नंगोंकी
मत सुनना तुम करुण कराहें पापी भिखमंगोंकी

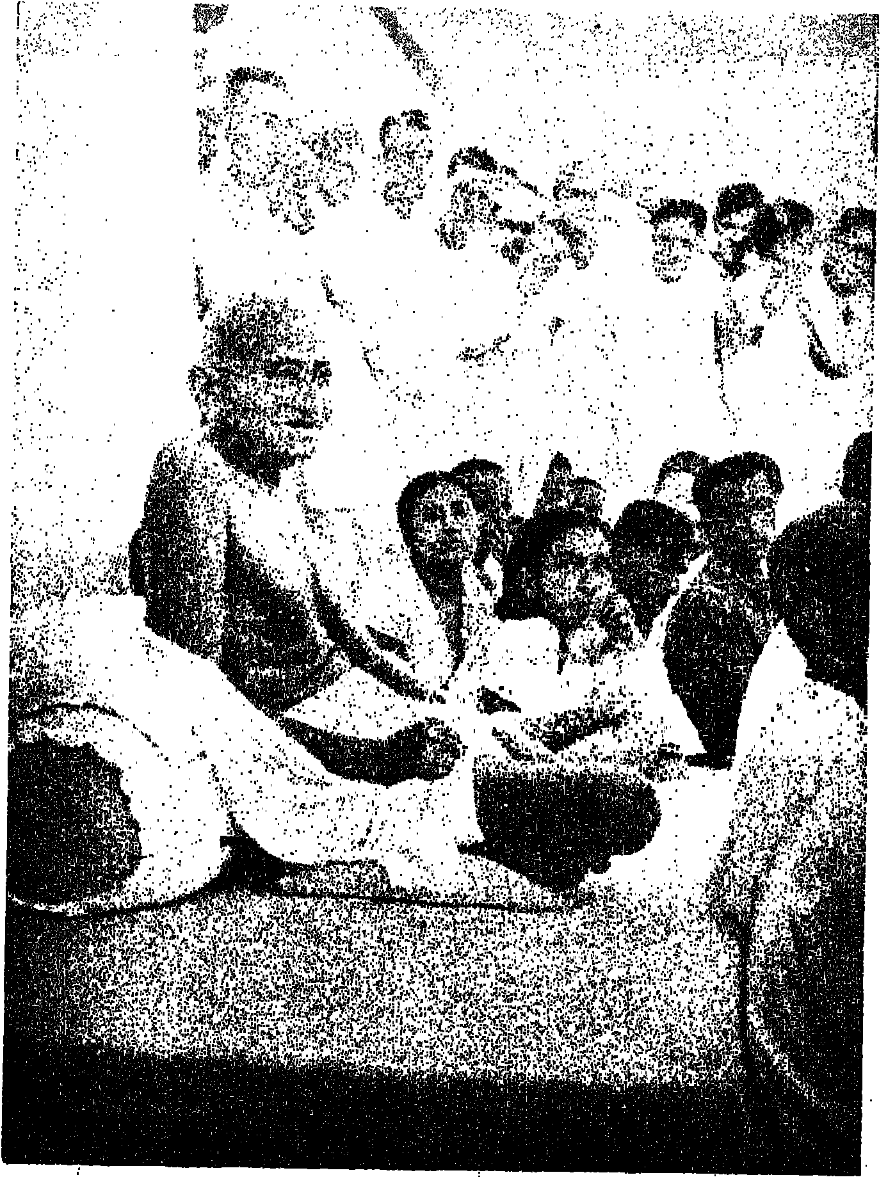
ये विषकीट न कर सकते हैं अमृतका मूल्यांकन
अमृत-पुत्र, इनके हित करना फिर न मृत्यु-आलिंगन

सतत साधनामें रत रहकर उज्ज्वल मानवताकी
यदि करना ही चाहो तुम सेवा पीड़ित जनताकी
तो वधिकोंसे दूर किसी दूसरे राष्ट्रमें यतिवर
होना तुम अवतरित यही मुनि-दुर्लभ मनुज रूप धर

—पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'

अन्तिम पुकार

वह मृत्यु नहीं, थी प्यार भरी अंतिम पुकार
वह प्यार कि जिसमें मानवता थी समासीन
जिसके चरणोंपर थी मानव-जड़ता विलीन
जगके शोषण, पाखंड और शत दुराचार
जिसके पदतलपर हो जाते हैं अर्थ-हीन
जिस कुसुम-दंडसे उद्धत होता है शोषित
झुक जाते शत-शत मेरु शिखर भी हत-गर्वित
यह प्यार कि जो ला दे पत्थरमें भी पानी
जिसको छूकर सब हर्ष-हीन होते हर्षित
जिसको सुनकर
हा, कोटि-कोटि नयनोंसे निकली अश्रुधार
वह मृत्यु नहीं, थी प्यार भरी अंतिम पुकार
जिसको सुनकर
ये सूर्य-चंद्र-नक्षत्र हुए सब विभा-हीन
आँसू टपकाये ओस, मेदिनी हुई दीन
इस भीम व्योममें उठा हाय! व्याकुल समीर



तुम्हें प्रसन्न देख जग होता था प्रसन्न होती थी सृष्टि ।
सुधा वृष्टि होजाती थी जिधर तुम्हारी जाती दृष्टि ।।



बापू, जिधर तुम्हारे पड़ते चरण-युगल मंगलमय।
निखिल सृष्टि यह कह उठती थी उधर तुम्हारी जय जय ॥

तरु-तृणसे कण-कणसे रोदनका उठा शोर
गा उठी मरसिया हवा, विकल हो गये प्राण
बापूके मुखसे निकला जब 'हे राम राम'
'हे राम राम !' मानवता तो हो गयी दीन
'हे राम राम !' भारती हो गये दिशा-हीन
वह रक्त-धार
बापूकी छातीसे निकली कह "प्यार—प्यार"
वह मृत्यु नहीं, थी प्यार भरी अंतिम पुकार
कह उठा प्यार—
हिंदू औ मुस्लिम सभी एक भाई भाई
ये बौद्ध जैन पारसी और ये ईसाई
मानवता सबका सार, धर्म है सब समान
वह धर्म नहीं सबको करता जो हीन जान
तू ही ईश्वर, तू ही अल्ला, बस भिन्न नाम
तू सबको सन्मति दे समान है राम राम
अंतिम 'प्रणाम' दे गये जगतको प्रेम पूत
घातकको भी दे गये क्षमा हे प्रेम दूत
हे प्रेम-पुंज
तेरे कुसुमोंके घनसे जो भी हुआ बिद्ध
वह झुका चरणपर तेरे कहकर प्यार—प्यार
वह मृत्यु नहीं, थी प्यार भरी अंतिम पुकार

—प्रफुल्लचन्द्र पटट्नायक

ततो वै सः

भारतका अंतर आँसू बन बहा-बहा

सप्त सरितका यह मंगल जल ले जाता है फूल तुम्हारे
वैष्णव, वज्र कठोर सुकोमल सागरको करने मधु प्यारे

कविने कहा जरा-सा लेकिन रहा बहुत कुछ बिना कहा

सुरभि तुम्हारे यश-सनेहकी दिशा-दिशाका बनती चंदन
कोटि मनो, शत-लक्ष गेहकी लो यह मूक, व्यथामय वंदन

चिता नहीं उस दिन भारतका पुण्य-प्रताप दहा

यह बर्बर फासिस्त दरिंदे यह कायर, यह खूके प्यासे
कब होंगे पापी शरमिंदे कब कह पायेंगे जनतासे

हम यह—'लायक हैं वारिसके, पिता रहा न जहाँ

पर तुमने कब हम-से दुर्बल शिष्योंकी की परवा, तनहा
चले गये स्थिर मति गति केवल, जहाँ असतने सत्य ग्रहा

तुम्हें एक अंतर्निनादने कहा—'ततो वै सः'

—प्रभाकर माचवे

राष्ट्रपिता

मरण हमारे राष्ट्र-पिताका, झुकी हमारी राष्ट्र-पताका
कोटि-कोटिका मरण हुआ है, यह गांधीका मरण नहीं है

हिला हिमालय, सागर डोले, डोले आसन बर्बरताके
यह विश्वास नहीं होता है, अब वे विप्लव-चरण नहीं हैं

मानवताकी लाश पड़ी है, कौवे-गीध नोच खायेंगे
इस जघन्य पैशाचिकताको ढकनेका आवरण नहीं है

महाराष्ट्रका स्वप्न, प्रकट है धर्मराजकी मृगमरीचिका
ओ स्वार्थान्ध, कुचक्र खुला है, अब कोई आवरण नहीं है
धधक उठी मरघटकी ज्वाला, जली करुण कुसुमोंकी माला
सच है, अब प्रचंड ज्वाला है, वह करुणाकी किरण नहीं है

—ब्रह्मदत्त दीक्षित 'ललाम'

ज्योतिने पायी अमरता

ज्योतिने पायी अमरता, दीपने निर्वाण
आज पाया बिंदुने नव सिंधु-रूप महान
मूक होकर कोटि कंठोंमें समाया स्वर तुम्हारा
मिल गया मँझधारमें ही कुशल नाविकको किनारा
आज क्षणके साथ युगकी हो गयी पहचान
राष्ट्रके शवमें किया था प्राणका संचार तुमने
स्नायुओमें फिर प्रवाहित की रुधिरकी धार तुमने
धूलिको पद-रज बना तुमने दिया सम्मान
सत्यका ध्रुव ध्येय-पथ तुमने अहिंसाको दिखाया
क्षितिज बन उन्नत गगनको भूमिपर तुमने झुकाया
विजयका तुमने विफलतासे किया निर्माण
दे तुम्हें अंजलि हुए हैं अश्रु जगके आज पावन
मुक्त हो तुम, किंतु दृढ़तर है हमारे भक्ति बंधन
मूर्ति खोयी, पर उपासक पा गया भगवान
आज हिंसाके कठिन आघातसे अक्षय हुए तुम
शरण देकर मरणको भी आज मृत्युञ्जय हुए तुम
देशके हित आज तुमने कर लिया विष पान

—बालकृष्ण राव

संसारमें गांधी तो अमर होके रहेगा

संसारमें गांधी तो अमर होके रहेगा
किस शानसे दुनियासे सरे शाम सिधारा
लो डूब गया देशकी किस्मतका सितारा
गांधीको तो मरना था ब हर तौर गवारा
हमदर्दको क्या सोचके बेदर्दने मारा
आकाशमें निकले हैं जो रोते हुए तारे
गांधीकी चिता जलती है जमुनाके किनारे

फिरता रहा दर-दर वो मुहब्बतका भिखारी
दुनिया उसे कहती थी अहिंसाका पुजारी
उपदेश इसी बातका हर साँस पै जारी
ले-देके उसे देशकी चिंता रही भारी
क्या उसकी तरह कोई भला काम करेगा
दुनियामें, जमानेमें यूं ही नाम करेगा

आज उसके लिए फूटके रोता है जमाना
मशहूर हुआ चारो तरफ ऐसा फिसाना
बापूके लिए मौतने ढूंढा ये बहाना
दिल्लीमें बनाया गया गोलीका निशाना
मरनेका बहुत उसके असर होके रहेगा
संसारमें गांधी तो अमर होके रहेगा

इल्जाम किसीपर कभी धरते नहीं देखा
सच बातपर उसको कहीं डरते नहीं देखा
नफरतसे भी नफरत कभी करते नहीं देखा
यों हमने किसी औरको मरते नहीं देखा
देता था मुहब्बतका वह पैगाम हमेशा
दुनियाकी भलाईसे रहा काम हमेशा

कुदरतसे मिला था उसे क्या दर्द-भरा दिल
वह देख न सकता था कि 'बिस्मिल' भी हो बिस्मिल
मुश्किलको समझता ही न था वह कभी मुश्किल
सर उसको झुकाते थे जो दुनियाके थे काबिल
संसारमें ऐसा भी कोई त्याग करेगा
जीता है, वह हरगिज न मरा है, न मरेगा

—'बिस्मिल' इलाहाबादी

महाभिनिष्क्रमण

हत्यारा कहता है 'मुझको नहीं जरा भी दुख है'
वज्रपातपर, महाप्रलयके विश्व जब कि सम्मुख है
जरा-मरणसे मुक्त पुरुषको कोई क्या मारेगा
विजय-घोषके निकट शोकनत मरण स्वयं हारेगा
मानवता घायल लथपथ है आज मेदिनी डोली
मानो बापूकी छातीमें नहीं लगी है गोली
श्वास-श्वासमें अमर हो गयी वह प्रकाशकी रेखा
जब कि अमरताको चरणोंमें हँस-हँस लुटते देखा
नोआखाली औ' बिहार, गढ़मुक्तेश्वरकी बातें
कौन भूल सकता है दिल्लीके वे दिन, वे रातें
हम सबनें अपने हाथों क्या उनका वध न किया है
प्रायश्चित्त-वेदीपर मृत्युंजय बलिदान दिया है
'मुझे सवा सौ बरस जगतमें जीना, कुछ करना है'
उन आदर्शोंपर हम सबको चलना या मरना है
वह दधीचि दे गया हड्डियाँ, क्रूर असुरता कर दो
संप्रदायके विषको धोकर स्नेह-सुधाको भर दो

—भगवन्तशरण जौहरी

रो ! मनुष्य रो

रो ! मनुष्य रो
जब पितापर हाथ हाय ! पुत्रका उठा
मानवी कृतघ्नतासे व्योम कँप उठा
ज्योति वंचिता जली दिगंत लालिमा
हिन्दुत्व भालपर लगी कलंक कालिमा
कोटि नयन नीरसे न धुल सकेगी जो
रो ! मनुष्य रो

बापू नहीं, यह विश्वके भविष्यका निधन
मनुष्यने मनुष्यताका कर दिया हनन
आज तम निगल गया हा ! पूर्णचन्द्रको
एक मौन पी गयी महा समुद्रको
रो रही मनुष्यता है टूक टूक हो
रो ! मनुष्य रो

हे रूपवान् सत्य ! विश्वप्रेम मूर्तिमान्
सद्धर्मके प्रतीक ! क्रान्ति-दूत हे महान्
आत्म रूप नित्य साथ रह अजर अमर
शांति-पथ-प्रदर्शिका दे ज्योति तू प्रखर
शांत पाप और शांत रक्तपात हो
रो ! मनुष्य रो

—भंडारी गणपति चन्द्र

वह अंतिम प्रार्थना

भक्त रह गये खड़े, मौन हो गये पुजारी
बंद हुई आरती, मूर्ति छिप गयी तिमिरमें
बापू, आज तुम्हारी अंतिम सांध्य-प्रार्थना
गूँज उठी आखिर उस दूर महामंदिरमें

ज्योति मंद हो चली, घटाओंने आ घेरा
साँझ हुई, सूरज डूबा, छा गया अँधेरा
मौन रहीं, गंगा-जमुनाका जिगर जल गया
क्षुब्ध हिमालयका पत्थरका हृदय गल गया

झुका तिरंगा, रणभेरीकी गूँज सो गयी
हिन्द महासागरकी लहरें शांत हो गयी
टूट गया निर्मल नभका उज्ज्वल ध्रुव तारा
फूट गया अंधे भारतका भाग्य सितारा

अब पटेलकी नैयाका पतवार छिन गया
नेहरू हुए निराश कि खेवनहार छिन गया
भारत माके उरका प्यार–दुलार छिन गया
मानवताके मस्तकका शृंगार छिन गया

हमें ढूँढ़कर लानेवाला कहाँ खो गया
हाय जगानेवाला हमको कहाँ सो गया

आज राष्ट्रका मुकुट टूट कर उड़ा गगनमें
कोटि कोटि करुणार्द्र जनोंके मन छले गये
एक कमीने पागलकी काली हरकतसे
आज करोड़ों बच्चोंके बापू चले गये

हत्यारे, तू क्या बापूको मार सकेगा
बापू क्या इन बंदूकोंसे हार सकेगा
गोलीसे गांधी मरता, मूरख अनजाने
अमर ज्योति जग उठी बुझाओ तो हम जानें

जिसने अपने शब्दोंसे बंदूकें तोड़ीं
आज वही हँसकर गोलीका वार बन गया
जिसने जीवन भर सिखलायी हमें अहिंसा
आज वही हिंसाके उरका हार बन गया

कोटि कोटि कंठोंमें गूँजे नाम तुम्हारा
कोटि कोटि युगतक जीवित है प्राण तुम्हारा
जबतक खड़ा हिमालय, बहती गंगा धारा
तबतक अमर रहेगा बापू, नाम तुम्हारा

—भरत व्यास

हो गया यह विश्व सूना

गिर पड़ी बिजली कड़ककर
काँपता आकाश थर-थर
चल बसा जगसे, रहा जो
आप ही अपना नमूना
हो गया यह विश्व सूना

छिप गयी जग-ज्योति सुन्दर
छिन गयी छवि, तम गया भर
रो रहा संतप्त जगका
चिर विकल प्रत्येक कोना
हो गया यह विश्व सूना

हो गया छवि - हीन भारत
आत्म-प्राण विहीन भारत
खो गया माके हृदयका
लाड़ला मोहन सलोना
हो गया यह विश्व सूना

खो गयी गरिमा गगनकी
खो गयी प्रतिमा भुवनकी
खो गयी भौतिक अनोखी
सृष्टिका मनहर नगीना
हो गया यह विश्व सूना

—भागवत मिश्र



श्रद्धांजलि

तुम अमर, चिरन्तन, चिर जीवन
तुमको न कभी छू सकते हैं चिरकाल प्रबल, ये जन्म-मरण
संदेश अहिंसाका लेकर
तुम ज्योति-रूप उतरे भूपर
शत कोटि कोटि प्राणोंमें सब भर गया शक्तिका संजीवन
तम अनय दुर्ग ढह टूट पड़ा
यह आंदोलित हो उठी धरा
हो गया निमिष भरके भीतर ही इन्कलाब, युग-परिवर्तन
तुम खोल गये जगके बंधन
बापू, तुम जीवित हो हर क्षण
तुमको न कभी छू सकते हैं चिरकाल प्रबल, ये जन्म-मरण
हे अमर चिरन्तन, चिर जीवन

——मदनगोपाल 'अरविन्द'

भगवान लुट गया

आज मनुजता मूक हुई, उसका जीवित भगवान लुट गया
पाकर जिसे आजतक हम सदियोंका दारुण दुख थे भूले
जिसके रहनेसे ही तो हम आशाके सपनोंमें झूले
कितने तपके बाद युगोंका मिला अभय वरदान लुट गया
देकर अमृत दान हमें जो स्वयं हलाहल पान कर गया
सदियोंके चिर निद्रित जीवनमें जो नूतन गान भर गया
अधरोंपर आनेसे पहले ही अंतरका गान लुट गया
आज कहूँ क्या अपने मनकी, धरा और आकाश मूक हैं
रहा और कहनेका क्या अब युग-युगका इतिहास मूक है
आज मनुजने सब कुछ खोया जगका नव. निर्माण लुट गया

——मदनलाल नकफोफा

अवतार चल बसा

पहली गोली लगी कि धू-धू सारा देश हो गया काला
लगी दूसरी, धधक धधक धक जलती है छातीमें ज्वाला
हत्यारे ! मत मार तीसरी, कंठ बंद, अब कह न सकेंगे
क्या हिन्दू-मुस्लिम-ईसाई एक देशमें रह न सकेंगे
वसुधासे विश्वास चल बसा, प्रेम चल बसा, प्यार चल बसा
तुम चल बसे नहीं ऐ बापू, नवयुगसे अवतार चल बसा

ऊपरसे आकाश धँस गया, धरतीका आधार धँस गया
ध्वंस ध्वंस विध्वंस हाय रे, बीच समरमें देश फँस गया
दुर्दिनमें तकदीर हमारी कैसे छिपकर वार कर गयी
ऐसी गोली लगी कलेजे कोटि-कोटिके पार कर गयी
आज देश निष्प्राण, हमारा राष्ट्र-तेज साकार चल बसा
तुम चल बसे, नहीं ऐ बापू, नवयुगसे अवतार चल बसा

डहक-डहक हिन्दू रोता है, सिसक-सिसक उठता ईसाई
कसक-कसक मुस्लिम रोता है, अब अनाथ है भाई-भाई
सागरकी लहरें रोती हैं, पर्वतका पाषाण रो उठा
सिर धुनती मानवता रोती सतयुगका श्रृंगार चल बसा
तुम चल बसे नहीं ऐ बापू, नवयुगसे अवतार चल बसा

—'मधुर'



हे शान्ति दूत

हे शांति दूत, हे चिर महान, भारत माताके महाप्राण
तुम भरत-सदृश भारत गौरव, हे भूत, भविष्यत, वर्तमान
हे भारत माके भाल-बिंदु, हे भारत माके चिर सुहाग
हे ज्ञान-सदृश-विज्ञान सदृश, हे राग-सदृश पर हे विराग
उत्तुंग हिमालय-सदृश अचल, तुम सृष्टि सदृश हो चिर चेतन
तुम महा उदधिसे थे गँभीर, हे भारतीय जनताके मन
तुममें स्वदेशका प्यार भरा, तुम परम अहिंसावादी थे
लाखों दुःखियोंका जो आश्रय तुम दुग्ध-धवल वह खादी थे
तुम थे मोहन, तुम रामचन्द्र, तुमसे सहिष्णुता थी हारी
क्या तुम द्वापरके थे मोहन, जिनको गीता थी अति प्यारी
निज करमें जब लकुटी लेकर, तुम चलते थे डगमग-डगमग
तब सारी सृष्टि सिहर उठती, डगमग डगमग डगमग डगमग
है सदा तुम्हारा जन्म-दिवस, हे मुकुट-रहित सम्राट प्रवर
है यही प्रार्थना ईश्वरसे, तुम आत्मासे हो अजर अमर

—मुकुन्ददेव शर्मा

अँधेरा छा गया

तेरे जाते ही जहाँमें एक अँधेरा छा गया
अब नजर आता नहीं दुनियामें तुझ-सा बाकमाल
तू वो दीपक है जो दुनियामें कभी बुझता नहीं
आज भी बाकी है तेरी रोशनी ये लाजवाल
हिंदका दुनियामें तूने नाम रौशन कर दिया
तू हि फख़्रे-एशिया है तेरी हस्ती बेमिसाल

—मुमताज अहमद खाँ

बापू

इस पापमयी पृथिवीपर पावनतासे
इस असत बीच सत, तममें उज्ज्वलता-से
घनघोर घृणामें रहे मञ्जु ममतासे
तुम कलह विषमता मध्य शांति-समतासे

तुम द्वेष बीच थे प्रेम-सुधा विष-वनमें
तुम आश्वासन-से व्यथित विश्वके मनमें
तुम अंतरतमकी टेर भ्रान्त जगतीको
तुम मंगल विमल विवेक विनाश व्रतीको

शापित जनको वरदान-सदृश तुम आये
पद-दलितोंके उत्थान सजीव सुहाये
तुम मूक हृदयकी बने बलवती वाणी
मानवताकी मृदु मूर्ति परम कल्याणी

सात्विक जीवनके धनी, सत्यके साधक
नर-वीर-अहिंसा व्रती, धर्म-आराधक
तुमने मानवकी सहज मूर्ति पहिचानी
जन-जनके उरमें व्याप्त आत्मगति जानी

है यही सत्य, जड़ताके बंधन नश्वर
है यही पुण्य, पाशोंमें पापोंका स्वर
ले यही टेक तकली चल पड़ी तुम्हारी
जिसकी धारोंमें बही दीनता सारी

ले यही भाव सत्याग्रहका रण रोपा
हिल गया विदेशी हृदय, कोप-दल लोपा
स्वातंत्र्य-समरके ओ अनुपम सेनानी
ले सत्य-अहिंसा शस्त्र समर रति ठानी

इस लोकोत्तर पथपर चल तुम जय लाये
सदियोंके शोषितने स्वराज्य फल पाये
फिर विश्व बीच निज केतु तिरंगा फहरा
चमका फिर भारत-शीश किरीट सुनहरा

जननीको दे स्वातंत्र्य, जातिको जीवन
तुम अमर कृतात्मा सफल धरे मानव तन
पर हाय, हाय, हतभाग्य हमारा कैसा
पापीसे पापी प्राण न होगा ऐसा

जिसने शोणितकी होली तुमसे खेली
अपने ही ऊपर आप आपदा झेली
अपने हाथों सर्वस्व लुटाया हमने
ज्वालामें सुरभित सुमन जलाया हमने

हमने अपना वरदान कुचल डाला हा
हमने अपना सौभाग्य मसल डाला हा
यह पाप, अरे हत्या सिरपर छायी है
उठकर भी हम गिर गये, कुगति पायी है

बापू-सा त्राता, संत मिला था हमको
बापू-सा विभव अनंत मिला था हमको
हा, हा, उसका यों हन्त ! अंत कर डाला
रो अधम अभागे देश किये मुख काला

—मुंशीराम शर्मा 'सोम'

आह बापू !

आह ऐ गांधी, मेरे हिन्दोस्तांका आफताब
दाख्ये मर्जे गुलामी बानिये सद इन्कलाब
सर जमीने-हिन्दपर अपना ही तू अपना जवाब
हामिये अम्नो अमां मैखानए उलफतका बाब
बुझ न जाये गममें तेरे मेरी हस्तीका चिराग
बापू-बापू चीखता है मेरे दिलका दाग-दाग

ऑख जाती है जिधर मातमका समां है उधर
कोई रोता है इधर कोई परीशां है उधर
गिरयाजन इन्सां इधर तो चर्ख शादां है उधर
फस्ले गुल रुखसत इधर असरे बहारां है उधर
ऐशपर तेरे लिए हैं हर तरफ तैयारियां
फर्शपर आँसूके कतरे दर्द और बेताबियां

हूं मैं हैरतमें कि पलमें क्या-से-क्या यह हो गया
क्या सराए दहरसे गांधी हमारा चल बसा
कैसे ढूंढे फिर कोई अपनोंका इस जा आसरा
हाथ रखकर दिल पै कहना यह वफा है या जफा
गांधी उससे खाये गोली जिसकी खातिर मिट गया
तुफ है ऐसी कौमपर जो बापका काटे गला

जाके कलकत्तेसे पूछो क्या थी गांधीकी नजर
जाके दिल्लीसे यह पूछो क्या था गांधीका असर
जाके तूफानोंसे यह पूछो क्या था गांधीका जिगर
जाके मंजिलसे यह पूछो कैसा था वह राहबर
गांधीको तुम जाके समझो नेहरूकी फरियादसे
गर समझना उसको हो समझो दिले आजादसे

याद रख ऐ अहले भारत फिर घटा छानेको है
फिर बलायें नागहाँ इस देशपर आनेको है
हिन्द अपने पापका फल जल्द ही पानेको है
फिर व चर्खे कज अदा कह गजब ढानेको है

बचना गर आफतसे है तो रास्ते गांधीके चल
वर्ना देगा गरदिशे दौरे जमाँ तुझको कुचल

चाहता है गर विदेशीका न बनना फिर गुलाम
तो मिटाना ही पड़ेगा तुझको गद्दारोंका नाम
दूरकर दिलसे किना औ' तोड़ दे नफरतका जाम
वर्ना गांधीका लहू लेकर रहेगा इन्तकाम

ऐ कलीमे बेनवा सुन वह मोकद्दस आतमा
'हिन्दू-मुसलिम एक हों' की देती है अबतक सदा

—मूसा कलीम

अश्रु-तर्पण

अभी राष्ट्रने जन्म लिया था शिशुने थीं आँखें ही खोली
राष्ट्रपिता खो गया अचानक खाकर हत्यारेकी गोली
ओ हत्यारे ! नीच नराधम नरपशु तूने क्या कर डाला
तड़प रहा है हिन्द कि तूने आज हिन्दका हृदय निकाला

रोम-रोमका ऋणी राष्ट्र था जिसकी देन धरोहर-थाती
अरे कृतघ्नी, दो गोलीसे बेधी राष्ट्रपिताकी छाती
विक्षिप्ता भारत माताने बापूको निज अंक सुलाया
राष्ट्रपिताकी सेवाओंका हमने अच्छा मूल्य चुकाया

बिना एक कण रक्त बहाये जिसने देश स्वतंत्र बनाया
अरे उसीको उसके ही लोहूसे हमने है नहलाया
रोया गगन, दिशाएँ रोयीं, विकल विश्वका कोना-कोना
फूट पड़ा आँसू बन जन-मन ओ हत्यारे, तू मत रोना

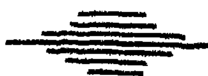
अरे कौन अब शोषित पीड़ित मानवकी जो पीर मिटाये
वसुंधराके आँसू पोंछे, भारत माँको धीर बँधाये
अरे कौन अब धीर बँधाये बेचारे अनाथ हरिजनको
कोटि-कोटि भारत जन-जनको निस्सहाय निर्बल निर्धनको

ईसा, बुद्ध, मुहम्मदको कब जीते-जी जगने पहचाना
तुमको खोनेपर ही बापू, जगने मूल्य तुम्हारा जाना
सदियों बीतीं किंतु यहूदी देखो ईसाके हत्यारे
धरतीके कोने-कोनेमें डोल रहे हैं मारे मारे

बापू-हत्याका कलंक ले मस्तक ऊँचा हो न सकेगा
हिन्द महासागर भी चाहे तो भी कालिख धो न सकेगा
आज हिन्दके इतिहासोंमें जुटे नये दो पन्ने काले
व्यर्थ गर्व-गौरव अतीतका, हिन्दू अपना शीश झुका लें

बापू आज नहीं हो तुम, पर जग-जीवनपर छाप तुम्हारी
महाकालके चक्रोंपर अंकित है जीवन माप तुम्हारी
चरण-चिन्ह जो छोड़ गये तुम, आनेवाला युग चूमेगा
इसी धुरीपर एक हिन्द ही नहीं, विश्व सारा घूमेगा

—मोहनलाल गुप्त



जब तुम न रहे हे सूत्रधार

भूगोल थमा, आकाश झुका, जब तुम न रहे हे सूत्रधार
आँसू पीकर रह गयी व्यथा, आशाओंपर छाया तुषार

तुम लिये ऐक्यकी एकतान, बन गये तालमें सम महान
जब टूट गयी सम-परम्परा, तब रुका हृदयका करुणगान
आँखें धुल गयी विषमत.की, म्रियमाण हुए सब दुष्प्रवाद
तुम जाति-व्यक्तिसे ऊपर उठ, निर्वाण हो गये निर्विवाद
कर गये किनारा जब अपने, तब टूटा सललजका कगार
हिमगिरिकी टूटी आन प्रबल, दब गया मनुजताका उभार
जब बदला भारत-मानचित्र, गिर गया समन्वयका वितान
तब मेरुदण्ड बन भार-वहन कर सके तुम्हीं बापू महान

अब जीवन-पद्धति-सृजन-स्वप्न ले, माँ कसे करले सिंगार
आँसू पीकर रह गयी व्यथा, आशाओं पर छाया तुषार

तुम शशि-शेखरसे निर्विकल्प, निर्विषय आदि-मनु-सुत समान
आसक्ति-शक्तिको कर असक्त, तुमने तोड़ी पुष्पित कमान
तुम धर्मोंमें अपवाद रहे, परिशिष्ट सभ्य-युग के विशेष
नित स्पर्श-भेद पहचान सके, बन गये स्वयं अस्पृश्य, श्लेष
अब समय नहीं है रोनेका, इसलिये कलेजा लिया थाम
वर्ना विनाशकी इस गतिमें, आता न कभी यह मृदु विराम
अबरामराज्यका सबल सत्य, कंठस्थ हो रहा था प्रसार
पर एक ईंटके लिए गिरा क्यों मानस-मंदिर निर्विकार

आँसू पीकर रह गयी व्यथा आशाओं पर छाया तुषार
भूगोल थमा, आकाश झुका, जब तुम न रहे हे सूत्रधार

—मुकुल

मृत्युंजय

आज तुम्हारे ही प्राणोंसे, मृतक विश्वको प्राण मिल रहा

आत्म–बोधके मंगल स्वरमें गूँज रहा है गान तुम्हारा
आज अबोध मनुष्य उठ रहा, पाकर पावन ज्ञान तुम्हारा
जातिभेद, जनभेद, श्रेणियाँ, युग–युगकी संकीर्ण रूढ़ियाँ
मिटनेको विद्रोह कर रहीं लख उज्ज्वल अभियान तुम्हारा
तव अनुकम्पाके सरमें ही जन–मनका जलजात खिल रहा
आज तुम्हारे ही प्राणोंसे, मृतक विश्वको प्राण मिल रहा

मंथन करके जग–जीवनको अमर सत्यका रत्न निकाला
अमृतदान देकर संसृतिको, स्वयं पी गये विषका प्याला
पंचभूत दे पंचतत्वको आज हुए हो तुम मृत्युञ्जय
अरे अमरता धन्य हो उठी, डाल तुम्हारे उर जयमाला
देख तुम्हारे तपस्त्यागको इन्द्रासन है आज हिल रहा
आज तुम्हारे ही प्राणोंसे मृतक विश्वको प्राण मिल रहा

नूतनसृष्टि रच रहे थे तुम स्वर्ग धरापर ले आनेको
किंतु स्वयं ही धराधामसे तत्पर हुए स्वर्ग जानेको
यह अपूर्ण साधना तुम्हारी कौन आज सम्पूर्ण करेगा
आओ स्वप्न सत्य कर देखो हम आकुल तुमको पानेको
क्योंकि तुम्हारे बिना कठिन यह भार न हमसे आज झिल रहा
आज तुम्हारे ही प्राणोंसे मृतक विश्वको प्राण मिल रहा

—रघुवरदयाल त्रिवेदी

जय अनन्त करुणाके धाम

देव सृष्टिके अग्रदूत हे, पावनताके पुण्याराम
विश्व-कलुषके क्षार, धरणिकी ज्वालापर तुम जलधर श्याम
प्राचीके आलोक प्रतीचीपर छायी किरणोंके दाम
विश्वाराध्य ईश जननायक, आत्मशोध-तृष्णामें क्षाम
स्वयंप्रभासे दीप्त लोक-दीपक ! तेरा बल केवल राम
अविनश्वरताके प्रतीक तुम अमर तपस्वी-से निष्काम
रघुपति राघव राजाराम

—रत्नशंकर

अजर अमर बापू

रो मत मेरे देश, अमर है तेरा यह सेनानी
वह न मरेगा जबतक गंगा-यमुनामें है पानी
जन-जनमें जीवनसे उनका जीवन बोल रहा है
कण-कणके उनकी करुणाका ही स्वर डोल रहा है
रोम-रोममें समा गया है उनका पावन नाम
मानव भूल रहा है अपना जय जय सीताराम
हिन्दू रोया, मुस्लिम रोया, रोया सकल जहान
गंगा-यमुना रोयी, रोया पत्थरका इनसान
धनी और निर्धन मिल रोये, रोया करुण किसान
दिल्ली रोयी, लन्दन रोया, रोया पाकिस्तान
फूट-फूट रो रही विश्वमें मानवकी नादानी
राष्ट्रपिताकी शक्ति स्वर्गके मुँहमें लायी पानी
स्वर्ग-परी छल गयी धराको, मानवता चिल्लायी
दीन हो गयी धरा, स्वर्गने घीके दीप जलाये
दुनियाने आँखोंमें भर-भरकर आँसू छिलराये
प्रिय स्वदेशकी स्वतंत्रता ही उनकी अमर निशानी

—रमानाथ अवस्थी

अस्त हुआ रवि

बापू, बापू राष्ट्रपिता हे, कहो चले किस ओर
छोड़ चले क्यों आज हमें तुम इस विपत्तिमें घोर
तूफानोंमें खेकर तुम लाये भारतकी नैया
लगा किनारे कूद गये तुम जलमें स्वयं खेवैया

मत रूठो हे क्षमा-सिंधु, पागलपन देख हमारा
तुम रूठोगे तो हमको फिर देगा कौन सहारा
ओ हिन्दू, मुसलिम, ईसाई, सिख कहलानेवालो
रो लो आज गले मिलकर तुम, जी भर शोक मना लो

अरे अछूतो, कौन करेगा छूत तुम्हारी दूर
सबसे अधिक आज तुमपर ही हुआ विधाता क्रूर
फूटा भाग देशका अब है कर मलकर पछताना
मुहसे यही निकलता—'हा, हमने न तुम्हें पहचाना

अस्त हुआ रवि मानवताका, फैल गया अँधियारा
खुल खेलेगी दानवता अब हुआ बुलंद सितारा
बुद्ध हुए हत-बुद्धि आज, ईसामसीह बिलखाते
देख अहिंसाको संकटमें महावीर दुख पाते

सत्य-अहिंसाकी वेदीपर बापूका बलिदान
प्रलय कालतक बना रहेगा घटना एक महान

—रमापति शुक्ल

आखिरी विदाई लो, बापू

तुम आसमानकी ओर चले जा रहे, विदाई लो, बापू
तुम सत्य, अहिंसा और शांतिकी अमिट निशानी छोड़ चले
धरतीपर त्याग-तपस्याकी तुम अमर कहानी छोड़ चले
तुमने ही कहा कि अमिय पिला चुपचाप गरल पीते जाओ
तुमने ही कहा कि मर-मरकर जीवन के हित जीते जाओ
तुम स्वर्ग-लोककी ओर बढ़े जा रहे, विदाई लो, बापू
आखिरी विदाई लो, बापू

इस नये दृश्यको देख आज धरती आकुल, आकाश विकल
कुछ नये पृष्ठपर लिखनेको हो रहा आज इतिहास विकल
मुट्ठी-भर हड्डीके भीतर तूफान चला करता था जो
दुबली पतली-सी कायामें बलिदान पला करता था जो
तुम लिये शहीदी शान जले जा रहे, विदाई लो, बापू
आखिरी विदाई लो, बापू

चीखती मुहम्मदकी आत्मा, मजहब आकुल, ईमान विकल
हो रहा राष्ट्रका धर्म विकल, गौतम ईसाके प्राण विकल
आँखोंसे बरबस फूट रहे प्राणोंके फेनिल गान विकल
हो रही आज श्रद्धा आकुल, आशा आकुल, अरमान विकल
तुम धरा छोड़कर किधर उड़े जा रहे, विदाई लो, बापू
आखिरी विदाई लो, बापू

नन्हा-सा मिट्टीका पुतला धरतीपर चलताफिरता था
झिलमिल जो मिट्टीका चिराग सदियोंसे जलता फिरता था
वह आज मौन हो गया, मगर उसका प्रकाश अवशेष अभी
शाश्वत सदियोंतक दीप्तमान रखनेको देश-विदेश सभी
तुम चिता-ज्वालपर आज चढ़े जा रहे, विदाई लो, बापू
आखिरी विदाई लो, बापू

वह ऐसा कौन कि आँक सके कीमत ऐसी कुर्बानीकी
वह ऐसा कौन कि गति रोके ऐसे आकुल अभियानीकी
किश्ती तो लगी किनारे, पर हिलकोरे आते-जाते हैं
तुम चले जा रहे जहाँ आज हम उसे देखने आते हैं
तुम देवलोककी ओर बढ़े, जा रहे, विदाई लो, बापू
आखिरी बिदाई लो, बापू

—रमेशचन्द्र झा

बापूका बलिदान

बापू रोती मानवताको निरुपाय छोड़कर चले गये
बलिदान-कथामें एक नया अध्याय जोड़कर चले गये
भारत-जननीने सदियोंमें एक लाल अनोखा जाया था
उस एक व्यक्तिमें ही मोहन-गौतम-ईसाको पाया था
जो कंटक-पथको निज पगसे सौरभमय करता आया था
अपने करुणामय मानसके करमें मुक्ता-कण लाया था
पर आज वही मोती दृगके आँसू-से बनकर चले गये
हत्यारेकी पिस्तौल चली, गोलीके घातक वार हुए
बस उसी समय मानवताके मधु स्वप्न अचानक क्षार हुए
आशा-लतिकाके नवल फूल झट मुरझाकर निस्तार हुए
पलभर पहलेके रंगमहल मर्माहित शोकागार हुए
नीचेसे खिसक चली धरती, आधार धराके चले गये
सहसा भारत माँका क्रन्दन शोकाकुल स्वरमें फूट पड़ा
रोया गिरिवर, रोया सागर, अवनीपर अंबर टूट पड़ा
शत-कोटि निराश्रितका आश्रय, निर्बलका संबल छूट पड़ा
संतप्त मनुजता चीख उठी, क्यों क्रूर विधाता रूठ पड़ा
रह रहकर हूक यही उठती—हम क्रूर नियतिसे छले गये

पर अमर शहीदोंकी टोली कब होती निरुद्देश्य कहीं
बापूके सीनेकी गोली क्या देती कुछ आदेश नहीं
वह देखो सत्य अहिंसाकी ध्वनियाँ हैं तुम्हें पुकार रहीं
आओ, यदि कुछ करना चाहो, बापूकी बलि बेकार नहीं
वे तो वरदान लिये आये, अभिशाप समेटे चले गये

पशुताकी पृष्ठ-भूमिपर जब उनका जग चित्र बनायेगा
खूनी दागोंसे लिखा हुआ इतिहास एक बन जायेगा
जिसका पन्ना-पन्ना उनकी कल कीर्ति-ध्वजा फहरायेगा
जिसका अक्षर-अक्षर फिर तो बस यही गान दुहरायेगा
अंबरके स्वप्न धरातलपर वे मूर्तिमान कर चले गये

जग भरके ताज निछावर थे, उस बिना ताजके राजापर
उन्नत मस्तक झुक जाते थे, उस महापुरुषके चरणोंपर
लाखोंके कोष लजाते थे, उस वैरागीके वैभवपर
सब देवदूत शरमाते थे, उस शांति दूतके गौरवपर
वे जाते-जाते भी जगके उर-पटल खोलकर चले गये

—राजपाल सिंह 'करुण'

बापू

नयनोंके मानसरोवरमें रहनेवाली हंसिनि जागो
झरते दृग इन्दीवर दल हैं मुक्ताके दाम सरस माँगो
करुणाकी इस कादम्बिनिसे अपने आँसूका मोल करो
आँखोंमें आज अमरताकी वह अक्षयनिधि अनमोल धरो

जिन आँखोंने वह छवि देखी हो उन आँखोंके पानीसे
उस पीड़ाका परिचय पूछो निर्ममताकी नादानीसे
भावुकताकी इस धरतीपर है टूट गिरा आकाश कहीं
'देवत्व कला है मर सकती'—होता इसपर विश्वास नहीं

कहते हैं लोग मरे बापू, पर वे सचमुच हो गये अमर
जगकी नश्वरतामें उनका है आज गया अस्तित्व निखर

उनके विचारका भार वहन करते विद्युत्–कण अम्बरमें
हैं कंठ बोलते कोटि–कोटि उनके ही अविनाशी स्वरमें

"दीनोंके बंधु पतित पावन निरवधि करुणाके धाम अमर
तुम जनमन मन्दिरके रघुपति, तुम राघव राजाराम अमर

जिसकी स्मृतिसे चिर शत्रु-वधू भरती निज नयन सरोज युगल
उनके जीवनकी धारा थी उस मधुर सत्यकी खोज विकल

जिसके आगे दुर्धर्ष प्रकृति पशुबलकी नतमस्तक होकर
प्रमुदित अनुनयकी अञ्जलिमें पीती है आज चरण धोकर

कण एक उन्हींके पद–रजका यह नर–पशुता यदि पा जाती
अपने संचित शत जन्म कलुष क्षण भरमें आज मिटा पाती

था इन्द्र तुम्हारा वज्र कहाँ, थे राम तुम्हारे बाण कहाँ
सब जिन्हें देवता कहते थे—वे मंदिरके पाषाण कहाँ

क्यों उस गजेन्द्र उद्धारककी बाहोंमें पक्षाघात हुआ
जब मानवताके प्यारेपर वह वक्ष-विदारक घात हुआ

निर्व्याज क्षमाके अवयवपर क्यों वज्र गिरानेवालेकी
गलकर न गिरीं वे अंगुलियाँ पिस्तौल चलानेवालेकी

उस दिन हजार फणवालेने इस अघसे बोझल धरणीको
क्यों फेंक न दिया तमोदधिमें अर्पित न किया वैतरणीको

फट गयी न धरतीकी छाती फट गया न क्यों आकाश–हृदय
मच गया न भैरव कम्पनसे क्यों पंचभूतमें महाप्रलय

जब जगद्वन्द्य उन प्राणोंपर उस पापीकी पिस्तौल फिरी
जब छिन्न हृदयसे बापूके वह प्रथम लहूकी बूँद गिरी

उस एक बूँदका दाम सुनो अपने शोणितके सागरसे
अब दे न सकेगी मानवता भर-भर सदियोंकी गागरसे

क्या मानवताकी वेदीपर करुणाकी यही मनौती थी
या सभ्य कहानेवालोंको पशुताकी खुली चुनौती थी

बापूकी कोख विदीर्णकरी लोहेकी जलती गोलीसे
उस अमिट, क्षमाके मस्तकपर परिणीत अनलकी रोलीसे

उन गिरी रक्तकी बूँदोंसे, बूँदोंकी विद्रुम लालीसे
जिसने दुकूलका छोर रँगा है उस इन्द्रध्वजवालीसे

उसके उन्नत वक्षस्थलपर प्रतिहिंसाके जलते व्रण-से
भारतके भाग्य-विधाताके सचपर मर-मिटनेके प्रणसे

कहती क्षत-विक्षत मानवता युगके रक्तिम आधार जियो
तुमसे ही अमर सुहागिनि मैं मेरे अक्षय शृङ्गार जियो

क्षण भरको सत्य-अहिंसाकी रुक गयी सुनहली आँधी है
भौतिक कण हमसे पूछ रहे हैं—'कहाँ हमारा गांधी है'

गंगा रोती, जमुना रोती, रोता इतिहास हमारा है
नैराश्य गगनसे टकराता जाकर निःश्वास हमारा है

पत्थरके विन्ध्य हिमांचलकी पर्वत-माला भी रोती है
नदियोंके आँसू निकल रहे अंचल निज धरा भिगोती है

भारतकी मिट्टी रोती है, भारतका सोना रोता है
आहत करुणासे आज विश्वका कोना-कोना रोता है

बापूके दोनों हाथ जुड़े कर रहे बधिकका स्वागत थे
उनके अभ्यांत कलेवरमें जैसे चल रहे तथागत थे

'मैं पाप जगतका पीता हूँ जग मेरा जीवन-रक्त पिये'
उनके मुखपर थे भाव यही—'जग लेकर मेरी आयु जिये'

यदि पुण्य हमारा हो कुछ भी तो उसकी शीतल छाँह तले
चिर-बन्ध दुखी इस मानवताका जग फूले, संसार फले

यह अजर अमर हो मानवता मैं चला सृष्टिका विष पीने
कोई न किसीको अब दुख दे कोई न किसीका सुख छीने

हिन्दू-मुसलिमके बच्चेको समझे अब अपना ही बच्चा
संसार उसे फिर मानेगा मानवताका सेवक सच्चा

अब रक्त-पिपासु पिशाचोंको मेरा यह खून अमानत है
इससे न बुझे जो प्यास उसे धिक्कार निरर्थक, लानत है

निष्ठुरताके प्रतिनिधियोंको मेरा अंतिम संदेश यही
मत भूलो मेरे मित्र, मनुज-देवोंका सुंदर देश यही

है यहाँ दीन, असहायोंकी रक्षामें प्राण गँवाना ही
मानवका मानवताके हित अमरत्व यहाँ मर जाना ही

मानव-समाजकी सेवा ही जिनका सुंदरतम गहना है
बस एक क्षमाका आभूषण ही जिन पुरुषोंने पहना है

आरम्भ जहाँसे होते हैं मानवताके इतिहास भले
अनजान चेतनावाले भी उन आदि युगोंके कुछ पहले

मनके अति निष्ठुर मानवको जंगलके हिंसक प्राणीको
जिसने करुणाका मंत्र दिया बर्बरताकी उस वाणीको

नवजात सभ्यताके शिशुको दो डग भरना सिखलाया है
संस्कृतिके पहले अरुणोदयमें जिसने विश्व जगाया है

उन ऋषियोंकी संतान तुम्हें प्यारा उनका आदर्श रहे
सौ बार अधिक मन-प्राणोंसे प्यारा यह भारतवर्ष रहे

—राजेन्द्र

हा, राष्ट्र पिता

रात घनी है, बादल छाये, काँप रहे हैं पंथीके पग
अर्द्ध निशामें जगके जगमग दीपकका अवसान हुआ क्यों

धरतीकी पलकें बोझिल हैं, भींग रहा आँसूसे अंतर
विधवा-सी ये शून्य दिशाएँ रोती है अंबरसे झर-झर
यह दिल्लीकी सांझ धूसरित खोज रही यौवनकी घड़ियाँ
माँग रही माता अम्बरसे अपना बापू आहें भर भर
देख रही मानवता अपने सपनोंकी वीरान चिताएँ

नव गुंजनसे गुंजित यह बन जल सहसा सुनसान हुआ क्यों

वे दिन थे जब बापू तुमने उन लपटोंमें जलना जाना
वे दिन थे जब अफ्रीकाके धूसर पथपर चलना जाना
वे दिन थे जब कारागृहमें तुमने अपनेको पहचाना
वे दिन थे जब अपने पथपर खाकर बेंत मचलना जाना
वे दिन थे जब कोलाहलमें तुमने नीरव दीप जलाये

ये दिन आये, दुर्दिन आये, हा ! टेढ़ा भगवान हुआ क्यों

राष्ट्र-पिता तुमने निज पगसे कितने ही दुर्गम पथ नापे
ज्योति चरणसे देव, तुम्हारे कितने ही तमके बन काँपे
कितनी बार बिजलियाँ चमकीं शत-शत मृत्यु प्रलय कम्पन ले
पर तुमने चलना ही जाना मानवको पलकोंमें ढाँपे
आँखोंमें सावन, प्राणोंमें पतझर, सुधियोंमें पुरवाई

खिलनेके पहले ही जलकर राख सजल अरमान हुआ क्यों

सूना है आकाश धराका, सूनी है फूलोंकी डाली
सूना है स्मृतियोंका खँडहर, सूनी हैं ये घड़ियाँ काली
वर्धाके सूने आँगनमें होगी मौन दिवसकी छाया
रोती होगी ब्राहोंमें पद-चिन्ह पकड़कर नोआखाली
मानवकी जलती दोपहरी जिसकी स्वर लहरीमें भीगी
आज मरणके सूने तटपर क्रन्दन-सा वह गान हुआ क्यों
काँप रही थी जिसको छूनेमें थरथर शासनकी सत्ता
अरे! आगमें नाप रहा था जो नोआखाली-कलकत्ता
आस्तीनके एक साँपने क्षण भरमें ही उसे सुलाया
आह! क्षोभसे काँप रहा है जगका तृण-तृण पत्ता-पत्ता
बकरी मौन जुगाली करती पूछ रही दृगमें आँसू भर
पशुसे भी निर्मम नीचा मनुका बेटा इन्सान हुआ क्यों
यमुनाके जिस नीलम तटपर गूंज रहा था बंशीका रव
आज वहीं जगके मोहनका भस्म हो गया जल जलकर शव
आग लगी है बंशी-वटमें, सुलग रही छाया कुंजोंकी
दुनियाकी आँखोंके आगे झुलस गया दुनियाका वैभव
गोदीमें भर श्याम लहरियाँ रोज निशामें रो जायेंगी
काले-काले अभिशापों-सा धरतीका वरदान हुआ क्यों
जगके प्राणोंमें गूँजेगी बापू तेरी प्रेम-कहानी
सुनकर जिसको शिला-खण्ड भी बहा करेगा बनकर पानी
हिम-गिरिकी चोटीसे झरझर झरता जायेगा निर्झर स्वर
भारतके ये मुक्त विहँग गायेंगे देव, तुम्हारी वाणी
पूछेंगे नभके तारोंसे दुनियावाले आँख उठाकर
मानवताकी ही घाटीमें मानवका बलिदान हुआ क्यों
रात घनी है बादल छाये काँप रहे हैं पंथीके पग
अर्द्ध निशामें जगके जगमग दीपकका अवसान हुआ क्यों

—रामदरश मिश्र

बापू

कहाँ छिप गया आज 'दिनमान' मेरा

जिधर देखता मैं उदासी-उदासी
निशा छा गयी है प्रलयकी घटा-सी
अधम व्याधके बाण-सी गोलियोंसे
बिंधा आज फिर 'कृष्ण भगवान्' मेरा

कहाँ छिप गया आज 'दिनमान' मेरा

धरा रो रही है, गगन रो रहा है
अखिल विश्व चिंता-विकल हो रहा है
बहुत दूर है देश, मँझधारमें ही
हुआ आज रे, दीप निर्वाण मेरा

कहाँ छिप गया आज 'दिनमान' मेरा

नियति, क्रूरताको तुम्हारी कहूँ क्या
सदा शोकके सिंधुमें ही बहूँ क्या
हृदय वेदनासे भरा, अश्रु बनकर
बहा जा रहा है करुण गान मेरा

कहाँ छिप गया आज 'दिनमान' मेरा

—रामनाथ पाठक 'प्रणयी'



बापूसे

अँखियाँ खोलो मुखसे बोलो, देशकी राखो लाज
लाये हैं श्रद्धाञ्जली हम गांधीजी महाराज

घर-घर दुखके बादल छाये, सुखकी नैया डूबी जाये
भारत माता रो रो कहती बनके बिगड़ गये काज

नयनन नीर बहाना छोड़ा, भगतोंसे काहे मुख मोड़ा
देवें दुहाई भारतवासी जागो बापू आज

दोनों जगमें तुमरी जै हो, गोली खाके अमर भये हो
हमसे बिछुड़के स्वर्ग गये हो सुमतिका पहने ताज

जिसने बेड़ा देशका तारा, भवसागरसे पार उतारा
उसको किस निरदईने मारा, बता दो हे यमराज

इस धरतीकी रीत हैं न्यारी, उसको मेटे हिंसाकारी
तन मन धन जो तजके चाहें सदा अहिंसा राज

हिन्दू मुसलिम अब बलहारें, मन तुमरे उपदेश पै वारें
मिलजुल सब जय हिन्द पुकारें, बाजें प्रेमी बाज

हार कहाँ यही सत्य विजय है, घर घर देख लो तुमरी जै है
पहले तो गाँधीजी देश गुरू थे, जगत-गुरू भय आज

—रामपूरके नवाब

हे महात्मन ।

वार ? कैसा वार ? किसपर वार

जो कि मृत्युञ्जय उसे क्या मार सकती तोप या पिस्तौल या तलवार
चुप रहो ! वह ऋषि, महात्मा, साधु, योगी, संत
हो चुका था, युगों पहले, अजर, अमर, अनंत
सत्य जिस दिन सामने आया, पसारे हाथ
दे दिया था उसी दिन उसने झुका कर माथ
प्राण, तन, मन, धन, कहा था हो अनंद विभोर
'मोर मो मे कछु नहीं, अब जो कछु है तोर'
बन गया क्षण बीच तत्क्षण वह स्वयं अवतार
मृत्युका स्वामी—उसे क्या मृत्यु सकती मार

वार ? कैसा वार ? किसपर वार

चुप रहो क्या मार सकता था उसे वह कीट
नाम जिसका लूँ तो मारें लोग पत्थर ईंट
वह विभीषण, वह दुशासन और वह जयचन्द
हो गया उस दिन कि जिसका नाम लेना बंद
कहाँ वह, औ' कहाँ यह, जिसके पदोंकी धूल
थी कि मुर्दोंको, मरोंको भी संजीवन मूल
सच कहूँ, जिसने गढ़ा है यह नया संसार
मैं न मानूँगा, उसे है मृत्यु सकती मार

वार ? कैसा वार ? किसपर वार

चुप रहो वीरत्व वह जैसे प्रकट सशरीर
पर हृदयमें छिपी जिसके इस जगतकी पीर
वीर ईसाकी तरह था,—अली औ' सुकरात
जुरिस्टर औ' सिक्ख गुरुओंकी बढ़ा दी बात

वीर-गतिका हक उसे था, वीर-गतिकी प्राप्त
कब हुई ऐसे फकीरोंकी विभूति समाप्त
पूर्ण, पूर्णमिदं बना वह ब्रह्मका अवतार
मृत्यु दासी थी, उसे क्या मृत्यु सकती मार

वार ? कैसा वार ? किसपर वार

चुप रहो जब धर्मका होता जगत्‌में अंत
तब कृपाकर प्रकट होते गांधी-जैसे संत
आज कह सकते नहीं यह जग कि रौरव नर्क
जान कुछ पड़ता नहीं, इसमें कि उसमें फर्क
शांतिका बिरवा उगा तो फल चखेगा कौन
इस विषयपर तुच्छ कविका उचित रहना मौन
बौद्ध-मत ईसाइयत फूले-फले पर द्वार
फलेगा यह भी कहीं—क्या मृत्यु सकती मार

वार ? कैसा वार ? किसपर वार

चुप रहो छोड़ो, अगर हो सके हिंसा-द्वेष
रह न जाये हृदयमें विद्वेषका लवलेश
आज उसकी राहपर निर्भय लुटा दो जान
और हो जाओ जहांमें तुम उसीकी शान
फिर तुम्हीं तुम हो, तुम्हारा रास्ता है साफ
जो तुम्हें मारे, उसे हो गांधीकी माफ
मृत्यु फिर तुमको नहीं है कभी सकती मार
यदि गया जो उसे बांधो दे हृदयका प्यार
वार ? कैसा वार ? किसपर वार

—रामानुजलाल श्रीवास्तव

श्रद्धांजलि

आदमीयतकी जड़ें जिस जहरसे सड़ने लगी थीं
सभ्यताकी शाखसे चिनगारियाँ झड़ने लगी थीं
अनगिनत हरियालियोंकी राख है जिसकी निशानी
और यह नीला पड़ा आकाश है जिसकी कहानी
वह जलन, वह जहर हरने जो चला अकसीर बनके
पच न पाया वह सँजीवन पेटमें पापी भुवनके

अखिल संस्कृतिकी तपस्या देह धर जो आ गयी थी
छाँह बन शिशुवत्सलाकी विश्व जनपर छा गयी थी
सुरभि-पय-पीयूष स्रवता ही रहा जिसके हियेसे
ताप गलता ही रहा करुणाभरण अपलक दियेसे
स्वर्गकी ममता मिली ज्यों मर्त्यको मधुक्षीर बनके
पच न पाया वह सँजीवन पेटमें पापी भुवनके

नव-नयनमें उन्नयन-विज्ञानकी क्या ज्योति जागी
पतित-तम-पथपर पलटकर सभ्यता भागी अभागी
आदमीयतकी वसीयत—सृष्टिके श्रमकी कमाई
प्रेम, करुणा, एकता—क्या निधि नहीं हमने गँवायी
और वह जीवन मिला जो आखिरी तदबीर बनके
पच न पाया हाय ! वह भी पेटमें पापी भुवनके

कोटि जग उरके सजग फुर हो उठे जिसके जगाये
हँस रहे वीरान भी फलवान अब जिसके लगाये
मृत्तिकाकी पुतलियोंमें फूँक जीवनकी शिखाएँ
धो गया अपने लहूसे जो धरातलकी बलाएँ
जा बसा सुर कंठमें वह अब नयी तकदीर बनके
पच न पाया जो सँजीवन पेटमें पापी भुवनके

—'रुद्र' गयावी

अमीरे कारवाँ

गुलसिताने जिंदगीका बागवाँ मारा गया
नाखुदाए किश्तिए हिन्दोस्ताँ मारा गया
जिन्दगी जिसकी थी सुलहोअम्नकी पैगम्बर
हैफ एक ऐसा अमीरे कारवाँ मारा गया

क्यों उदासी छायी है, बेनूर क्यों दुनियाँ हुई
बन्दए हक कौन दौरे आसमाँ मारा गया
जिसने अपनी जिन्दगी राहे खुदामें वक्फ की
आह वह दरोहरमका पासबाँ मारा गया

जिसकी पीरी अज्मो इस्तकलालका जिन्दा शबाब
आह वह गेतीका फर्जन्दे जवाँ मारा गया
जश्ने आजादीने बढ़कर जिसके चूमे थे कदम
आज वह शाहन्शाहे हिन्दोस्ताँ मारा गया

बादशाही जिसने की रूहानियतके जोरसे
हिन्दवालो, वह तुम्हारा हुक्मराँ मारा गया
याद है किसने कहा था हिन्दू–मुस्लिम एक हैं
वह ही बापू यानी सबका मेहरबाँ मारा गया

खून जिसका देवताके खूनसे कुछ कम न था
एक वह इन्साँ हमारे दरमियाँ मारा गया
वह अहिंसाका पुजारी वह करमका देवता
जाने किस जुर्मोखतापर बेजबाँ मारा गया

खिर्मने अफरंग जिसकी जद पै आकर मिट गया
लो जमीने हिन्दका वह आस्माँ मारा गया
मादरे हिन्दोस्ताँकी गोद खाली हो गयी
एक ही बच्चा था उसका बेजबाँ मारा गया

लो सबक बमसे चौंको हिन्दवालो, होशियार
यह न कहना दूसरा फिर पासबाँ मारा गया
दुश्मनोंको देखता था जो निगाहे लुत्फसे
हैफ है वह दोस्तोंके दरमियाँ मारा गया
खैर हो अंजामकी यह तो अभी आगाज है
पहली ही मंजिल पै मीरे कारवाँ मारा गया
बुझ गया "रौशन" चिरागे अजमते हिन्दोस्ताँ
आह गांधी बागबाने गुलसिताँ मारा गया

—रौशनअली खां 'रविश' बनारसी

बापू

कौन था, कहाँसे आके अपना बनाके हाय
फिर कैसे हमसे बिछुड़के चला गया
प्रेम–पालनेमें पाल, प्रेम ही पढ़ाया सदा
आज वही झटसे झगड़के चला गया
भूलसे भी भूलता रहा नहीं जो सपनेमें
आँखें फेर शानसे अकड़के चला गया
चंदन समान भाग्य–भालपर शोभता था
चंदनकी चितापर चढ़के चला गया
साधु, संत, योगी, यती, ऋषि, मुनि, महात्मा था
साधक, तपस्वी, देवता कि अवतार था
करामाती, जादूगर, सिद्ध या सयाना, पीर
दरवेश, औलिया, फकीर, कल्पकार था
सेवक, सिपाही, बनिया, किसान, मजदूर
भिक्षुक, जुलाहा, कोल, भंगी, परिवार था
ज्ञानवीर, भक्तिवीर, धर्मवीर, कर्मवीर
प्रणवीर, रणवीर, वीरोंका शृंगार था

राजाओंका राजा महाराजाओंका महाराज
चक्रवर्ति–चूड़ामणि, शूर – सरदार था
मानवता–नाव भव–भँवरमें फँस रही
पार करनेका वही दिव्य पतवार था
भारत–विधाता, विश्व–प्रेम–मंत्रदाता, त्राता
शांति रूपमें अनूप क्रांतिकी उभाड़ था
दानवता हार बार–बार खाती थी पछाड़
एक मुट्ठी हाड़में विराट–सा पहाड़ था

जबसे वसुंधरामें सृष्टि–रचना है हुई
आँखसे न देखा किसीने न सुना कानसे
ब्रह्मकी न चाह, परवाह स्वर्ग-मुक्तिकी न
भक्त भगवान हो, रम गया जहानसे
तीन लोक-तारिणी त्रिवेणी आज तर गयी
भारत–विभूतिके विभूतिके मसानसे
ऐटम–बम अणु-परमाणुमें बिखरके
घुल-मिल गया जल, थल, आसमानसे

सत्यता हरिश्चन्द्र, पौरुष परशुराम
ध्रुव प्रहलादकी अचलता सुहाई थी
दृढ़ता दधीचिकी थी, त्याग शिबिके समान
नीति नटवर–सी निपुणता लखाई थी
बुद्धका वैराग्य, और ईसाका परोपकार
तपबल विश्वामित्र, राम वीरताई थी
नानक कबीर ज्ञान, साधुता मुहम्मदकी
बापूकी बनावटमें विधिकी बड़ाई थी

——ललितकुमार सिंह 'नटवर'

महाप्रयाण

हे बापू ! अब न रहे भूपर, उरको होता विश्वास नहीं
ओ कर्ण, नहीं क्यों बधिर हुआ, क्यों रुकी हमारी साँस नहीं
क्यों रुका हृदयका स्पन्द नहीं, क्यों हुई चेतना लुप्त नहीं
ओ मेरा चेतन मन बोले, क्यों हुआ अचेतन सुप्त नहीं

क्यों धरा न चकनाचूर हुई, क्यों हिला शेष ब्रह्माण्ड नहीं
छाया अग-जगमें प्रलय न क्यों, फैली क्यों अग्नि प्रचण्ड नहीं
ले प्रलयकरी ज्वाला शिवने खोले तृतीय क्यों नयन नहीं
बोलो सुरेन्द्र, क्यों गिरा न पवि, क्यों धँसा अतलसे गगन नहीं

क्यों दाब अंगूठेसे रक्खी यह सृष्टि, हिमालय तो बोले
ले सर्बनाशकी प्रबल ज्वाल, कर भस्मसात दिग्गज डोले
दानवताका विकराल रूप कर रहा चतुर्दिक अट्टहास
सब जल-थल-नभ-चर भय–आतुर; कम्पायमान यह दिशाकाश

वसुधा बेबस है डरी हुई सब ओर निराशा छायी है
विषकी ज्वालासे विकल वायु, यह रात भयानक आयी है
तारे सशंक हैं मौन, स्तब्ध, चाँदनी शर्मसे गड़ी हुई
सांसें चलती हैं, लेकिन है यह अखिल सृष्टि क्यों मरी हुई

माँकी ग्रीवाका रत्नहार हा ! असमयमें ही टूट गया
मेरी मानवताके सुहागको क्रूर काल यों लूट गया
तूफानी सागरकी लहरोंमें फँसी हुई है राष्ट्र-तरी
अंधड़का झोंका रुका नहीं, है दूर किनारा, विषम घड़ी

पर राष्ट्र-तरीका कर्णधार मँझधार छोड़ उस पार गया
जीवन भरका श्रम व्यर्थ गया, स्वर्णिम सपना बेकार गया
छा गया अँधेरा आँखोंमें, सूझता नहीं है आर–पार
भारतके जन चालीस कोटि रोते हैं होकर बेकरार

जलती बापूकी चिता नहीं, जल रही चिता मानवताकी
पड़ती आहुति जिसकी ज्वालामें प्रेम, अहिंसा, ममताकी
है लाज विधाता, तो दौड़ो ले अमृत हाथमें अम्बरसे
सुन लो मानवताकी पुकार जो निकल रही है उर-उरसे

मानवताका सिंदूर-बिंदु जल रहा अग्निकी लपटोंमें
घिर गयी सत्यकी सीता है दानवताके छल-कपटोंमें
जो लाज बचानेवाला था सौमित्र मृतक वह पड़ा हुआ
लायेगा जीवन-सुधा कौन, यह देश शर्मसे गड़ा हुआ

हो गयी धन्य यमुना, बिड़ला-हाउस भी पुण्यस्थान बना
हो गयी धन्य वह धरा, जहाँ उनकी समाधिका स्थान बना
शोकाभिभूत उर श्रद्धानत, जन-गण अपार उस ओर चला
ज्यों महासिंधु छूनेको नभ अपनी सीमाको तोड़ चला

कैसा भीषण यह कोलाहल? क्यों उठी सृष्टिमें आँधी है
दौड़े सुरपति, रोमांचित हो बोले—अभिनन्दन गांधी है
बापू! तेरा तन नहीं अभी, पर तू सबके मन-प्राणोंमें
तोड़ा सीमाका बंध, अमर, तू अखिल हृदयके गानोंमें

तेरा प्रकाश पथ दिखलायेगा हमको इस अँधियारेमें
ओ ध्रुवतारा! यह राष्ट्र-तरी पहुँचेगी कूल-किनारेमें
अपनी इस करुण विवशतापर नस-नसमें खून उबलता है
चलनेको असिकी धारापर यह मन-केसरी मचलता है

आदेश अमर सेनानीका—हम सत्य पंथपर अटल रहें
टूटे खगोल भी तो टूटे, हम अपने प्रणपर अचल रहें
ओ शांति दूत! आज्ञा-पालनमें हम बलि भी हो जायेंगे
दो आशिर्वचन, तुम्हारे सब आदेश न झूठे जायेंगे

—लक्ष्मीनारायण शर्मा 'मुकुर'

यादमें

क्या कहूं ऐ हमनशीं क्या दिलका आलम हो गया
एक दुरे नायाब हाथ आया था वह भी खो गया
वक्तके तारीक गह्वारेमे आँखें खोलकर
एक करवट लेकर फिर अपना मुकद्दर सो गया

जामए हस्ती हुआ था तंग जब इंसानपर
अब्रे वहशत छा रहा था सारे हिन्दुस्तानपर
एक मसीहा रूपमे गांधीके हँसता–बोलता
पी गया जामे शहादत खुद वतनकी आनपर

मरहबा अहले वतन, माँके पुजारी, मरहबा
मरहबा, मोहसिन-नवाजोंको तुम्हारी, मरहबा
वाह, क्या कहना कहीं ऐसे भी होते हैं सपूत
माँकी छातीपर चला दी तुमने आरी, मरहबा

माँ, वह जिसकी रूह थी जख्मी विदेशी हर्बसे
आज फिर बेचैन होकर चीख उठी कर्बसे
माँ, वह दुखिया माँ, जो खुद ही सदियोंकी बीमार थी
कर दिया बेआस उसको तुमने अपनी जर्बसे

अब तलक जो भी किया तुमने वही कुछ कम न था
अपना सेवक जी रहा था इसलिए कुछ गम न था
आज लेकिन तुमने अपने वहशियाना वारसे
कर दिया दिलका वो आलम जो कभी आलम न था

आँधियाँ आती रहीं बादे खिजाँ चलती रही
मुखतलिफ झोंकोंमें जिनके जिंदगी पलती रही
ऐसी पुर आशोब महफिलमें यही एक शम्आ थी
जिसकी लौ इंसानियतकी रूहमें ढलती रही

हो गया उस शमआका फानूस लेकिन आज चूर
फूट निकले जिसके टुकड़े–टुकड़ेसे बरिआए नूर
अब तलक महदूद जो शय थी वह ला-महदूद है
जगमगा उट्ठीं जमानेकी फिजाएँ दूर–दूर

—वामिक अहमद मुजतबा

ईश्वरकी हिंसा क्षमा करें

रोती धरती, रोता अंबर, रो-रो पुकारता है त्रिभुवन
तुम कहाँ गये भारतके धन, चालीस कोटि प्राणोंके धन
चालीस कोटि जनके जीवन
रो-रो पुकारता है भारत-ओ भूखोंके भगवान कहाँ
ओ महामहिम ! ओ तपः पूत ! यह असमय ही प्रस्थान कहाँ
तुम गये कहाँ, किस ओर कोटि प्राणोंकी ममता छोड़ कहाँ
क्रंदन-रत इन माँ-बहनोंसे तुम चले आज मुह मोड़ कहाँ
रोते-चिल्लाते कोटि-कोटि बच्चोंसे नाता तोड़ कहाँ
तुम चले हमारे स्नेह-भरे बोलो मंगल-घट फोड़ कहाँ
ओ अमर अहिंसाके प्रतीक, सुख-शांति-सत्यके दीवाने
एकता-दीपपर न्योछावर हो जानेवाले परवाने
ओ मुट्ठी भर हड्डियाँ देश-पक्षपर करनेवाले अर्पण
जीवन भर जल-जलकर प्रकाश फैलानेवाले ज्योति-सुमन
असमय यह कैसा स्वर्ग-गमन
बापू, ओ प्यारे बापू, भारतवर्ष तुम्हारा रोता है
हत्यारेके मस्तकपर चढ़ आदर्श तुम्हारा रोता है
ओ विश्व-बंधु शुभ कर्मोका परिणाम यही क्यों होता है
क्यों अपना ही अपनोंके लोहूमें उँगलियाँ भिगोता है
जिनके हित तुमने जीवन भर यातना सही, दुख-दर्द सहे
जिनके हित-चिंतनमें निशि दिन तुम तन-मन धनसे लीन रहे
उन अधम अभागोंने हँसकर प्राणोंका पंछी छीन लिया
लोहूसे रँग कर हाय राष्ट्रका टूक-टूक कर दिया हिया
ईसाकी भाँति तुम्हें भी तो अपनोंसे ही हा ! मिला मरण
प्यारे स्वदेशके लिए विहँस कर किया मृत्युका आलिंगन
है धन्य तुम्हारा अग्नि-वरण

जिनको मँझधारोंसे उबार था दिया किनारेपर उतार
उस नैयाके ही लोगोंने हँसकर मांझीको दिया मार

जिस महापुरुषने मानवको अपने प्राणोंका दिया दान
जिसकी आँखोंमें एक रहे हिन्दू-ईसाई-मुसलमान

ओ अविवेकी गोडसे, बोल उस युगाधीशके प्राण छीन
इन कोटि-कोटि इन्सानोंका क्यों बोल, लिया भगवान छीन

रे देख, हिमालयका मस्तक भी आज शर्मसे लाल हुआ
उस निधिको खो भारत ही क्या सारा भूतल कंगाल हुआ

अब कौन यहाँ जो रोकेगा इन द्रुपदाओंका चीर-हरण
ओ मोहन, कौन सुनेगा अब इन दीन मनुष्योंका क्रंदन

हे युगके धन, हे जन-जीवन

सच है, तुम हमसे छूट गये सुख-स्वप्न हमारे टूट गये
पर रक्त-पिपासित मानवको दे शांति-सुधा की घूँट गये

तुम गये किंतु इस भूतलपर आदर्श तुम्हारा फैला है
क्या है कि अभागे मानवका अंतर अब भी मटमैला है

यह देश तुम्हारे पद-चिन्होंपर निश्चय चला करेगा ही
शुचि सत्य अहिंसाका अखंड यह दीपक जला करेगा ही

हे बापू, उस हत्यारेको ईश्वरकी हिंसा क्षमा करे
है भीख दयाकी माँग रहे चालीस कोटि दृग अश्रु-भरे

हे समदर्शी भगवान, स्वर्गसे दो हमको आशीश-वचन
छिटकायें तीनों लोकोंमें हम 'राम-राज्य' की ज्योति-किरण

हे ज्योतिपुंज, हे भव-भूषण

लो कोटि-कोटि जनका वंदन युग-युगतक युगका महा मिलन
लो पद-पूजन, हे राष्ट्र-सुमन

—'विमल' राजस्थानी

अमर पुरुष

ओ कृतघ्न संसार, न तूने अपना हित पहिचाना
सतत मित्रको अपने तूने अपना बैरी माना
कितनी प्रबल विकट निर्मम है तेरी रक्त-पिपासा
चकित देखता काल युगोंमे तेरा क्रूर तमाशा

दुष्प्रवृत्तिमे प्रेरित पहले तू है पाप कमाता
फिर अनुशोक ताप-पीड़ित पूजाके हाथ बढ़ाता
विश्व-वंद्य बापूकी हत्या भी ऐसी ही लीला
बढ़ा ज्ञान-वध करनेको जड़ताका हाथ हठीला

पञ्चभूतमय नश्वर तनको मिली पराजय रणमे
किंतु प्राणका विजय-घोष हो उठा रणित कण-कणमे
हारीं जगकी असुर वृत्तियाँ, महादेव मुसकाया
ज्योति-पुञ्जके अभिवादनको जगने शीश झुकाया

यह बापूका अंत आज बनकर अनंत कहता है
पुरुष सत्य-संभूत जगतमें सदा अमर रहता है
यही सोचकर सुकवि लेखनी आर्द्र नहीं हो पायी
कर्म मार्गके साक्षी बापू, तुमको लाख बधाई

'युक्त: कर्म फलं त्यक्त्वा' है सत्याग्रह सेनानी
अजय अभय अस्तेय अहिंसा सत्य प्रेमके ज्ञानी
तुमने नयी प्रेरणा भर दी स्वाभिमानकी मतिमें
तुमने नयी शक्ति पैदा की आत्मज्ञानकी गतिमें

मानव मानव बने यही था शुभ संदेश तुम्हारा
धर्म नहीं है वैर सिखाता यह उपदेश तुम्हारा
पिता, मित्र, भूदेव, देव हे सारा जग आभारी
नाच रही आँखोंमें अब भी सुंदर मूर्ति तुम्हारी

—विश्वनाथ लाल "शैदा"

बापू

लौ धधकती चार दिशि हम अभी शिशु हैं नवल कलियाँ
छिन गयी हैं और हमको हरकनेवाली उँगलियाँ
क्या हुआ जो हैं नहीं अब सत्य-शिव आकुल नयन दो
गड़ गये है वे हृदयमें अब हमारे ज्योति-कन हो
आज बापू देख लेना

सत्य-गंगा प्रबल अति थे तुम अकेले जिसे धारे
विकल है अब सृष्टि, उसका वेग वह कैसे सँभारे
सृष्टिका उर फट रहा है, ये नहीं आँसू हमारे
या पुनर्निर्माणको अब दुह उठे हैं हृदय सारे
आज बापू देख लेना

रक्तमें अमृत-मयी गति संचरित तुम कर गये हो
स्वर्गकी निधियाँ धरापर तुम सँजोकर धर गये हो
भूल जाये पथ तुम्हारा बुद्धि तो है चूक सकती
आत्मज हैं हम तुम्हारे प्रकृति कैसे भूल सकती
आज बापू देख लेना

अंततक लड़ता तुम्हारा एक अनुचर बहुत होगा
विश्वका तम काटनेको एक दिनकर बहुत होगा
अग्नि-सुरसरिमें खिला जो एक अविचल बहुत होगा
जगतका मन मोहनेको एक उत्पल बहुत होगा
आज बापू देख लेना

जर्जरित तनको मिटाकर भ्रष्ट-मतिके पा गये क्या
लहरपर गोली चलाकर नीरका बिनसा गये क्या
ये अगण्य शरीर, अंतर जहाँ तुम बसते रहे हो
सत्यपर मिट जायेंगे जैसे कि तुम मिटते रहे हो
आज बापू देख लेना

—विद्यावती कोकिल

अमर ज्योति

साम्राज्योंके लिए काल-सा, दिखनेमें कंकाल रहा जो
जिसका अंतर कोहनूर था बाहरसे कंगाल रहा जो
जिसने अपनी दीप-रागिनी सीमाओंमें कभी न बांधी
तुमसे बिछुड़ गया वह दीपक, तुमसे बिछुड़ गया वह गांधी
और विश्वके नयनोंमें आँसू बनकर रह गया जवाहर
जीवनकी यह असह वेदना प्राणोंपर सह गया जवाहर
धैर्य बनो इस विश्व व्यथामें, आशाओंके बन्दन वारो
कुछ मत देखो केवल उसकी अमर-ज्योतिकी ओर निहारो

सूना-सूना पवन बह रहा, बदला नीलाम्बर भी अब है
जब ध्रुवतारा टूट चुकेगा तबका गगन आजका नभ है
मुक्त-देशकी पराधीन होनेपर जो हालत होती है
वैसी ही वीभत्स-रागिनी, देखो दिशा-दिशा रोती है
उधर व्यथासे आकुल सावनका वह मेघ उमड़ आया है
जन-समुद्रमें हाहाकारोंका तूफान उमड़ आया है
लेकिन इस घनघोर अँधेरेमें भी जगते रहो सितारो
कुछ मत देखो केवल उसकी अमर ज्योतिकी ओर निहारो

जन-हित जिंदा रहा सदा वह, भागा नहीं कभी भी डरकर
कैसे होते हैं शहीद, यह उसने बता दिया खुद मरकर
और बड़ी साधारण गतिसे चला गया वह उस कतारमें
ईसा जहाँ, गीत हैं अद्भुत मौन गगनवाली सितारमें
तुम साकार बनो उसके आदेशोंके पालन. ओ साथी
उसके गीतोंकी संस्कृतिमें बन जाओ तुम प्राण-प्रभाती
वह अपना है फिर आयेगा उदयाचलमें पंथ बुहारो
कुछ मत देखो केवल उसकी अमर-ज्योतिकी ओर निहारो

साथी, मंजिल नहीं मिली है चढ़ना है आगेकी सीढ़ी
यदि तुम यहीं रुक गये तो थूकेगी आनेवाली पीढ़ी
मधुबनके किंजल्क तुम्हीं हो तुमपर गांधीका जीवन था
तुम उसके ही पुण्य कि जिसका माली स्वयं बना मधुबन था
अपने प्राणोंको वह तुममें शीत बर्फ-सा गला गया है
वह इस युगका मृतक नहीं है युग-युग आगे चला गया है
वह बलिदान दे गया, अपने आकर्षण उसपर बलिहारो
उठो उठो तुम आज जरा उस अमर ज्योतिकी ओर निहारो

स्वयं धूपमें जला और विधिको अपनी छाया दे डाली
पूर्णाहुतिके लिए विश्व-मायाको निज काया दे डाली
सोचा इससे कल्पित आजादी नजदीक चली आयेगी
और शृंखला सब सपनोंकी जुड़ जायेगी, बढ़ जायेगी
अभिशापोंके तूफानोंसे इसीलिए जाकर उलझ गया
मेरे देश महाभारतका एक लाड़ला दीप बुझ गया
जड़से चेतन बनो तिमिरके दीपो, मरघटके अंगारो
कुछ मत देखो केवल उसकी अमर ज्योतिकी ओर निहारो

अस्त हो गयी थीं दिल्लीके मरघटमें अगणित हस्तियाँ
कितनोंके अस्तित्व मिट गये और बस गयी नयी बस्तियाँ
पर अब सदियोंकी रुग्णा-सी त्रस्त राजधानी बैठी है
कोटि-कोटि हाहाकारोंको लिये मूक वाणी बैठी है
ऐसा शोक कभी न हुआ अब जगतीका कण-कण रोता है
माताके दिलसे तो पूछो पुत्र - शोक कैसा होता है
किंतु तिरंगा रहो सम्हाले मुक्त देशके पहरेदारो
कुछ मत देखो केवल उसकी अमर ज्योतिकी ओर निहारो

—वीरेंद्र मिश्र

विश्वके महाप्राण

समय प्रार्थनाका ज्यों देखा चंचल गतिसे किया प्रयाण
स्यात् विदित था यही समय है होनेका जीवन निर्वाण
अमर 'अहिंसा-कवच' कसे तुम अभय मूर्तिका दे प्रमाण
महाप्राण, उस जन-समूहमें बढ़े हथेलीपर ले प्राण

रहे ताकते मुँह इतने जन किंकर्तव्य-विमूढ़ मलीन
थाती निखिल विश्वकी थे तुम, लिया एकने तुमको छीन
लोट गया माँके अंचलपर शिशुका तन हो प्राण-विहीन
स्थित समुदाय हो गया ऐसा जैसे नीर बिना हो मीन

रामनामकी धुन थी ऐसी लेनेतक जीवन-विश्राम
अमर रसायन-सा वसुधापर बरस पड़ा रसनासे राम
मूक हुई वाणी, कल्याणी भाषाका रुक गया प्रवाह
गोते खाने लगा निखिल जग, उमड़ा शोक-समुद्र अथाह

तुम्हें छीननेवालेने क्या पाया जानें वह भगवान
हम हताश तो यही कहेंगे यह विधिका विपरीत विधान
वा 'अहिंसा' ध्येय रहा हो जिनका उच्चादर्श महान
हिंसाका आक्रमण उसीपर यह कैसा विचित्र बलिदान

हे युग मानव, हे युग-ममत्व, हे युगवाणीके चिद्विलास
तुम हो अभेद्य, तुम हो अछेद्य, तुम हो अनन्त, तुम चिरविकास
मृत तुम्हें कहे साहस किसमें, ध्यानावस्थित तुम मूर्तिमान
तुम इस युगके इतिहास-रूप जन-जनके मनमें विद्यमान

—वेणीराम त्रिपाठी श्रीमाली

तीस जनवरी

तीस जनवरी—रक्त उछलकर मानव-मुँहपर आया
दानवता खिल उठी. हिल उठी अति मानवकी काया
पाँच बजे बुझ गया अचानक राष्ट्र-दीप, आंधीका
वेग हुआ कुछ शांत, सुन पड़ा अंत हुआ गांधीका

धरा हो गयी लाल, रक्त चंदन जन-जनने धारा
तुम तो अमर हो गये बापू, अमर हुआ हत्यारा
स्वर्ग हँसा, चल पड़ा मर्त्य वह मृत्युंजय अभिमानी
धन्य हुआ गोलोक, मिल गयी देवोंको भी वाणी

तुम मुट्ठी भर हाड़-चामके ओ दधीचि बलदाता
जरा-मरण-भव-बंध-भीतिसे मुक्त, सत्य, जगत्राता
नित प्रलंब आजानु-बाहु वरदान लुटाते अक्षय
तुम सोये, पर जाग रहा यह मंत्र तुम्हारा निर्भय

नहीं अहिंसा, शक्तिहीनता, नहीं क्षमा, कायरता
धर्म नहीं है द्वेष, प्रेम ही चिर-दिन सत्य अमरता
अनासक्त, निष्काम कर्म, गीता-वाणी कल्याणी
युग-युग पंथ अमर यह होगा, ओ युगके पथदानी

आज तुम्हारा मरण देखकर जीवन भी सकुचाया
आज देशके कोटि-कोटि कंठोंमें जय लहराया
शांति-सदन, ओ क्रांति-विधायक, शिरदानी निर्माता
जन-गन-मन अधिनायक जय हे भारत-भाग्य विधाता

—सर्वदानंद वर्मा

मुक्त बापू

कैसे तेरा आह्वान करें

तू भारत भाग्य-विधाता था, इस नवयुगका निर्माता था
तू दलित, दीन, पीड़ित, परवश जन-जनका सच्चा भ्राता था
हम रुँधे कंठसे कहो आज कैसे तेरा यशगान करें

हे सत्य-अहिंसाके प्रतीक, हे मानवताकी अमर लीक
जगती प्रकाश-पथपर चलना अबतक पायी है नहीं सीख
तू चला, अहिंसा-सत्य कहो, जगमें किसपर अभिमान करें

तूने माँकी तोड़ी कड़ियाँ, भाईपनकी जोड़ी लड़ियाँ
माताका मान बढ़ानेमें झेली कितनी दुखकी घड़ियाँ
तू उसे त्यागकर चला कौन अब उसको धैर्य प्रदान करें

—सावित्री सिंह 'किरण'

अमर ज्योति

दीपकका निर्वाण हो गया, ज्योति अभी है शेष
झंझाने समझा कि पराजित होगा मधुर प्रकाश
अंधकार खेलेगा खुलकर भर उरमें उल्लास
पर दीपककी परिधि छोड़कर ज्योति हो गयी मुक्त
आज असीमित होकर उसका गूँज रहा संदेश

अभी ज्योतिकी किरणोंमें है जाग रहा वरदान
अभी ज्योतिकी किरणें जगको सुना रही हैं गान
मिट्टीके पुतलो, तुम तममें भटक रहे हो, हाय
चलो वहाँपर दीप जहाँ है, जहाँ तुम्हारा देश

अंधकारके विस्तृत पटपर अभी ज्योतिकी रेख
जागरूक हो प्रति कम्पनमें कहती—राही, देख
यदि न अभीतक अपनेको तुम सके तनिक पहचान
मिट जाओगे, हो जायेगी कथा तुम्हारी शेष

—सिद्धनाथ कुमार

जागृत हो

निखिल स्वदेश, हाय ! तेरे नेत्र गीले थे
तेरे स्वर-तार सभी ढीले थे

दुर्निवार वेदना-व्यथासे है व्यथित तू
उरमें अशांत उन्मथित तू

वायु का प्रवाह रुका तेरे धरातलमें
ज्योति म्लान-सी है नभस्थलमें

देखकर हाय ! महाजीवनका ऐसा अंत
अंत ! अरे कौन कहाँ कैसा अंत

श्रीगणेश यह है नवीनके सृजनका
आद्यक्षर नव्य-भव्य-जीवनका

जिसके निमित्त सब धीर धनी भिक्षुक हैं
निखिल तपस्वि-जन इच्छुक हैं

जिसकी शुभाशा लिये मनमें
कितने प्रवीर परिश्रांत हैं भ्रमणमें

नश्वरता जिसमें हुई है अविनश्वरता
मृत्युमें हिली-मिली अमरता

हार कहाँ उसमें कहाँ है हार
अंतके दिगंततक उसका महाप्रसार

आजके ही आजमें उसे न देख
उसका विजय-लेख

कालकी तरंगोत्ताल-मालामें लिखित है
अगम अनंतमें ध्वनित है

उठ रे अरे ओ धर्म, कर्म, धृति, ध्यान, ज्ञान
धन्य वह कालजयी कीर्तिमान

कालकी कसौटीपर जिसका सुहेम-चिन्ह
जिसने किया है महातंक छिन्न

विश्वके प्रपीड़ितोंके अंतरसे
बोधका प्रदीप दीप्त करके

जिसने दिखाया—दीन दुर्बल नहीं है हीन
वह है निरस्त्र भी महत्वासीन

अपने अजेय आत्मबलसे
अन्यके जघन्य छद्म छलसे

मुक्त सर्वथैव वह एकमात्र स्वेच्छाधीन
देख अरे देख उसे, वह है नहीं विलीन

वह है स्वकीय जन-जनका
गुंजित हो मंगलकी भाषामें
निश्चित द्विधविहीन जागरित आशामें

वह है भुवनका उठ, रे अरे ओ गान
धन्य वह कालजयी कीर्तिमान्

भीति भयसे स्वतंत्र
आत्म-बलिदानी वह—जिसने जपा है महत् प्राणमंत्र

अक्षय है उसका अपूर्व दान
जाग्रत हो आज धर्म, कर्म, धृति, ध्यान, ज्ञान ।

—सियारामशरण गुप्त

तमसो मा ज्योतिर्गमय

ओ३म् असतो मा सद्गमय

अपनी कायाकी बातीसे लक्ष-लक्ष ये बातियाँ जला
अपना पुण्य प्रकाश छोड़कर अंधकारको दूर कर चला
ज्योति मृत्तिका-दीपकी महाज्योतिमें आज लय
तमसो मा ज्योतिर्गमय

यह धरतीका प्राण उड़ चला आज स्वर्गसे महामिलनको
संजीवनके लिए जीवने वरण कर लिया महामरणको
मृत्युञ्जय ! मर कर करो तुम अनंततक मृत्यु-जय
मृत्योर्मा अमृतं गमय

—सुधीन्द्र

बापूके महाप्रयाणपर

तीस जनवरी अड़तालिसको साँझ नहीं आ पायी
डूब गया भारतका सूरज, गहन अमा घिर आयी
सत्य-अहिंसा-मूर्त्ति, हाय ! हिंसाके हाथों टूटी
भारतकी वह निधि अमूल्य यों गयी अचानक लूटी

भारतके लघु धूलि-कणोंसे आहें निकल पड़ी हैं
उच्च हिमालयसे आँसूकी बूँदें बरस रही हैं
विश्व-सिंधुमें ज्वार उठा है, वज्र गिर पड़ा हमपर,
कोटि-कोटि कंठोंसे फूटे आज विकल क्रंदन स्वर

धीरजने धीरज छोड़ा है, दुखी हो उठा दुख भी
सचमुच काला हुआ देशकी मानस-निशिका मुख भी
पश्चात्ताप किया पशुताने, लाज लाजको आयी
धरतीका उर फटा, गगनके मुखपर कालिख छायी

चिता जली, बुझ गयी विश्वकी ज्योति अँधेरा छाया
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, सबने अश्रु बहाया
अग्नि-तेजका जिसकी वाणीने संचार किया था
जड़ताको जिसने चेतनका नव-संसार दिया था

कंकालोंमें जीवन-अमृत भरनेवाला बापू
शांति, सत्यसे स्वतंत्रताको वरनेवाला बापू
हमने खोया महापुरुष, भारतका भाग्य-विधाता
मानव-मुक्ति-दूत वह गांधी युग-पथका निर्माता

किरणें भी जिसके प्रकाशसे होती थीं आलोकित
जिसको छूकर धरा-धूलि भी हो जाती थी सुरभित
जीव-ब्रह्मका भेद-रहित वह द्रष्टा था सन्यासी
ऊर्ध्व शिखा था होम हुताशनकी बलिका अभ्यासी

बुद्ध, महाजातक, ईसा, सुकरात, महात्मा था वह
कोटि कोटि जनका प्यारा, ईश्वर, विश्वात्मा था वह
उसके प्राणोंकी हवि लेकर अब तो ज्योति जगा लो
बिलख रही है मानवता, पशुतासे उसे बचा लो

जमुना-तटपर भस्म शेष बन गया पंचभौतिक तन
वही भस्म जगतीके सूने मस्तककी हो चंदन
रख न सके स्वर्गिक विभूतिको मर्त्य लोकके प्राणी
स्वर्ग-लोकमें बुला ले गयी, उसे सुरोंकी वाणी

किंतु अमर है, अमर आज क्या, युग युगतक वह मोहन
युग-युग करते जायेंगे उस आत्माका आवाहन
उसकी अमर आत्मा भूपर अब भी मध्य हमारे
हमें ज्योति देगी धो धोकर जगके कल्मष सारे

युग-युगतक गति देंगे ऋषिकी आत्माके पावन स्वर
सत्य-बेलिको सींच दिया जिसने शोणित-कण देकर
शांति एकता रथको सारथि खींच गया जग-पथपर
आज हमें उसको पहुँचाना है पूरी मंजिलपर

उसकी हृद-वीणासे निकलीं मधुर प्रेम-झंकारें
आज विश्वके कण-कणमें बह उठीं प्रेमकी धारें
मरुथलमें भी जिसकी अमृत-वाणी निर्झर फूटे
पा उसका आलोक, विश्व अब तमस पाशसे छूटे

—सुमित्राकुमारी सिनहा

महानिर्वाण

चढ़ा आज ईसा शूलीपर, अविरल रक्त प्रवाह बहा
फिर भी, दया-क्षमाका मंडल मुख-मंडलको घेर रहा
वह सुकरात पी चला विषका प्याला, आँखें बंद हुईं
लो मिट्टीका पिंड उठा, उज्ज्वल स्वच्छंद हुईं

बोधिसत्वने कुशीनगरमें आज महानिर्वाण लिया
नहीं, नहीं, यह नहीं, आज बापूने महाप्रयाण किया
सजी आज किसकी अर्थी, उमड़ी है आज प्रलय आंधी
भारतका सौभाग्य सूर्य है अस्त, चले अपने गांधी

ठहरो, चिता लगाओ मत ओ निर्मम देश, महात्माकी
एक बार फिर चरण-धूलि ले लेने दो पुण्यात्माकी
धू-धू जला शरीर, हो गयी राख महामानव काया
आह अभागे देश सभी कुछ खोकर तूने क्या पाया

रो न, क्षुब्ध हो मत इतना, यह धरती यह आकाश फटे
श्रद्धांजलि दे पुण्य चरणमें, तेरा हाहाकार घटे
है असीम बन गयी आज उस तेरे बापूकी काया
अमर प्रकाश-पुंज बनकर वह अवनी-अंबरमें छाया

देख उसीकी मूर्ति रमी है आज प्राणके कण-कणमें
देख उसीकी ज्योति जगी है जन्मभूमिके जन-गणमें
खुला स्वर्गका वातायन, बापू है तुझे निहार रहा
हो अधीर मत राष्ट्र, तुझे ही अब भी खड़ा पुकार रहा

तुम भी मृत्युञ्जय हो मानव, तुम महात्माकी आत्मा
स्नेह-सुधा बरसाओ जगमें, हँसे धरामें परमात्मा

—सोहनलाल द्विवेदी

वह संध्या

वह संध्या आदित्य-पुरुषको लेकर जगसे चली गयी
सूना यह आकाश-धरातल, फिर मनुष्यता छली गयी
उदय-अस्तका एक सूत्रमय निश्चित लेखा-जोखा है
किंतु भाग्य सूर्यास्त हमारा, क्रूर कठिनतम धोखा है

बापू नहीं, आह भारतका कटकर जीवन-वृक्ष गिरा
देवोंकी अभिराम साधना, मानवताका मान गिरा
आह क्रूर हत्यारे, नरपशु, तूने इससे क्या पाया
राष्ट्रपिताका रक्त-पान कर तूने क्या मुँह दिखलाया

मनुका पुत्र अभी मनुष्यतासे है कितनी दूर खड़ा
कितने अंधकारमें कितने मूढ़ग्राहोंमें जकड़ा
सर्वसहा वसुंधरा बापूको धारण कर डोल गयी
डोल गयी चेतना विश्वकी, वाणी चली अबोल गयी

बापू, तुमको पाकर हमने जगका सब कुछ था पाया
अखिल विश्व-वैभव चरणोंपर स्वतः तुम्हारे झुक आया

अनासक्त तुम मानवताकी मूर्ति सजानेमें तत्पर
उदय-अस्त मिल गये, रहे तुम कर्मनिष्ठ जीवन-निर्भर

अतिथि, अंततः चले गये तुम हमको यह विश्वास न था
ममतामृतसे प्राण सिक्त थे कहीं तापका श्वास न था
देव, तुम्हारी स्मृति जीवन-क्रम, नवजीवन संदेश अमर
धारण कर हम विजय करेंगे मानवताका महासमर

—त्रिलोचन

भारत-भाग्य

आज गिरिका शृंग टूटा, आज भारत-भाग्य फूटा
विश्वके आकाशका सबसे बड़ा नक्षत्र टूटा

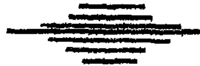
बुद्ध था, करुणा-द्रवित स्वर कह रहा था—अरे मानव
क्रोधको अक्रोधसे तू जीत, बन मत भील दानव

कृष्ण था, स्वर गूँजता था कर्म कर निष्काम रे नर
दुःख-सुखका ध्यान मत कर, बधिकने छोड़ा प्रखर शर

क्षमाके अधिदेवताने बधिकके भी हाथ जोड़े
प्रज्ञ-स्थित वैष्णव परमने 'राम' कहकर प्राण छोड़े

राष्ट्र ही अपना नहीं यह, किंतु मानव जाति सारी
मुक्ति पायेगी, करे यदि भक्ति चरणोंकी तुम्हारी

—श्रीनारायण चतुर्वेदी 'श्रीवर'



युगावतार बापू

कलियुगके अवतार-पुरुष, जगको सन्मार्ग दिखाते हो
मार सकेगा कौन तुम्हें खुद मर-मिटना सिखलाते हो
राज्य उठे, साम्राज्य उठे, कब कैसे, कितने, कहाँ कहाँ
गिरे सभी उस काल-गर्त्तमें थाह न मिलती कहीं जहाँ
रावणका साम्राज्य एक था क्रूर कंसका भी था एक
जग-विख्यात राज्य रोमनका वैभव जिसके अमित, अनेक
पर टिक सके न कोई भी, सब अंधकारमें लीन हुए
राम, कृष्ण, ईसाके सम्मुख ध्वंस हुए यशहीन हुए
बापू, ब्रिटिश राज्यसे टक्कर तुमने भी ली है डटकर
वर्षों उसका रोष सहा है, बिना जरा भी बच हटकर
जग-विजयी तुम ही हो बापू, अटल सत्य वह इस युगका
भारत तो आजाद हुआ अब त्राता होवे कलियुगका

—श्रीमन्नारायण अग्रवाल

युग-मूर्ति

तुम भीति-भाव-बंधन-विमुक्त
आलोकित-वसुधा स्नेह-युक्त
युग-उन्नायक, युग-प्राण-मूर्ति
प्रेमोज्ज्वल, पावन हृदय-स्फूर्ति
पीड़ित मानवता त्रस्त ध्वस्त
निश्चित, निर्भय पा वरद हस्त
सत्यान्वेषी, शुचि, सरल वेष
निर्बलके बल, रक्षक विशेष
उस धरा-धामके सौम्य भूप
सविनय वाणीके मूर्त रूप
धूमिल छायामें चिर प्रकाश
भारती क्षितिज उन्मेष-हास
सम्पूर्ण-अहिंसक नित्य शुद्ध
जय गांधी, जय अभिनव-प्रबुद्ध

—श्यामसुन्दरलाल दीक्षित

अवतार

ईसा फांसीपर झूले थे, पैगम्बर भी कुर्बान हुए
बापू सीनेपर गोली खा प्रभु-द्वारे तुमने प्राण दिये
तुमने ही तो आजादी दी, तुम भारत भाग्य-विधाता थे
तुम सत्य अहिंसाके प्रतीक, तुम राष्ट्रपिता जग-त्राता थे

तुम जन मन गण अधिनायक थे, मानवकी पूजा करते थे
विषके प्यालेपर प्याले पी विष-घटमें अमृत भरते थे
निज प्राण हथेलीपर लेकर नागोंसे खेला करते थे
तुम दया प्यार औ' क्षमा लिये हिंसाके बीच उतरते थे

तुम क्रांति शांतिके साथ साथ, पानीमें आग लगाते थे
दिशि दिशिमें ज्वाला भभकाकर, फिर तुम ही उसे बुझाते थे
तुम सत्य अहिंसाके बलपर, भारतकी नैया खेते थे
तुम सत्य अहिंसाके बलपर, अणुबमसे लोहा लेते थे

तुममें था ऐसा जाने क्या, जो पलमें मुकुट हिला देते
केवल दो मीठे बोलोंमें काँटोंमें फूल खिला देते
ओ अभय तुम्हें था भय किसका, तुम राम रहीम दुलारे थे
जग सचमुच तुमसे धन्य हुआ, तुम सारे जगसे न्यारे थे

तुम भीष्म पितामह थे बापू, थे गौतमके अवतार तुम्हीं
तुम देवदूत थे मनुज नहीं, थे महावीर साकार तुम्हीं
तुम गये कि जैसे कोटि-कोटि नयनोंका तारा टूट गया
तुम गये कि जैसे कोटि-कोटि प्राणोंका संबल छूट गया

तुम गये कि जैसे भूतलसे मानवताका आधार गया
तुम गये कि जैसे भूतलसे मानवताका अवतार गया

—श्रीमती शकुन्तलादेवी खरे

तमसो मा ज्योतिर्गमय

बुझी न दीपकी शिखा, असीममें समा गयी
अमन्द ज्योति प्राण-प्राण बीच जगमगा गयी

अथाह प्रेमके प्रवाहमें पली
अमर्त्य वर्तिका नहीं गयी छली
असंख्य दीप एक दीप बन गया
कि खिल उठी प्रकाशकी कली-कली

घनान्धकार जल गया स्वयं, नहीं हिली शिखा
प्रकाश-धारसे तमस-भरी धरा नहा गयी

अकम्प ज्योति-स्तम्भ वह पुरुष बना
कि जड़ प्रकृति बनी विकास-चेतना
न सत्य-बीज मृत्तिका छिपा सकी
उगी, बढ़ी, फली अरूप कल्पना

न बँध सका असत्-प्रमाद-पाशमें प्रकाश-तन
विमुक्त सत-प्रभा दिगंत बीच मुस्करा गयी

मरा न, कामरूप कवि बना अमर
कि कोटि-कोटि कंठमें हुआ मुखर
मिटा न, कालका प्रवाह बन घिरा
अनादि अंतरिक्षमें अनंत स्वर

न मंत्र-स्वर अमृत सँभाल मृण्मयी धरा सकी
त्रिकाल रागिनी अकूल सृष्टि बीच छा गयी

अनेकता अखण्ड एक हो गयी
अभेद बीच भेद-भ्रांति खो गयी
अबंध गंध बँध सकी न फूलमें
समष्टि बीच पूर्ण व्यष्टि सो गयी

जिसे न पाश तन बना, न छू सका मरण चरण
विराट चेतना अरूप बन स्वरूप पा गयी
बुझी न दीपकी शिखा असीममें समा गयी

—शम्भूनाथ सिंह

महाप्रयाण

आज सजल हैं अंतर-लोचन, भाव-जगत् है कजलाया-सा
धुंधियायी-सी रजत निशा है, स्वर्ण-दिवस है सँवलाया सा
तरु-तरु है प्रतिमा विषादकी, वृन्तोंपर छायी जड़ता-सी
पात-पात संज्ञा-विहीन है, मधु-कलियाँ हैं हीन-प्रभा-सी
भू-लुंठित तृण, गुल्म-लता सब, पुष्प-निचय दावाग्नि बरसता
नियति-नटीके रंग भवनमें, छायी है चहुँ ओर उदासी
बापूके निर्वाण शोकमें, मधुका दिन है अमा-निशा सा
आज सजल हैं अंतर-लोचन, भाव-जगत है कजलाया सा
छेड़ न मादक राग आज तू, पंचम स्वरमें बोल न कोयल
हियके इन आले घावोंको, कुहुक कुहुक कर खोल न कोयल
मानवता शोकाभिभूत है, तुझे कहाँका गाना सूझा
इन विषादकी घड़ियोंमें गा, प्राणोंमें विष घोल न कोयल
आज न तेरे बोल सुहाते, आज हृदय है बुझा बुझा-सा
आज सजल हैं अंतर-लोचन, भाव-जगत् है कजलाया-सा

दीप बुझ गया, सारा जग है ज्योतिर्धरका पथ निहारता
वीणा टूट गयी जीवनकी, व्याकुल-जीवन है पुकारता
हंस उड़ गया, सत्य-अहिंसाके मोती प्रिय कौन चुगे अब
सेतु बह गया, जो जन-जनको पार कलह नदसे उतारता
रिक्त हो गया स्नेहपूर्ण घट, जीवन फिर प्यासेका प्यासा
आज सजल हैं अंतर-लोचन, भाव-जगत् है कजलाया-सा
आओ राष्ट्रपिताकी स्मृतिमें, आँसूके दो हार पिरो लें
उसकी वाणीकी गंगामें अपने सारे कल्मष धो लें
उसके चरणोंकी पावन रज, अपनी आँखोंका अंजन हो
इस नैराश्य-जड़ित वेलामें, सहज स्नेहके दीप सँजो लें
तिमिर-पुंजमें आशाका आलोक मुस्करा दे ऊषा-सा
आज सजल हैं अंतर लोचन, भाव-जगत है कजलाया-सा

—शम्भूनाथ 'शेष'

दीपक सदा जलेगा

इतना स्नेह उँडेल गये हो, दीपक सदा जलेगा
दुर्गम-पंथ गहनतम कानन सर-सरिता-गिरि-गह्वर
नयी दिशा निर्माण कर गये तोड़ तोड़कर पत्थर
देख देख पद-चिह्न तुम्हारे मानव सदा चलेगा
हे दुर्बल तन, दृढ़मन तुमने स्वर्ग उतारा भूपर
हे मानवता-व्रती, भुला अपनत्व उठ गये ऊपर
सत्य धर्मकी वरद छाँहमें जीवन सदा पलेगा
स्वर्ण-किरणसे उतर भूमिपर कण-कण आलोकित कर
जीवन और मरण दोनोंमें सतत एकसे सुन्दर
इतना स्नेह उँडेल गये हो दीपक सदा जलेगा

—शालिग्राम मिश्र

जगाओ न बापूको नींद आ गयी है

अभी उठके आये हैं बज्मे-दुआसे
वतनके लिए लौ लगाके खुदासे
टपकती है रूहानियत-सी फिजासे
चली आती है रामकी धुन हवासे
दुखी आत्मा शांति अब पा गयी है
जगाओ न, बापूको नींद आ गयी है

नहीं चैनसे बैठने देती हलचल
जो हैं आज दिल्ली तो बंगालमें कल
यह पीरी, यह दिन-रातकी दौड़ पैदल
सदा कौम रखती है बापूको बेकल
तड़प जिंदगीकी सकूँ पा गयी है
जगाओ न, बापूको नींद आ गयी है

यह घेरे है क्यों रोने वालोंकी टोली
खुदारा न बोलो यह मनहूस बोली
भला कौन मारेगा बापूको गोली
कोई बापके खूँसे खेलेगा होली
जमीं ऐसी बातोंसे थर्रा गयी है
जगाओ न, बापूको नींद आ गयी है

सभीको है प्यार इस अजीजे-वतनसे
फिरंगीने जेलोंमें रक्खा जतनसे
वतनपर वह कुर्बान है जानो-तनसे
वतन उसको मारेगा पिस्तौल-गनसे
अबस मादरे हिंद शरमा गयी है
जगाओ न, बापूको नींद आ गयी है।

मुहब्बतके झंडेको गाड़ा है उसने
चमन किसके दिलका उजाड़ा है उसने
गरेबान अपना ही फाड़ा है उसने
किसीका भला क्या बिगाड़ा है उसने
उसे तो अदा अम्नकी भा गयी है
जगाओ न, बापूको नींद आ गयी है

अभी उठके खुद वह बिठायेगा सबको
लतीफोंसे पैहम हँसायेगा सबको
सियासतके नुक्ते बतायेगा सबको
नयी रोशनी फिर दिखायेगा सबको
दिलोंपर यह जुल्मत-सी क्यों छा गयी है
जगाओ न, बापूको नींद आ गयी है

अभी सिंध बाचश्म नमतक रहा है
लिये दिलमें पंजाब गमतक रहा है
अभी वारधा बम बबमतक रहा है
अभी रास्ता आश्रमतक रहा है
मुसाफिरको रास्तेमें नींद आ गयी है
जगाओ न, बापूको नींद आ गयी है

वह सोयेगा क्यों है जो सबको जगाता
कभी मीठा सपना नहीं उसको भाता
वह आजाद भारतका है जन्मदाता
उठेगा, न आँसू बहा देश माता
उदासी यह क्यों बाल बिखरा गयी है
जगाओ न, बापूको नींद आ गयी है

वह हकके लिए तनके अड़ जानेवाला
निशाँकी तरह रनमें गड़ जानेवाला
निहत्था हुकूमतसे लड़ जानेवाला
बसानेकी धुनमें उजड़ जानेवाला
बिना जुल्मकी जिससे थर्रा गयी है
जगाओ न, बापूको नींद आ गयी है

वह बादल जो खेतीपर बरखाको उट्ठे
वह सूरज जो धरतीकी सेवाको उट्ठे
वह लाठी जो दुखियोंकी रक्षाको उट्ठे
वह हस्ती बचाने जो दुनियाको उट्ठे
वह किश्ती जो तूफाँमें काम आ गयी है
जगाओ न, बापूको नींद आ गयी है

है सुकरातो-ईसाकी जुर्रत भी उसमें
श्री कृष्ण-गौतमकी सफकत भी उसमें
मुहम्मदके दिलकी हरारत भी उसमें
हुसेन इब्ने हैदरकी हिम्मत भी उसमें
अहिंसा तसद्दुदसे टकरा गयी है
जगाओ न, बापू को नींद आ गयी है

कोई उसके खूँसे न दामन भरेगा
बड़ा बोझ है, सर पै क्योंकर धरेगा
चिराग उसका दुश्मन जो गुल भी करेगा
अमर है अमर, वह भला क्या मरेगा
हयात उसकी खुद मौतपर छा गयी है
जगाओ न, बापूको नींद आ गयी है

वह पर्वत, वह बहरे-खाँ सो रहा है
वह पीरीका अज्मे जवाँ सो रहा है
वह अम्ने-जहाँका निशाँ सो रहा है
वह आजाद हिंदोस्ताँ सो रहा है
उठेगा, सेहर मुझसे बतला गयी है
जगाओ न, बापूको नींद आ गयी है

'शमीम' किरहानी

महाप्रयाण

ढल गया सूर्य, गल गया चाँद, तारे डबडब, धूमिल, उदास
लुट गया हिया, बुझ गया दिया जिससे घर घरमें था प्रकाश
खो गयी ज्योति जीवनदायी, विधवासी विह्वल पड़ी मही
लग रहा आज जैसे अब दुनिया रहने लायक नहीं रही
जनपद उजाड़, सुनसान-सियारोंकी सुन पड़ती हुआँ-हुआँ
तुम नहीं जले, मानवताकी जल गयी चिता, रह गया धुआँ
अब कहाँ शरण, हमको अपनी ही काली छायाएँ घेरे
तुम कहाँ आज ? हे राम, मुहम्मद, कृष्ण, बुद्ध, ईसा मेरे
वे कहाँ बोल
जिनके सँग झंकृत मंद्र मधुर वीणावादिनीके तार तार
सचराचर जाता डोल डोल शब्दों-शब्दोंमें सत्य-शोध
स्वर-स्वरसे झरती सुधा-धार उन्मुक्त विहग करते कलोल
जीवनका विष जल-जल जाता घुल-घुल बह जाता व्यथा भार
साधना सिद्धि बनती अमोल
वे कहाँ हाथ ? जिनकी छायामें कोटि कोटि दुखिया अनाथ
जीवन-आशा-विश्वास प्राप्त करते, पलमें होते सनाथ

हिंसा–ईर्ष्या–छल–दंभ-रूप दुर्योधनसे जिनके बलपर लड़ सके पार्थ
नयनोंकी पलक–पंखुरियोंसे झरता पराग
अबलाएँ फफक फफक रोतीं करुणा-जलसे आँचल धोतीं
पा जातीं फिर शिशुकी ममता, बिखरा सुहाग
वे कहाँ श्रवण ? जो सोते–जगते सदा सजग
सुनते विराटकी धड़कनका आह्वान सुभग
पल पल अकुला अकुला उठते, मर्माहत–अंतर महाप्राण
सुन–सुन पीड़ितका आर्तनाद, मानवताका क्रंदन महान
वे कहाँ चरण ? जो जहाँ कहीं सुनते पीड़न, दुख, दैन्य, दाह
सुध–बुध खोये दौड़े जाते विह्वल बाहोंमें लिपटाते
थकते न कभी
रुकते न कभी
पी जाते मधु मुस्कानोंमें, जन जनकी व्यथा कराह– आह
फेरते हाथ घावोंपर, सहलाते अंतर
बस स्पर्शमात्रसे नव–संजीवन देते भर
वह कहाँ मधुर–मुस्कान ? कि जिसकी आभामें खिलतीं कलियाँ, हँसते प्रसून
विक्षुब्ध–सिंधु होता प्रशांत तूफान ठिठक जाते झंझा नत, पदरज लेती
चूम चूम
सत्–चित्–आनन्दमयी आकृति रवि–चन्द्र और तारक–दीपक जिसकी
अनुकृति
खो गयी कहाँ
खो गयी कहाँ ? बाहर भीतर, सब अंधकार
विकराल–काल-सा मुँह खोले फुफकार रहा तम दुर्निवार
तुम कहाँ आज हे कोटिबाहु, हे कोटिपाद, हे कोटि नयन
युगकी विभीषिका भेद पुनः कर दो विकीर्ण तम–हरण–किरण
तुम जो आये थे धरा बीच युगधर्मरूप श्रद्धासे संचालित काया,आभा अनूप
क्षेत्रज्ञ, कर गये कर्म–क्षेत्रको चिर–पावन तुम जो निर्भय, हँसमुख, विनीत

चलते चलते कर जोड़ सहज दे गये मृत्युको नव-जीवन
बरसो जन-जनके अंतरमें हे ज्योतिर्मय
तुम जहाँ कहीं भी हो बनकर आशीष-वचन
विचरो मानवताके पावन मानसमें अशरण-शरण-तरण
दे दो अपने अनुरूप नयी संस्कृतिको नव विश्वास-सृजन
हे शक्तिस्रोत कर दो हमको अपनी आभासे ओतप्रोत
हम वे अंकुर, जिनको तुमने मिट्टीकी जड़ता तोड़-फोड़
जोता गोड़ा बोया-सींचा करुणाके श्रम जलसे पसीज
वे रक्त-बीज, जो उगे तुम्हारे तपकी गर्मीसे तपकर
जाड़ा-गर्मी-बरसात झेल अपने ऊपर दे गये अपरिमित स्नेह घना
जिनको पनपानेकी धुनमें तुमने जीवनके सुख-दुखको सुख-दुख न गिना
जो सदा फले-फूले-फैले मनमें विचार
घर-बार, छोड़ कुटिया छायी ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ ठुकरायी
जगते ही जगते बिता दिया जीवन सारा
हो गयी धन्य धरती पा ऐसा रखवारा
तुमने चाहा जालों डालोंपर शीतल सघन-वितान तने
वृक्ष बने ऐसा विशाल वट-
जिसकी छायामें युग युगतक जीवन-यात्रासे चूर
थके-माँदे पंथी खोयें थकान
भूले-भटकोंको राह मिले, नव आशा, नव उत्साह मिले
मंजिल पानेकी मूल-प्रेरणाका उठान
जीवनका शाश्वत-बिरवा यह पथिकोंके लिए फले-फूले
आँधी-पानी -उल्का-तूफान-बवंडरको हँसकर झेले, सिहरे न काँपे
जड़तक न हिले, इसलिए बन गये स्वयं खाद
सदियाँ बीतें युग कल्पें मिटें मानवता कभी न भूलेगी
हे माली, यह उत्सर्ग मूक बलि हो जानेकी अमरसाध
यदि हम हैं देव तुम्हारे ही जोते-बोये-सींचे अंकुर

यदि हम है देव, तुम्हारे ही मिट्टीकी संचित-शक्ति मुखर
तो बापू, हम निर्द्वंद तुम्हारे आदर्शोंकी छायामें
यह दीपक सत्य-अहिंसाका पल भर न कभी बुझने देंगे
विश्वास-प्रेमकी वेदीपर झंडा न कभी झुकने देंगे
जब तलक रक्तकी एक बूंद भी शेष हमारी कायामें
कालीदहके कालिया नागको फिर नाथेंगे कुचलेंगे
जहरीले दांत उखाड़ सिंधुकी लहरोंमें लय कर देंगे
हम अनाचार-बर्बरता-हिंसासे कर देंगे मुक्त मही
कहने सुननेको भी न मिलेंगे आस्तीनके सांप कहीं
बापू, हम लेते शपथ तुम्हारे सत्य-प्रेम-मय जीवनकी
अंतिम आहुतिके क्षणमें बिखरे उष्ण रक्तमय चंदनकी
हत्यारेके प्रति क्षमाशील उन्मुक्त हृदय अभिनंदनकी
हम एक आनपर कोटि कोटि प्राणोंकी भेंट चढ़ा देंगे, सपनोंको सत्य बना देंगे
भाई भाई न लड़ेंगे अब बिछुड़ोंको गले लगायेंगे
हम अंधकारकी छातीपर नव जीवन ज्योति जगायेंगे
रावणका कारण-बीज नष्ट करनेको उद्यत वसुंधरा
मिट नहीं सकेगी शांति-स्नेह-समताकी निर्मल परंपरा

—शिवमंगल सिंह 'सुमन'



'राम' तुम्हारा

लिये अंकमें हिंदू-मुस्लिम राष्ट्र-पिता अवतारी
सूलीपर चढ़नेकी की थी कई बार तैयारी
किंतु बचाया बार-बार भारतने वे आश्वासन
अखिल राष्ट्रको मार गया आकरक किंतु एक जन
खुला रहा अनवरत अभय-पथ अंतर्धाम तुम्हारा
रहा अंततक साथ तुम्हारे स्वरमें "राम" तुम्हारा
आभापर आभास क्षमाका करुणा कांति हृदयमें
विनय विभासित थी पलकोंपर देव, तुम्हारे लयमें
एक दिव्य ज्योत्स्ना, एक रस, रहा एकसम राही
जीवनमें जीवनतक औ जीवन-पर्यंत सदा ही
हा ! बापू पी गये हलाहल हमें अमृत-घट देकर
आप सो गये शांत प्रलयमें अक्षय अटको देकर
पल-पल है बढ़ रही वेदना औ विपत्तिका घेरा
अखिल राष्ट्रकी आँखोंमें छाया है आज अँधेरा
इस विपत्तिमें केवल बल बलिदान तुम्हारा होगा
कम्पित-युगका स्थान अडिग प्रस्थान तुम्हारा होगा
हो शरीरसे दूर, हृदयके निकट और तुम आये
अब भी खड़े समक्ष धरापर निज लकुटिया लगाये
आँख खोल लो देख समयको आँक रहे हैं बापू
पल-पल जलते सूर्य-बिम्बसे झाँक रहे हैं बापू
सुनो मधुर ध्वनि "रघुपति राघव राम" उन्हींकी आती
"एकला चल" गानकी अनुपम तान उन्हींकी आती
बापू देखो बोल रहे हैं सुनें सभी पहिचाने
"वैष्णव-जन तो तेने कहिए जो पीर पराई जाने"
चर्खा चीर रहा है तमको, गीता बोल रही है
पशुताको पहिचान 'अहिंसा' हृदय टटोल रही है

अमर हुए वे अविनश्वर हैं बापू नहीं मरे हैं
कंधोपर चालिस-करोड़ बच्चोंके हाथ धरे है
बच्चे हम नादन तुम्हें पहचान न पाये बापू
आज रो रहे फूट-फूटकर शीश झुकाये बापू
मार चुका इस्लाम स्वयं ही हसन-हुसेन सही है
ईसा औ सुकरात मरे अपनोंसे, झूठ नहीं है
पर कलंक हिन्दूके सिरपर था न स्वयं संघाती
बनकर वह भी कभी चीर सकता उस जनकी छाती
जिसने उसे निकाल मृत्युसे अमृत-कणसे सींचा
अपनी अंजलिसे उसका दुर्बल दासत्व उलीचा
वह कलंक लग चुका लाख हम शीश धुनें या रोयें
बोल हिमालय किस सागरमें डूब उसे हम धोयें
इस कलंकका दाग विनयके वारि-क्षमाके जलसे
धोयें हम अनवरत प्राणके पश्चात्ताप-अनलसे
बापू, तुम दे गये ज्योति जो उससे ही निखरेंगे
अपने हृदय निकाल तुम्हारे तनका घाव भरेंगे
अधिक न कह सकता कवि इस क्षण काँप रही है बोली
भारतके बच्चे-बच्चेको आज लग गयी गोली

—शिवसिंह 'सरोज'



पैगम्बर ओ

चले गये तुम
ज्योतिर्मयकी खुली गोदमें चले गये तुम

जो करता नेतृत्व तुम्हारा रहा तिमिरमें
जीत-हारमें, समरस्थलमें, युद्ध-शिविरमें
जो करता श्रृंगार तुम्हारा किरण-करोंसे
ज्योति-वस्त्रके अलंकरणसे तमस-अजिरमें

उस अखण्ड शाश्वत प्रकाशमें चले गये तुम
मानव-मनके मुग्ध हास, हे, चले गये तुम
चले गये तुम जन-जनके उच्छ्वास-श्वासमें
ढले-ढले तुम सुधा-तृप्ति बन प्राण-प्यासमें

समा गये तुम कोटि-कोटि बाहोंकी नसमें
मिले-मिले तुम कोटि-कोटि जीवनके रसमें
चले गये तुम अमर शहीदोंको संदेश सुनाने
'हैं स्वतंत्र जनगणकी सत्ता गाने मुक्त तराने'

चले गये तुम अमर शहीदोंको कुंकुम मलनेको
अमरोंकी दुनियामें बनकर हेम हास ढलनेको
चले गये तुम, चले गये तुम, पैगम्बर ओ
अमृत बाँटकर नीलकण्ठ ओ, अभयंकर ओ

—शिवमूर्ति मिश्र 'शिव'

अमर गांधी

आज सारा विश्व रोता है कि गांधी मर गया है
मर गया है, किंतु जीवनको अमर वह कर गया है

दीपको बुझते हुए देखा अँधेरा भी हुआ है
किंतु प्राणोंमें प्रखरतर वह उजाला भर गया है

हिल नहीं सकते अधर-दल, कंठ भी है मौन उसका
किंतु अनुपम मौन उसका भर मधुरतर स्वर गया है

मौत भी शरमा रही है युग-पुरुषपर वार करके
खून उसका जिंदगीका भर सरस निर्झर गया है

छीन सकता कौन जालिम,युग-पुरुषकी रूह हमसे
जो कि दिल-दिलमें हमेशाके लिए कर घर गया है

वह इशारा कर गया है, वह इशारा कर रहा है
कौन कहता है कि हमको छोड़कर रहबर गया है

विश्व सारा देह उसकी और वह जग-चेतना है
प्राणका बलिदान दे इंसान बन ईश्वर गया है

—हरिकृष्ण 'प्रेमी'

चिता जलती है

आज आँसूमें छलकती है रवानी किसकी
हर घड़ी मुँहसे निकलती है कहानी किसकी
हमको रो-रोके कथा आज सुनानी किसकी
छिप गयी मौतके पर्देमें निशानी किसकी
किसको सीनेमें बिठा करके जगत रोया है
आज माताने कहो कौन लाल खोया है

दिन ढला देशका, या वह प्रलयकी शाम हुई
या कि तारोंकी छटा मौतका पैगाम हुई
उनके रहनेसे प्रजा प्रेमका परिणाम हुई
हिंदकी खाक कहीं भी नहीं बदनाम हुई
जिंदगी भर तो पसीनेसे रहे तर करते
सींच गये अब वे लहूसे उसे मरते-मरते

जिस जगह खून गिरा, वह जगह पावन बन जाय
इतनी आँखें हों निछावर—वहाँ सावन बन जाय
हाथ भर फर्शका टुकड़ा हमें वतन बन जाय
हम गरीबोंके लिए आज वही धन बन जाय
हाय, जमुना इसी संदेशपर रोती होगी
बढ़के दो हाथ 'चिताभूमि' को धोती होगी

कौन है, जिसकी नहीं 'आह' गमसे उठती है
एक 'मातम' की खबर इस 'सितम'से उठती है
हमारी आँख सदा जिसके दमसे उठती है
उसीकी लाश जमानेमें हमसे उठती है
उठ गयी लाश इस कोहरामसे पहले—पहले
बुझ गया दीप मगर शामसे पहले—पहले

खून आँखोंसे बहा और चिता जलती है
जिसमें चैन कहाँ और चिता जलती है
हम जले जाते यहाँ और चिता जलती है
जल रहा सारा जहाँ और चिता जलती है
उड़के चिनगारियां कहती हैं बचो हमसे आज
हमारी गोदमें आया है वतनका सिरताज

फिर हमें तार न लो तो तुम्हें शपथ अपनी
फिरसे अवतार न लो तो तुम्हें शपथ अपनी

फिरसे यह भार न लो तो तुम्हें शपथ अपनी
फिरसे पतवार न लो तो तुम्हें शपथ अपनी
शपथ है देशकी, इस कौमके पसीनेकी
थी तुम्हें आस 'सवा सौ' बरसके जीनेकी

—हरिराम नागर

बापू

ये वो शक्ति थी जो दुनियाको हिला देती थी
ये वो बूटी थी जो मुर्दोंको जिला देती थी
ये वो ज्योति थी जो अंधोंको सुझा देती थी
ये वो ऊषा थी जो सोतोंको जगा देती थी

इसीने कौमकी किस्मतको भी जगाया था
गुलाम मुल्कको आजाद करने आया था

ये वो हस्ती थी जो तोपोंको भी शरमाती थी
ये वो हस्ती थी जो साम्राज्यको कँपाती थी

ये वो हस्ती थी जो बेखौफ हमें करती थी
ये वो हस्ती थी न मरनेसे कभी डरती थी

जर्रे-जर्रेमें तपस्याका तेज छाया था
गुलाम मुल्कको आजाद करने आया था

यही वो दिल था भरा कौमका जिसमें गम था
यही वो दिल था जो दो नदियोंका संगम था

यही वो दिल था जो उम्मीदसे मुनव्वर था
यही वो दिल था अहिंसाका बना मंदिर था

इसीमें खल्कका दुख-दर्द सब समाया था
गुलाम मुल्कको आजाद करने आया था

बड़े नसीबसे ये पाक रूहें आती हैं
जलीलो खारको इन्सानियत सिखाती हैं
भूले-भटकोंको रहे रास्त ये दिखाती हैं
गालियाँ सहती हैं, और · गोलियाँ भी खाती हैं
हमारे वास्ते जीने व मरने आया था
गुलाम मुल्कको आजाद करने आया था
भक्त भगवान्‌का युग-धर्मका पुजारी था
साधु था, संत-महात्मा था वो अवतारी था
शक्तिका पुंज था, वह मुक्तिका अधिकारी था
कौमकी जान था तक़दीर वो हमारी था
आत्मिक शक्तिसे संसार तरने आया था
गुलाम मुल्कको आजाद करने आया था
बुद्धकी शांति थी ईसाकी नम्रताई थी
शिवाकी शूरता, प्रतापकी दृढ़ाई थी
रामकी धीरता और कृष्णकी चतुरायी थी
गांधी रूपमें साक्षात् शक्ति आयी थी
प्रेमकी ज्योतिसे हर दिलको भरने आया था
गुलाम मुल्कको आजाद करने आया था
रूह रहती है सदा जिस्म तो शय फानी है
ऐसी हालतमें तेरा कत्ल क्या नादानी है
जिंदा जावेद तू संसारमें लासानी है
मौत तेरी नहीं, यह कौम पै कुरबानी है
तूने इस देशकी अजमतका गीत गाया था
गुलाम मुल्कको आजाद करने आया था
तेरे मातममें गुलोबर्ग भी कुम्हलाये हैं
गमगीं इन्सान हैं, हैवान सर झुकाये हैं।
अब न बापूकी कहीं शक्ल देख पायेंगे
किसके चरनोंकी धूल सर पै हम लगायेंगे

तुमने ही कृष्णका संदेश समझ पाया था
गुलाम मुल्कको आज़ाद करने आया था
हमसे अपराध हुआ था हमें समझा देते
तुम तो बापू थे बड़े, ताड़ते-धमका देते
जिनके हितसे न पिता, स्वप्नमें भी मुख मोड़ा
उन बिलखते हुए बच्चोंको हा ! किसपर छोड़ा
हम तो बच्चे थे, हमें प्रेमसे अपनाया था
गुलाम मुल्कको आजाद करने आया था
चिता तेरीमें महापाप हमारा क्षय हो
फ़िरकाबन्दी न रहे, मजहबी कजिया तय हो
एकता प्रेम-मुहब्बतकी फिजा हो—लय हो
राष्ट्रके प्राण पिता गांधी तेरी जय हो
बड़े नसीब हमारे जो तुझे पाया था
गुलाम मुल्कको आजाद करने आया था

—हरिशंकर शर्मा

करुणामयसे

गौरव-दाता है नारि जातिका जो देव, आज
ऐसी मन आवे, भर प्याला विष पीजिये
करुण कथा है बड़ी मरम कथा है यह
करुणायतन धर ध्यान सुन लीजिये
कोखका कलंक कालिमा हो निज देशकी जो
गुरु-जन-घाती हो जो क्षमा मत कीजिये
ऐसे पूतसे तो भला पाहनको जन्म देना
ऐसी जननीसे भला बाँझ कर दीजिये

—होमवती देवी

सूरज डूब गया

मानवताके हरे जख्मका मरहम पोंछ लिया पशुताने
जिसके वरद बाहुके नीचे दुनियामें जीवन था निर्भय
जिसका वर्तमान होना ही दुर्ग मनुजताका था दुर्जय
निःसंशय होकर जिसके पीछे-पीछे युग चला आजतक
आज उसीके ममताके दामनको नोच लिया शिशुताने

और कौन रह गया विश्व-मानवपर मरने-जीनेवाला
नीलकंठ-सा मंथित जन-मन-सिंधु गरलको पीनेवाला
प्रेम-सूत्रमें शांति-सुईसे गूँथ रहा था हृदय-हार जो
विश्व-बागको उस मालीसे वंचित हाय! किया जड़ताने

जगी सृष्टि-वीणाके तारोंकी झंकार सो गयी सहसा
उगी और उगते ही उदयाचलपर किरण खो गयी सहसा
कमल-पत्रपर वारि-बिंदु-सा दुनियामें देवत्व दिखा था
युग-युगके तपके दुर्लभ फलको यों लुटा दिया लघुताने

जीवन विजित बाँधकर जिसको अपनी सीमित आयु-परिधिमें
काल पराजित डाल अमृतको अपने अतल मृत्यु-वारिधिमें
जीवन मृत्यु रुदनरत दोनों अवश विफलतासे कातर हो
बापूको युग-युगतक मन-मंदिरमें बिठा लिया जनताने

अमर लोकको धरतीने सबसे दामी बलिदान दिया है
मंदिरमें मूरत रखकर अपना जीवित भगवान दिया है
मिली स्वर्गकी सुर-वीणाको अपनी बिछुड़ी हुई रागिनी
जगको जयका अश्रु-भरा ही गौरव किंतु दिया विभुताने

—हंसकुमार तिवारी

मानवताके प्रथम चरण हे

तुम थे चिर शाश्वत, नित नूतन, सत्य-अहिंसामें रत प्रति क्षण
आजादीकी नवल वधूके सत, शिव, सुंदर–वरद वरण हे
मानवताके प्रथम चरण हे
जो 'निष्क्रियता' के है पुतले उन्हें 'क्रान्ति' की अमर शपथ दे
है अज्ञानतमस फैला जो उसका होवे शीघ्र हरण हे
मानवताके प्रथम चरण हे
देव, तुम्हारे संयम द्वारा पैशाचिक बल है सब हारा
थे निश्चय ही अखिल जगत्‌की तुम अति पावन सुखद शरण हे
मानवताके प्रथम चरण हे

—क्षेमचंद्र 'सुमन'

तरसेगा, लहलहानेको, अब एशियाका बाग

ऐं कौम, अब न छूटेगा दामनसे तेरे दाग
गुल तूने अपने हाथसे अपना किया चिराग
गांधीको कत्ल करके, वो तोड़ा तूने फूल
तरसेगा लहलहानेको अब एशियाका बाग
तास्सुबका अँधेरा ले गया शमये फरोजाको
खुद अपने हाथसे रंगी किया वहशतने दामोंको
गला घोंटा गया जिस सरजमींपर आदमीयतका
वो तरसेगी हमेशाके लिए अब नामे इन्साँको
तास्सुबकी भी दीवानगीकी भी हद है
अदावतकी भी दुश्मनीकी भी हद है
हुआ कत्ल गांधी सा मोहसिन तुम्हारा
बताओ तो, मोहसिन–कुशीकी भी हद है

—पाकिस्तान रेडियो

व्योमसे

पाँव पखारनेके लिए, बादलोंको यहाँ आजसे मोड़ न लाना
व्योम ! सुनो, अब आरतीके लिए विद्युत खंडको फोड़ न लाना
अर्घका काम नहीं है, मयंकसे आगे पियूष निचोड़ न लाना
जा चुका है युग-देवता, अर्चनाके लिए तारिका तोड़ न लाना
हे महाप्राण गया उसी ओर, कहीं लकुटीका सहारा न टूटे
पूरा सँभालते जाना, कहीं उसकी गतिकी वह धारा न टूटे
रक्त रंगी हुई है नभ भू उसका कहीं एक किनारा न टूटे
पूरा प्रकाश रहे पथमें, किसी ओरसे एक भी तारा न टूटे

—सभाजीत पांडे 'अश्रु'

(इस कविताकी रचना श्री 'अश्रु'जीने मृत्यु शैय्यापर पड़े पड़े किया है)

बापू

पशुताकी घटना कुछ ऐसी कालुषमय होती है
लिखते उसे लेखनी भी काले आँसू रोती है
विषकी बहुत लताएँ होतीं जगतीके उपवनमें
मूर्त पाप मैंने न कभी देखा था इस जीवनमें
उस दिन देखा दिल्लीमें पिस्तौल लिये वह आया
जिसने मानवताके ऊपर अपना हाथ चलाया
कोटि कोटि नर हत्याकी लीलाएँ अगणित जगमें
आज अहिंसापर प्रहार होता हिंसाके मगमें
वह हिन्दू जो वृक्ष, मृतिका, पत्थर पूजा करता
वह हिन्दू जो चींटी तककी पीड़ाओंको हरता
वध करता उसका जो जाता है भगवान भजनको
जिसका शीश झुका अपने वधकरनेवाले जनको

किंतु अहिंसा सह लेगी ऐसे प्रहार पाशवको
गांधीजीका रक्त सींचता इस कोमल पल्लवको
वह गांधी जिसने नव भारतको अभिमान दिया है
जिसने हमको कर स्वतंत्र जगमें अभिमान दिया है
जिसने सत्य-अहिंसाका हमको वरदान दिया है
जगतीको मानवताका संदेश महान दिया है
मर न सकेगा, मर न सकेगा वह तो सदा है
मानव मारें उसको जो अवतार अमरताका है
आज एकताकी वेदीपर तू बलिदान हुआ है
जगके कोने कोने तेरे यशका गान हुआ है
भारतसे जो तेरा आज प्रयाण महान हुआ है
मानवताके पावन पथपर यह अभियान हुआ है
हम लोगोंको तुझपर हो विश्वास प्रलयतक बापू
सत्य, अहिंसाके ही हों हम दास प्रलयतक बापू
उर आलोकित करे तुम्हारा हास प्रलयतक बापू
भारतके कण कणमें करो निवास प्रलयतक बापू

—'बेढब' बनारसी

हमने दर्शन कर लिये भगवानके

फटे दिल थे हमारे सी गया बापू
हमें देकर अमृत, विष पी गया बापू
उस की यह महत्ता और सत्ता है
कि मरकर और भी अब जी गया बापू
यह नैया डगमगाती खे गया बापू
हमें उस पार सकुशल ले गया बापू
भले मरना, न करना तुम बुरा जगका
यही सन्देश मरकर दे गया बापू
बिलख कर कह रहे हैं सब गया बापू
रहा अब पासमें क्या, जब गया बापू
अगर रोते हो तो तुम बेधड़क रो लो
कि रोना रह गया है अब, गया बापू
सृष्टि रोयी, शत्रु रोये निधन उसका जानके
भाग्य ऐसे हो नहीं सकते कभी इन्सानके
बेधड़क हमको यही सन्तोष है, यह गर्व है
हमने इस जीवनमें दर्शन कर लिये भगवानके

—'बेधड़क' बनारसी

विश्व व्याकुल रो रहा

क्रूरताके कुलिश चरणा-हत व्रणोंका भार लेकर
रक्तके आँसू बहाती शान्ति सुख-बलिदान देकर
तलफलाती और सिसकती, जब मनुजता रो रही थी
देख अपने पास भीषण लाजमे जब खो रही थी

द्रौपदीके लाज-रक्षक-बन कहाँसे आ गए तुम
प्रेमका सन्देश गाकर शान्तिघनसे छा गए तुम

विश्व पागल गर्वके उस तुङ्ग गिरिपर चढ़ रहा था
चपल गतिसे विषम पथपर, लड़खड़ाता बढ़ रहा था
प्राप्त कर प्रभुता प्रकृतिपर, दर्पसे दुर्दान्त दानव
देखकर विज्ञानका बल, हो रहा था भ्रान्त मानव

गर्त्त भीषण सामनेका, देख भी वह था न पाता
पतन पथपर अग्रसर जो, था न होना समझ पाता

सत्य-ऊर्जस्वल अहिंसाके सुधाकर ! तुम उदित हो
स्मितिकिरनसे पथ दिखाते, चल पड़े थे तुम मुदित हो
विश्व-प्रेमी देवताको क्रूर ! कैसे मार पाया
उस अहिंसाके पुजारीका हृदय शोणित बहाया

जनमतेही वधिक, निर्मम क्यों न तूं था मर गया रे
देशको करने कलंकित, जो बचा तू रह गया रे

आज मानवता-तुलाका, मान पल-पल खो रहा है
आज नरका कर्म कुत्सित, देख दानव रो रहा है
बुद्धका उपदेश पावन, आज मूर्छित सो रहा है
आज जिन मुनिका वचन भी, निष्फल हो रहा है

रो रहा है पवन सनसन, गगन तारक रो रहे हैं
ओसके आँसू बहकर, आज कन-कन रो रहे हैं

दुःख-मूर्च्छित तरु-लताएँ, आज रह-रह कँप रही हे
क्षुब्ध सागरकी तरङ्गे, आज क्रन्दन कर रही है
आज खोकर पथ-प्रदर्शक, विश्व व्याकुल रो रहा है
आज रोकर विकल भारत; विश्व वैभव खो रहा है

पाप धोकर रक्त-कणसे शान्त बापू सो रहा है
आज सोकर चिर-निशामें, ज्योति बापू हो रहा है

शक्ति दो बापू चले हम, चरण-चिन्होंपर तुम्हारे
भक्ति दो बापू ! बने हम, अचल अनुगामी तुम्हारे
कवच धारण कर अहिंस-का बढ़े संघर्ष पथपर
शान्तिकी फहरे पताका, प्रेमबलसे हर्ष पथपर

—करुणापति त्रिपाठी

सत्ये येन दृढं पदं विनिहितं, वैराग्यमूर्तिश्च यो
दुर्धर्षा अपि येन राजपुरुषा नम्रीकृताः स्वौजसा
यश्चात्मैकबलस्थिरः स्थितमतिः स्वाधीनतैकात्मको
नासीदस्ति भविष्यति क्षितितले गांधीसमानः कृती

आङ्ग्लग्राहनिगीर्णभारतधरा स्वातन्त्र्यरत्नं विना
युद्धेनैव पुनस्ततोऽधिगतवान् शान्त्यायुधेनाप्यहो
इत्थं योऽद्भुतयुद्धकौशलनिधिः ख्यातो जगन्मण्डले
नासीदस्ति भविष्यति क्षितितले गांधीसमानः कृती

नानाद्वीपनिवासिवन्द्यचरणो यो भारताग्रेसरो
भूत्वा भारतमात्मशासनपथे संस्थापयामास यः
सोऽयं भारतभानुरद्य विधिना नीतः कथाशेषताम्
नासीदस्ति भविष्यति क्षितितले गांधीसमानः कृती

युगप्रवर्तकः श्रीमानतिमानवविक्रमः
महात्माजी विजयते जनहृन्मन्दिरालयः
भाहीनं भारतं जातमहिंसाऽद्य निराश्रया
निराधारा भारतीया महात्मनि दिवंगते

—भाऊशास्त्री वझे
—नारायणशास्त्री खिस्ते
—गोपालशास्त्री नेने

आंग्लेयैर्दलिता तुरुष्कततिभिः सम्पेषिताऽहर्निशं
भीतिं प्रापितसिंहजेव निभृतं कालं नयन्ती मुहुः
त्वज्ज्ञानेन विनष्टमोहकलिलाऽऽश्वासं समातन्वती
दत्वा जन्म तवाद्य भारतमही गर्वायते भूरिशः

—कमलाकान्तत्रिपाठी

लोकसेवनरतस्य गान्धिनः शोकपूरितवियोगवैखरी
वायुना प्रचलितेव धूमिका सर्वतोभुवनमाशु संगता
दिङ्मुखं तमसि नष्टदर्शनं जातुदुःखमभवत्समन्ततः
अम्बरंतरलतारकं निशाडम्बरं न व्यरुचच्छुचा तदा
सर्वनिन्द्यमतिदारुणं महत्पातकं त्रिभुवनेषु कुर्वतः
किन्नु ते न पतिताऽशनिस्तदा पाप ! मूर्धनि नराधमाधम
सर्वलोकगतजीवराशिना सर्वदार्चितमचिन्त्यवैभवम्
हंत ! ते प्रचलिता कथं भुजा हन्तुमेनमतिपावनं भुवि
किन्नु ते कृतमनेन विप्रियं सर्वभूतकरुणार्द्र चेतसा
येन नष्टमतिरेवमाचरन् दृष्टवानसि न लज्जितं त्वया
सर्ववर्णसमभावनाव्रतं गर्वलेशरहितं जितेन्द्रियम्
हा ! भवन्तमनुचिन्तयाम्यहं गीतया विगतकल्मषं सदा

शून्यमद्य भुवनं भवत्पदश्रीविलासरहितं तमोमयम्
हा! हतोऽस्मि भवता विना कथं भारतं नयति धन्यजीवितम्

—के० केशवन् नायरः

यः सत्याग्रहसत्वभासितमहाकीर्तिप्रतिष्ठाश्रितो
यः कारागृहवासनिर्जितसितद्वीपस्थमर्त्यः सुधीः
नित्यं यस्तपसि स्थितश्च करुणापाथोधिरुज्जृम्भते
तस्मै गान्धिमहोदयाय सततं कुर्वे सहस्रं नतीः

स्वल्पाकारतनोरहोऽस्य महिमा व्याप्नोति लोकत्रयं
निःशस्त्रोऽपि जगत्त्रयं विजयते सत्यावलम्बीव यः
निर्लिप्तः परिशुद्धकर्मनिकरः श्रीरामनामप्रियो
निष्कामोऽपि धुनोति वैरिहृदयं ह्यात्मप्रभावेण च

निखिलभुवनपालः श्रीपतिर्दीनबन्धु-
र्दिशतु शतसहस्रं गान्धिने मंगलानाम्
चिरमपि स महात्मा भारतानां विधाता
भवतु नरवरेण्यः शुभ्रकीर्तिः सदैव

निःशंकं करुणारसार्द्रहृदयो बुद्धो नु जातः पुन-
र्नेह फाल्गुनसारथिर्नु भवितुं कृष्णोऽवतीर्णः पुनः
धर्मस्थापनसज्जनावनकृतौ साक्षान्नु नारायणः
संदेहानिति मानसेषु जनयन् गांधी सदा जृम्भते

—के० यस० नागराजम्

जगदेव यस्य मित्रं नवकुसुमं यस्य कृतेऽरिखनित्रम्
युगपटलिखितपवित्रं नङ्क्ष्यति नैव गान्धिनश्चित्रम्
गतवैभवं चिरत्नं नीचाधिगतं भारतावनिरत्नम्
स्वयैव कृत्वा यत्नं कृतं गतदास्यबन्धनं प्रयत्नम्

पम्फुल्यमान-भारत-सारसदलमद्यहन्त ! संसारसरिति
जाग्लात्यस्तंयाते महामहिम युगविभव विवस्वति
याऽभवद्रत्नगर्भा युगपश्चात्तु महात्मरत्नगर्भा
किंस्यात्तत्क्षतिपूर्तिः नष्टा यस्याश्शान्तिमूर्तिः
विधाय जगदस्वस्थं सञ्जातस्त्वं स्वस्थः स्वयमेव
भुवनमद्य रोरुदीति किन्त्वमरनगरम्मोमुदीति

—गङ्गाधर मिश्रः

जयतु जयतु गान्धी देवतुल्यो दयार्द्रः
वितरतु जनशान्त्यै स्वर्गतः शान्तिवाणीम्
अपहरतु पुरेव श्रद्धया शोकराशीन्
उदयतु तमसीन्दुर्विश्वशान्तिप्रदाता

—गजेन्द्रनारायणपण्डा

यस्येदं भुवनं वभूव भवनं, शान्तिः सती गेहिनी
लोकानांसमताशनं, तनुभवोहिंसेव यस्यप्रियः
उद्योगो वसनं वभूव नियमत्राणं वचो गान्धिनः
स्वःप्राप्तस्यसुतस्यतस्य भवतादात्माचिरंशांतिमान्

—गणपतिशास्त्री

हा हन्ताद्य नितान्तदुःसहतरः कोयं प्रमादोऽपतत्
अन्धीभूतमिदं जगज्जनगणः स्तब्धीवभूवाञ्जसा
वाष्पीयं शकटादिकं स्थगितवज्ज्योतिर्गणो निष्प्रभः
वातो वीतगतिर्नदः प्रतिहतस्रोताः कथं वाऽभवत्
दुःखाब्धेस्तलमग्नभारतमहीमातुश्चिरायोद्धृतौ
चेष्टोत्साहसहस्रपाणिरमितोद्योगी महात्मात्मधीः
श्रीविष्णोरवतारवत्फलितसर्वार्थैः परार्थात्मधृक्
सर्वश्रेष्ठजनो जयत्यतितरां आजज्जयोद्घोषितः

प्रध्वंसो मुखमुख्यदेशमनुजत्राणव्रते तीक्ष्णधी:
गान्धीतिप्रथितैकसंज्ञकवर: कीर्तिस्फुरत्सर्वदिक्
सन्यासीव विशेषवेषरहितो मुन्यन्नपानप्रियो
हा हा हन्त हत: स हन्त निखिलो लोक: शिरस्याहत:
हिंसाधर्म्मपराङ्मुखश्च परमोदारो दरिद्राश्रयो:
सानन्दं निजपाणिप्रस्तुतलसत्सूत्रीयवस्त्रावृत:
वृद्धो भीष्म इव प्रभूतवलधृक् स्वेच्छामृतो निर्भय:
नीतिज्योतिरहो प्रभाकर इवामित्राहतोऽस्तङ्गत:
हरिजनगणदु:खैरीक्षितैर्वीक्षिता मा
भगवति निहितात्मा संयतात्मा महात्मा
निखिलधरणिधन्यो धीरमान्यो वरेण्यो
विहितबहुलपुण्यो गण्यलोकाग्रगण्य:
—गोपीचन्द्रः

ध्वस्तः स्वातन्त्र्यमेरुर्भरतनृपरसारत्नराशिर्विशीर्ण:
शुष्क: शान्त्येकसिन्धु: प्रलयमुपगतो राष्ट्रमाणिक्यकोश:
स्वातन्त्र्यस्य प्रदानं निजभरतभुवे कारयित्वा स्वबुद्ध्या
गान्धावन्धा प्रजाऽभून्निधनमुपगते भारतीया समस्ता
—छज्जूरामशास्त्री,

महसा तिमिरं निरस्यता मह—सान्द्रं गमिताः प्रजाः सुखम्
स——हसा जननी च येन सा सहसा हन्त ! गतः स मोहन:
जन——मोहन ! दिव्य-मा-लयो विरहेणाऽद्य स ते हिमालय:
विगलत्तुहिनाम्बुनिर्झरैर्नयनाश्रूणि चिरं विमुञ्चति
क्व नु विश्वविमोह-वारणं शुभराशेरखिलस्य कारणम्
मधुरं सरलं गुणावहं वचनं ते श्रवणं प्रयास्यति
परचक्र-कदर्थिताऽनिशं जननी येन तपोभिरुज्ज्वलैः
गमिता शुभदां स्वतन्त्रतां स मुनिः कुत्र निलीय तिष्ठति

निखिलेषु जनेषु किं पुनः परिपन्थिष्वपि यो दयामयः
स तथागत एव दुर्मतीन् अवतीर्णो भवतोऽभिरक्षितुम्
विविधान्तर-बाह्य-विग्रह ग्रहविच्छिन्न-गुणान् पतिष्यतः
मनुजान् दनुजानुगामिनो निजवागर्गलया रुरोध यः
भारतावनि-नीति-नौरियं भवता मार्गविदा विनाकृता
मरुति प्रबले भवद्गुणैर्विधृता शान्तिपथेन यास्यति
अयि भारतभूमि-नन्दन ! स्व-पदन्यासपवित्र-नन्दन
जगदद्भुत — सत्यविक्रम ! प्रणतान् रक्ष निजैर्निरीक्षणैः

—बटुकनाथशास्त्री खिस्ते

कृष्णान्नीतात्वयाऽऽसीत्परममधुरतास्वीयसिद्धांतपूर्णा
श्रीलात्श्रीरामचंद्रात्परमरुचिरताशिक्षितासत्यनिष्ठा
बौद्धान्नीता त्वहिंसा परमकरुणता सर्वभूतात्समता च
इत्थं भोगांधिवापो ! विकलितमहिमन् ! क्व प्रयातस्त्वमद्य

—भगवतीप्रसाद देवशङ्करपण्ड्या।

यशसा तव पूरितं जगत्
न तु वै शोषितमल्पमप्ययं
चक्षमे त्वमितो न किं पुनः
सहसा स्फोटभियाऽस्यवेधसा
खलु भारत-भूर्विशृङ्खला
रुदती त्वामनु चोत्पतेद्दिवम्
यदि मेरुगिरिर्महान्गुरु–
र्हृदि तस्या निहितो हि नो भवेत्

—भगवानदत्त पाण्डेयः

अन्धकारमयं लोकं यो भारतविभाकरः
स्वोपदेशप्रकाशेन ज्ञानदीपमदीपयत्
मृत्युं बन्धुमिति ज्ञात्वा स्वाशयं योऽवदत्सदा।
स महात्माऽऽश्लिषन्मृत्युं मोदाद्बन्धुमिव प्रजाः

—मे० बो० सम्पत्कुमाराचार्यः

जगच्चक्षुर्नष्टं सकलगुणसिन्धुर्हि विहतः
गतं सर्वस्वं हा ! सरलहृदयानाञ्च विदुषाम्
अनाथाः किं कुर्मो वयमपि हता हंत ! निखिला
दशा देशस्याग्रे किमथ भविता गान्धिनि गते

—देवकुण्डसंस्कृतविद्यालयच्छात्राः

उपवासभवं बलं तव परमाण्वस्त्रविशिष्टमीरितम्
न मृषा, कथमन्यथा पितः ! नरलोकः परकम्पितां व्रजेत्

—सुन्दरलालमिश्रः

स्वातन्त्र्यचन्द्रवदनः कथमद्य खिन्नः
स्रस्तालकाऽऽकुलितधीर्भुवि राज्यलक्ष्मीः
हा ! हन्त !! हन्त !!! अभिनन्दनकाल एव
ग्रस्तोदयः सपदि भारत-भाग्य-भानुः
धीरप्रशान्तनृपनीतिधुरन्धरोऽसौ-
सर्वाङ्गसुन्दरविभूतिवरोऽवतारः
श्रीमोहनः सकलविश्वविमोहनोऽयमस्तङ्गतो नरहरिर्वसुधाऽभिरामः
स्थानेऽभवद् भरतभूप्रतिभाप्रतीका राज्यश्रियो मुखमपश्यदहिंसयैव
विश्वैकवन्द्यमहिमन् ! प्रबलात्मशक्ते दीक्षागुरो ! अमरता चरणे नतास्ते
हे जीवनोद्धरण ! भारत-मातृ-भूमेः क्व प्रस्थितोऽसि विषमे पतिते जनन्याः
हा ! साम्प्रतं वयमकिञ्चन भारतीयाः श्रद्धाञ्जलिं सजलमद्य समर्पयामः

—शैलेन्द्रसिद्धनाथ पाठकः

शान्तिदूतो भारतस्य जगच्छान्तिप्रदायकः
गांधी हन्त ! लयं यातो वयं मग्नाः शुचोऽर्णवे

—शोभानाथत्रिपाठी

समस्तजनताज्वलद्धृदयकञ्जवारिप्रसू प्रशस्तधृतमण्डलद्युतिगरिष्ठगान्धिर्महान्
उदित्य जनमानसप्रसृततीव्रमन्धन्तमः निरस्य सहसा विधे ! बृहति तेजसि प्राविशत्
यदा भवति भूतलं जहति धैर्यपुञ्जं वमन् निधि करतरङ्गतो निजशिरो धुनानोऽनिशम्
त्वदीयविरहे दहन् स्वककलेवरं दृश्यते तदा कथमनाथता मृदुलजीवितो जीवयेत्

धराऽथ निजवार्धके प्रियप्रसूतचिन्तामणिं
विहाय विधिना हता कथमहो भरं धास्यति
जवाहरमहामणिः सकललोकशोकापहो
दधीत किरणं कथं प्रखररश्मिताते गते

नोआखालीकरालश्रुतिनिहितवपुर्मोहनं मालवीयम्
पञ्चाम्बुप्रान्तवार्ता द्रुतविकलमना आप्तुकामो महात्मा
सद्यो यातो द्युलोकं जगति किमथवा, स्वात्मना लोकतंत्रम्
राज्यं संस्थाप्य स्वर्गेऽमरपतिप्रभुतां भङ्क्तुकामो गतो हा
कालिन्दी साश्रुकण्ठा विलपति सततं श्रीमति स्वर्गते हि
गङ्गा मुक्ताङ्गवासा निजसुतरहिता मुञ्चति स्वीयबिन्दुम्
रावीत्यादिः श्वसन्ती कथमपि विरहे जीवनं नैव धत्रीं
अन्या सर्वा विदग्धा क्षणमपि विरहे नैव प्राणं दधार

—शोभाकान्तझाशास्त्री

श्रीमद्गान्धिमहोदये दिवि गते सौख्यं हि सन्ध्यायते
किं स्यादद्य विचारहीनजनताज्ञानं तु निद्रायते
हा ! वश्या नहि भारतीयजनताराज्यञ्च भारायते
किंकर्तव्यविमूढतामधिगतो बुद्धिश्च खेदायते

—हजारीलालशास्त्री

सुरम्यं तच्चित्रं भुवनमिदमुद्यानसदृशं
नदीसुस्रोतोनिर्झरशिखरकान्तारसुभगम्
नराकारैः पुष्पैः कुसुमितमिदानीमपि तथा
परं त्वामन्यत्तद्दिनमणिमृते वा निबिडितम्

—हरिभजनदासः